



I SSN 2229-547X VI DEHA

विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)



१११)

अ अंकमे अङ्क:-

१. संपादकीय संदेश

२. गद्य



२.१.१. कृष्णजी.रौत गजलः प्रवास देहक नर देहवा



२. उमेशकाशे सा: मैथिली रौत गजलक अरधावा



३. जगदीश सा मल्ल - रौत गजलक अरधावा



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानसिंह सर्वज्ञ **ISSN 2229-547X VIDEHA**



८. श्रीगोप श्रीगोप- की शिक रौन गजन ३.
टंदन कर्माव सा- मैथिली रौन-साहित आ रौन-गजन

—



२.२.१. योगेश्वर पाठक 'रियोगी'- नमूना-



देवराणी २. नरेंद्र कर्माव सा- रिजनीक क्षेत्र मे
आमे निर्भवताक जेन सबकाव क२ बहन प्रयास



२.३.१. अमित मिश्र- रौन गजन: कोमन कलेजक आथव



२. मिहिर सा- रौन गजन



२.४. श्री बाज- यात्रीक कविताये गाय



२.५. क्रमाजी-बिरुनि कथा सभा



२.६. श्रीगोप श्रीगोप द्वावा श्री जगदीश्वर श्रीगोप
गङ्गाजीन लव मास्काकोव



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA



२.१.१. बाजुदेव मण्डल- जगदीश प्रसाद मण्डलक



करिता संग्रह बाति-द्विक संगीक्षा २ डा. धनकव
ठाकुर- संगीक्षा युन तितनी श्री तुनरुन (लेखक -श्री सिगाराम
सा 'सबस)



२.१.१. जगदीश मण्डल- बिहारी कथा- जगदीश



रैदलि गेलो २. जगदीश मण्डल सा मण्डल- बिहारी कथा-



मसौयात/ बरुण ३ प्रजित कथा सा- मिथिला
पेठिअक बिदेहमे मांग रैदल -कुछमे मिथिला



पेठिअक श्री जगदीश प्रसाद मण्डल- वधकथा-सुनि तबल



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

३. पद्य



३.१.१.

कृष्णी कागत-मातृता करिता २.



करौ सा-



रौन गज्जन ३.

श्रीमती गवा मल्लिक-- रौन गज्जन



३.२.१.

कृष्णा जी २.



प्रशोत मैथिल-रौन गज्जन



३.

पंकज टोपरी (नरनशी)४



जरातव



नान काश्रिप ३.

कृति कमाव सुदर्शन



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



३.३.१. जगदीशे चन्द्र ठाकुर अमिन- १. रौन गजन/ २. की



भैरव आ की हेवा जेन (आमे गीत)(आगाँ...) २. काशिनी
कायागनी- छिछक अविवाह



३.४.१. अमित शि-रौन गजन २. ताम्रकानि
सा- रौन गजन



३.५.१. शिर अगाव यादर- रौन गजन २. शिर



अगाव सा- करिता/ गजन ३. किशेन कावीगव- हाश
करिता



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



३.७. चंदन कृपाव सा- रौन गज्जन



३.१९. जगदाशन्द सा मन्त्र -रौन गज्जन २ बाजेमे



कृपाव सा- दृष्टी करिता ३. जगदीश प्रसाद गाडनक
किछु गीत/ करिता



३.४.९. बाज्जीर वज्जुन शि- रौन गज्जन २



गिहिव सा- रौन गज्जन ३. गजेन्द ठाकुर-
रौन गज्जन



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



४. मिथिवा कव-संगीत १.

जाति सा टोरी



बख्शिय मिसे (चित्रमय मिथिवा) ३.



उमेश

मठव (मिथिवाक रसगति/ मिथिवाक खीर-खजुर/ मिथिवाक
खिलगी)

—



५. रीवासा श्रुते-१.

श्री कागत-जडेते



जातर

पंकज टोरी (नरवली)- मेघक टोरी

—

६. भाषागत बचना-लेखन -[मासक मैथिली, बिदेहक मैथिली-
अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (ऑनलाइन पत्रि लेव सर्टि-
फिकेशन) एम.एस. एस.क्यू.एव. सर्वर आधारित -Based on
ms-sql server Maithili-English and
English-Maithili Dictionary.]



7. M DEHA FOR NON RESIDENTS



7.2.8.2. Maithili poem by Sh. Jagdish
Prasad Mandal translated from Maithili



into English by Sh. Vinit Utpal)

विदेह अ-पत्रिकाक सब्डी प्रवाण अंक (ब्रैल, तिरहुता आ
देवनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीचाँक लिंकपर
उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e
journal (in Braille, Tirhuta and
Devanagari versions) are available for
pdf download at the following link .

विदेह अ-पत्रिकाक सब्डी प्रवाण अंक ब्रैल, तिरहुता आ
देवनागरी कगमे Videha e journal's all old
issues in Braille Tirhuta and Devanagari
versions

विदेह अ-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

विदेह अ-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक

बि ए नु बिदेह *Videha बिदेह* www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका* ३ पत्रिका



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुसिंह चन्दा **ISSN 2229-547X VIDEHA**



↑ बिदेह श्री.एस.एस.हरीड एनीमेटेडके अंगण साइट।

बैंगणगव नगाडु।



बैंगण "लेखाडुष्ट" गव "एड गाडजेष्ट" मे "हरीड" सेलेक्ट
कए "हरीड यु.श्री.एन." मे

<http://www.videha.co.in/index.xml> ठीगण केनसँ
सेले बिदेह हरीड थानु कए सकेत छी। गुगल बीडवमे पठरौ
लेन <http://reader.google.com/> गव जा कए Add a
Subscription बैंगण निजक कक श्री थानी अंगणमे
<http://www.videha.co.in/index.xml> पोस्ट कक श्री
Add बैंगण दराडु।



Join official Videha facebook group.



Join Videha googl egroups



बिदेह लेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिन
पोडकास्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>



मैथिली देवनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि बहल
छी, (cannot see/write Maithili in
Devanagari / Mithilakshara follow links
below or contact at ggajendra@videha.com)
तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाई। संगहि बिदेहक सुँत
मैथिली भाषापाक/ बचना लेखक नर-पुवान अंक पढ़ू।
<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रोज़ामे
आँनाअन देवनागरी ठाँग कक, रोज़ामे कापी कक आ रडि
डाक्यूमेन्टमे पोस्ट कए रडि फाँगलकें मेर कक। विशेष
ज्ञाकारीक लेन ggajendra@videha.com पब संपर्क
कक।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM)
)/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/
Flock 2.0/ Google Chrome for best view of
'Videha' Maithili e-journal at
<http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old
issues of VIDEHA Maithili e magazine in
.pdf format and Maithili Audio/ Video/
Book/ paintings/ photo files. बिदेहक पुवान अंक
आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाँगल

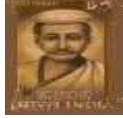


विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सत (उठावा, रैड सुथ साव आ दुर्वसित मंत्र सहित) डाउनलोड
कवरोंक हेतु नीचाँक लिंक पब जाई ।

VI DEHA ARCHI VE विदेह आर्किव



भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी करि, राष्ट्रीय आ
पशुपति विद्यापीठ स्थापन । भारत आ लगानक माष्टिमे
पसवत मिथिलाक धवती प्राचीन कानहिँ महान प्रकय ओ महिना
लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महान प्रकय ओ महिना
लोकनिक छि मिथिला बने मे देखु ।



लौरी-शेकवक पानरमे कानक मूर्ति, एहिमे
मिथिलाकबने (१२०० वर्ष पूर्वक) अभिलेख अछि ।
मिथिलाक भारत आ लगानक माष्टिमे पसवत एहि तबहक अग्रगण्य
प्राचीन आ नर स्थापन, छि, अभिलेख आ मूर्तिकनक हेतु देखु
मिथिलाक खोज



मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, संपर्क, अध्ययन
संगति बिदेहक सर्त-गजल आ नृज सर्मिस आ मिथिला, मैथिल आ
मैथिलीसँ सम्बन्धित रेखांक सभक संग्रह संपर्कक लेन देखु
बिदेह सूचना संपर्क अध्ययन

बिदेह ज्ञानवृत्तक डिस्कसन होमपेज जाँड ।

“मैथिल आब मिथिला” (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवृत्त) पब
जाँड ।

ए लेब मूल प्रवक्तव्य(२०१२) साहित्य अकादेमी, दिल्लीक लेन अहाँक
नजरिये कोन मूल मैथिली पोथी उपयुक्त अछि ?

Thank you for voting !

श्री बाजुदेव मंडलक “अर्थवा” (कविता-संग्रह) 12.5 %

श्री रौच ठाकुरक “रौचक अंगार आ जीवनदेरी”(दुई भाग)
9.88 %

श्रीमती आशी मिश्रक “उच्छा” (उपन्यास) 6.69 %

श्रीमती पद्मा साक “अनुभूति” (कथा संग्रह) 4.65 %



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

श्री उदय नावाय मिह “नटकेता”क “ला ए”प्रिया प्रमि
(नष्टक) 5.52%

श्री सुभाय चन्द्र यादवक “रैलेत रिंगडेत” (कथा-संग्रह)
4.94%

श्रीमती रीणा कर्प- भारताक अहिर्गर्भव (कविता संग्रह)
5.52%

श्रीमती मेघनामिका रमिक “किन्तु-किन्तु ज़ीरन (आमेकथा)
8.72%

श्रीमती रिता बाणीक “भाग लो आ रैमचन्द्रा” (दुष्टा नष्टक)
6.98%

श्री महाप्रकाश-संग समय के (कविता संग्रह) 5.52%

श्री ताराबन्द रियोगी- प्रलय बहन् (कविता-संग्रह) 5.23%

श्री महेश्वर मर्गणियाक “हुतना घैल” (नष्टक) 9.01%

श्रीमती नीता साक “देशे-कान” (कथा-संग्रह) 5.81%

श्री मिखाय सा “सबस”क थोड़े आगि थोड़े पाणि (गजल
संग्रह) 7.27%

Other : 1.74%



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

ए रेव हारा प्रकाश(२०१२)।महिला अकादेमी, दिल्ली।क लेन अहाँक
नज़रिमे कोन कोन लेखक उपहास छथि ?

Thank you for voting !

श्रीमती ज्ञाति स्मृति टोपवीक “अर्चि” (कविता संग्रह)
27.45 %

श्री रिनीत उपेन्द्रक “रम प्रेक्षित छी” (कविता संग्रह) 7.19 %

श्रीमती कान्तिनीक “समयसँ समुद्र करैत”, (कविता संग्रह)
6.54 %

श्री प्रदीप काष्ठिक “रिचन्द्रि रवमान कानक बति” (कविता
संग्रह) 4.58 %

श्री आशीष अर्चिनीक “अर्चिनीक आश्रय”(गजल संग्रह)
18.95 %

श्री अर्चनात सौवर्धक “एतरे छी नहि” (कविता संग्रह)
6.54 %

श्री दिगीप कृपाव मा “कृष्ण”क जगल बहलै (कविता संग्रह)
7.84 %

श्री आदि यागारवक “बोथव पैसिमसँ लिखल” (कथा संग्रह)
6.54 %

श्री उमेश मन्त्रक “निस्तुकी” (कविता संग्रह) 12.42 %



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Other : 1.96 %

ई लेख अक्षराद प्रवक्तव्य (२०१२) [साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क लेख
अर्थात् नञ्जविमे के उपाय छु छि ?

Thank you for voting !

श्री नरेश कुमार रिकन "समाधि" (मराठी उपाय श्री विष्णु
संथाबाग थासक) 32.65 %

श्री महेश्वर नावाय बाग "कार्मेलीन" (कोरकशी उपाय श्री
दासोदर मारजो) 13.27 %

श्री देवेंद्र ना "अक्षर" (राँगा उपाय श्री दिवान्द पालित)
13.27 %

श्रीमती मेनका मल्लिक "देने आ अक्षर करिता मत्त" (लगातीक
अक्षराद मूल- लेखिका थागा) 14.29 %

श्री प्रभु कुमार कश्यप आ श्रीमती मेनिमोला- मैथिली गीतगोविन्द
(अक्षर मङ्गल) 14.29 %

श्री रामनाथ सिंह "समाधि" (श्री तकरी शिरोकव पत्रिका
मनमानी उपाय) 11.22 %

Other : 1.02 %



संज्ञा प्रकाश-संग्रह योगदान २०१२-१३ : सगुणासुव साहित्य
अकादेमी, दिल्ली

Thank you for voting !
श्री राजनन्दन नान दस 53.09 %

श्री डा. अमलसुन्द 24.69 %

श्री चन्द्रभानु सिंह 20.99 %

Other : 1.23 %

1.संगोदकीय

१

१

अ अक बिदेहक रौन गजन बिशेषाक अछि । बिदेह प्राबल्यसँ
रौन साहित्य लेल अलग गुना बखल अछि, एक रौन रौन साहित्य
बिशेषाक सेहो निकलि चुकल अछि, हुदा रौन गजन नाम्ना नर
बिधागव एतेक बाम आलेख आ गजन जेना आएन अछि तकव
श्रेय आशीय अलटिहावकेँ जागत छहि ।



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुसिंह खन्डवाल ISSN 2229-547X VIDEHA

बीरन गज्जन स्थापित भऽ रीटा सतक कर्णपव छठए आ मैथिलीकें
जीरनु बाथऽ तग आशोक मंग ।

२

सुकांतु सोमक एकठा आएन छहि मिथिला दर्शनमे । ओग
आनेथमे रूत वाम गमत तथा अछि । अतीत मंथन २००१ सँ
२००९ मे डगले ले छै से हूँका ले रूँमन छहि । गामक
जिनगी मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कथा संग्रह छै आ तथा ओ
स्त्रीकाव ले कऽ सकन । मैथिलीमे कोहूँ कोहो पौथीकें
पुवकाव भेटौँ आ घूँ कऽ कहि अगल मणि ओ एकछ कऽ
देनहि । भगवतपुरिया जूरीकें ओ दवतगिया जूरी सन रूँ कऽ
एकछ कऽ देनहि, आ अहमे हूँकव निवपेक्षता घास छै जेन
गेन रूँमागत अछि । सुकांतु सोमकें रूँमन छहि जे कार्यक्रम
रूँगलोव मे भेटै । जखनकि कार्यक्रम कोटिमे भेन बहै ।
सुकांतु सोम ठैलोव साहित्य सभाकें वरीन्द्र पुवकाव कहि बहन
छहि ! ! सुकांतु सोमक अयोधित जातिराद रूँत किछ कहि
जागत अछि ।

३

सन् सैतानीस...

भावतक स्वतंत्रताक विचारिक मंडा फलवा बहन छन ।
मूँदा कम्युनिस्ट पार्टीक मानागत छन जे भावत स्वतंत्र ले भेन
अछि ।

असनी स्वतंत्रता भेटै रीँकी छै...

मिथिलाक एकठा गाम...

जग होगत अछि एकठा रीँचाक.. ओले रीँथ ...

ओग स्वतंत्र रा स्वतंत्र ले भेन भावतमे...

पिताक मूँ...गवीरी..

18



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

केस शोकदया...

रचितक जेन सघर्यमे भेटैले स्वतंत्र भावतक रा स्वतंत्र ले भेन
भावतक जेन....

आग रैकामे पाँच-दस रीघामँ पौष जेत ककरो ले..

उग गाम मे जीरित अछि आगयो किसानी आमनिर्भव संकृति...

प्रवाहितरादपव ज्ञानरादक एकद्वे राजक जतः भेन समाप्ति..

संघर्षक समाप्तिक बाद जिनकव लेखन मैथिली साहित्यमे आनि

देनक प्रसर्गक...

जगदीश शर्माद फल- एकरी रायेश्वर १... गजेन्द्र ठाकुर द्वारा

उल्लेख सए साहित्यिक पद्धति । केजरीरान हाथ मुकुनमे बाँठ निखा
लेन बहथि । मुकुन अरै-जागक परेशोनीसँ सांगकिन कीलेक
रिटाव परिवारमे भऽ गेल । उना जखन ठेन्थ (स्पेशिन
नागन्थ) मे बहथि तखन दु सए रासठि कपेयामे सँझा सांगकिन
कीनि लेननि । झुदा जहिया सीमा पवक सिंगालीकेँ दुर्गम
सिगालीक हाथ पकड़नसँ होगए तहिया समस्याक सिंगाली टाक
दिससँ परिवारकेँ घेब लेनकहि । दुनु पिसियौत भाय (जेठ
गोषव माँडन आ तगसँ छोट कारी माँडन) केँ अपन राँग-
दादाक डीह-डारैव जगननि । कोसी धावक झूठ जे पछिम दिस
जोव केल छले ओ आरै पूर दिस जोव केनक, जगसँ किछ
गाम जेना हबिली, मैथिली अमली हवड १ गत्यादिक गामक
जमीनक किछ भाग जागले । भागन-पड एन गामक लोक,
अपन राँग-दादाक दुमन सम्पत्तिक आशामे काँन ठाठ केनहि
बहथि, गाम (हबिली) घुमराक रिटाव केननि । रैनन-रैनएन
गाममे लोकक एहेन कल स्रार्थी प्रवृत्ति रैनिए जागए जे सौमे
गामक सत किछ हमरे भऽ जाए । प्रवृत्ति रैजाए ले, झुदा
खानी सम्पत्तिये ले मन्त्रकथोक भाव जँ उठा लेथि । हबिलीक



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मासिक ISSN 2229-547X VIDEHA

कियो कतो, कियो कतो, कतो-कतो एहना जे पाण-मात
परिवार एकोठाम दुनाह । अपन कष्टमैतीक संग-संग लगान धरि
पसवि गेल दुनाह । सभसँ दुखद स्थिति गामक तखन भेल
जखन स्वतन्त्र परिवार सरहक, जग परिवारक लोक अपन
घर-अंगनाक काजसँ राहब ले भेल दुनि, ओ सभ जखन
रौनिराकि रनि भवि-भवि दिन अणका खेतमे जिनका घरमे
पचसली कोठी-रखावी सभ दुनि, एक पसेवी (कट्टी) अणगब
अण श्रम लेटेले मजदूर भेली । ह्दा उपाये की ? ओ रात
सतुन छी जे समानुसार हाथकेँ हथियाव ले भेटैत तँ ओ पाछु
भगलै कबत, हबहबा-हबहबा क२ पाकन जाहूँ जकाँ हुनका
सरहक जिनगी उतवि गेलनि । जिनगीक सभ किछु हवाए
नगननि । हवागये गेलनि । भागन-पड़ एन लोकक आन देसी
आ आन गाममे सबकाबी सहायताक कते आनी हागत ओ तँ
सरहक सोमहेमे अछि । जे अखला गाममे ओहल गरीर
लोककेँ ओद्विआ आराम ले भेटै बहन दुनहि जिनका अणना
नामे जमीनक कागज ले दुनहि ।

माँठि ओसरीक कातिक । अपन गाम देखेले निमियोत भाय
गोणब माँडन हलिली गेलाह । घोघबडीहामे छैनसँ उतवि
भाँज नगेलनि तँ पता नगननि जे पहिल छैननी, छैननीसँ
लोआ-राखवि, लोआ राखिसँ अमली तेकब राँद हलिली । कते
दुब हएत तँ दु कोस । दु कोस रूमि मसमे उतमाह जगननि
जे दु कोस जागमे रैसी-सँ-रैसी दु घंठी नागतहि । ह्दा ओ
ले रूमि पौननि जे घोघबडीहा छैननीयेक रीच तीन्ती धाव पाव
कबए पड़तहि । तद्धमे गमैया सरावी छिँ किल, लोकक



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रिचाले लो चलेत अछि । टाबि घंठामे छेनी पहुँचलाह । छेनी
लोआ-रौखरिक रौचक सीमामे एकठाँ सेहो नीक धाब माह नमह
धाब । सुगमिन्त बेलागव हकिली पहुँचलाह । गोमव माँडनक
एकठाँ दियान्द पहिलि आरि गेन डलाह जेगँ उ रीया डेढर क
जमीनक मानिक रँमि बमधन खेतक उँगजा पारि कहुँम-परिवार
दिस सेहो ताक नगलाह । हकिली पहुँचते दियान्दो भाग
दुहाँग माँडनक पाहुँन रँमि गेलाह । गकगव बाम्ता देखि दु
दिस बहेक आग्रह दुहाँग माँडन केनथि ।

गामक जे पहिलका रौम-भूमि डलहि उ गलीव भऽ गेन बहे आ
रौम डुँट रँमि गेन डले । दूदा उ अखन सुपौन जिनक सीमा
कात । घब मधुँनी जिनक हकिली गाममे आ सभ अग्राम
सुपौन जिनक हवडि गाममे । जेगँगामक हेमनताजी छथि
जे मधुँनगामसँ रियागक बहि दुकन छथि । कबीर पनबह परिवार
आरि गाममे रँमि गेन । तगमे दु परिवारक खुँठागव रँडदो
आरि गेन । रौकी सभ कोनरिक जिनगीमे । अगन जागन
घवाडि आ पोथरि देखि गोमव माँडन आकर्षित भऽ
गेलाह । रौम जोग तँ लो दूदा टाम जोग जमीन देखि दुहाँग
माँडनकेँ कहनथि-

“तेया अगिला आठम एते छी ।”

टाबिस दिन रौक्या आरि मागीकेँ कहनथि-

“मागी, हम अगन गाम हकिली जायँ ।”



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक चर्चामा **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मागी- “केना जेरेक ? ”

गोषव- “रौस अगना अडिये । एकठा नर जा कर पहिल घर
रौसाएँ तखन रूमन जेतैक । ”

जलिना कोना जेकराबी जेकरासँ निकलि दुनियाँ दिस देखिते
मतवर्गी दुनियाँ देखै नलीत तलिना ओहो (गोषव माडन)
देखननि । केना ले देखितथि । पुरैक हवाएन गाम-घर,
दियाद-बाद, सब-समाज जे गतिहास रनि टुकन डननि, से जे
सोनामे आरैए नगननि । ओना हुका (गोषव माडन) एक रीया
धनहव आ अठ १० कष्टा रौसक बुनि माग (जगदीशे प्रस मडन
जीक पिताजी) कीनि देल डननि । ओहो दुनु भाँगे (गोषव
माडन आ काबी माडन) हलिनी रिसवि गेन डनाह । केना ले
रिसवितथि हवाएनो जमीनक दम्तारैज, खतियाण जँ हाथमे छै
तँ आमी रैनन बहैत छै । जगठाग ओहो (दम्तारैज, खतियाण)
ले बहन ओ तँ पानिक पाखर जकाँ कतए डुमन अडि तैकव
कोन ठैकान । आ जँ हेनरैया (पानिक भाँज रूमनिहाव) बहन
तँ भाँजो-भुज नगा सकेए झुदा अनाछी तँ अनाछि ये छी ।

मातम दिन एकठा रौस काँष्ट पाँडि-पुँडि कर गोषव माडन
तैयाव केननि जे कलि गाम जाएँ । रौवसाँ हलिनी
जाएँ । चाबि दिन बहि, पहिल बहै जोकव घर रौसा जेरै,
तखन आगु रूमन जेतैक । मागीकेँ गोषव माडन कहननि-



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

“मागी, चाबि दिस बहि पहिल घब रैना जेर। पाँचम दिस हेलि
एते छी।”

मागी- “रैडरैडि या, एक अठैया चाँव आ एक अठैया चूड़ म
तै काज छल जेतह ?”

असमंजसमे गोणव पड़ि गेलाह। जते अधिक रैसी थागक
ओरिगण कबरि ओते बसतामे भारियो रहत। एक तै सात-
आठ कोस धाव-धुवक बामता, तगपव रौस आ थेरौक समान।
रैहूत भारी रहत। गाममे माल रैबामे भवि प्छे जमथे
क२ जेनथि आ बामतोले रौनहि जेनथि। अपन जेठा-थारी, आ
नन्दा-कपड़। ले जेर, सेहो ले रैणत। अतमे एकठा छिगरी,
एकठा जेठा, रिडरैले दूठा रौवा, एक अठैया-चूड़। आ एक
अठैया चाँव न२ क२ दोसव दिस रिदा भेलाह। एक तै ओह
भारी काज जिनगीमे कहियो ले केल बहथि। तै एते जकब
भननि जे रैसरौसि रौस काँठि आ रौधम धावक रौस उँघि क२
अलेत भलाह तल्लि रौधम हव जेतो दुगोवा टोकी अले-न२
जाग भलाह, रुदा एते भारी काजमँ पहिल दिस तैठ भेलनि।

रैबामँ निकलि कडुरी-तहुकिया होगत सुन्दर-रिवाजीत
जागत-जागत रैदम भ२ गेलाह। पाहु हिअरैत तै दुगये
कोस ठगना, आगु हिअरैत, तै अथन पौली-चगवाम, कनिकापुव,
मेठवम तै कोसी राहक राहले भेल। मेठवममे ल कोसी



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रौनह ठेगि तीतव हेता । तेयो तँ मेठेबम ठेगि दु कोस
तीतवो जागये गइतहि । अरूह नागि गेननि । जिगगीक
रौठमे रौछा जकाँ रूकोव नागि गेननि । स्वतन्त्राक किछ काव
रौद हव दुरा केननि । पागि पीर रौस उठा रिदा तेना ।
मेठेबम रौनहगव गहुँटेत-गहुँटेत धाह-जाड आगि गेननि ।
एहेन जगहमे के भैँठै हएत ? क्यो छिहारे ले । गाम-
घबमे ल माए-रौप बहल रौछा होमबियोकेँ गइ-घार कहि डै
झुदा ले बहल तँ गइ १-घार होमबिये भऽ जाग डै ।

रौबगाक पाछीसोसँ रौसी कहुँमेती मेठेबममे तहियो डन आ
अथला अछि । कोसी रौनहगव रौस बाखन आ लिपका (गोषव
माँडनकेँ) पडन देखि एक गोठे नगमे एननि । ओ रौधसँ गाम
पव जागत बहथि । नगमे आगि गइनथि-

“कतए बहे छी ? ”

धाह-जाडसँ कैपेत गोषव माँडन कहनथि-

“रौबगा । ”

“कतए जाएँ ? ”

“हेबगाली । ”

“एहेन अरुस्थामे केना जाएँ ? ”



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

“सएह ले किछ हूँ-ए ।”

“एकठौ काज कर । हमरूँ कियो आन ले छी । हमरो रहल
अही गाममे रहै । अरुमे भेलौ ।”

अरुमक नाँ सुनिताहि जेना एकएक कतौसँ होनि एगनि ।
कहवथि-

“अरुम नावाग, कहुना-कहुना जँ गाम (रैबमा) घुमि जखरँ तँ
जाण रँचि जाएत, ले तँ ले रँचरँ ।”

“एँठामसँ घोघबडीला गेल एत ? ”

“खानी देहे छनि जाएरँ ।”

“सत समाज हमरा एँठाम बाधि दिओ आ अहाँ छनि जाड । मएह
(रौलहसँ सँठले पूर) हमर घब छी ।”

आनी पारि गेलव रँजनाह-

“अपना मगमे छुड । अछि । छनु कमिये खागयो जेरँ आ बधि
करँ छनियो जखरँ ।”

जोशिव तँ घोघबडीला सँठेनीस रिदाह भेला अदा बास्तामे
एहेन स्थिति भऽ गेलनि । जे ले रँछ स्वमन्त्रि आ ले डेगे



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

ऊँचि । ओग सम्य छवि रँजे गाड़ि निबानीसँ अरैत बहे ।
सँजोग नीक रँसवनि । गाड़ि पकड़ि गेवनि । सात रँजे
सँसमे गाम (रँवमा) पहुँचवह । एक ठँ भवि दिसक थाकव
तगवब रँखाव, गाम अरिते रँवम फाड़ि ओहना काव नगवह
जेना माथ-रागक मोजहामे रँथी-रँथी कले । अपन पौमवक
दमो देखि मामी (जगदीश प्रसाद मंडल जीक माए) ए कपे
काव नगनीह (डाक मरवमे) जना भागि ली रँचतनि । तावनि
दुनु भाँगक रिश्वर-दुवागमन भँ गेव बहनि । दुनु दिवादिनीयो
रँवमेमे । जे रँलेगा जहना मामी पलव एकठा नठि या कोला
मावीसँ निकलि पु-पहित आकि जहाँ-तहाँ नठि या तुक
गलेत । ततरै ली, पास-पड़ि सक नठि या सब समष्टी-समष्टी
एकठाम भँ समरित मरवमे तुक गले । किअए ल
तुकत ? डले जे भवि दिस माड़ि देख बहे, ओकरा ठँ
अवहले ल मगी हेतग । जहना छेव दुनु वगक होव
दिनको आ बौतको, तहना ल नठि योकेँ चरौव कलेक सम्य
भेठे छे । तहना मामीकेँ कनिते दुनु दिवादिनी सेहो मोहवि
कव नगनी । मोहवि सुनि एके-दुगये ठेगक लोक समरि-
समरि आरव नगनी । गोमव डेयाकेँ रिश्व देखलौ लोक आधि
मीड़ि-मीड़ि कियो तुक नगनी तँ कियो पोथी-पतवा
ऊँठारव नगनीह । पाँच दिन पहिले भदरौ रीत दुकन डन दूदा
एकठा रँठरीकेँ, अतिम दिन भदरौक पता नगनि । ओ ओही
दिसँ जोड़ित जे आग डूठम दिसक भदरौ डी । रँजनी-

“लेना पहिले-पहिले डेग भदरौमे उठौवक । जानि क
आगिमे पाक ज़ाएँ तँ ज़वरँ ली ।”



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जगताम सभ कर्मिहारे जमा भ२ जाएत तगठाम टुप के
कवत । खेब जे हो.... ।

माम द्वाक पढाति ओ (गोमव) काज-उदेम करैरैना भेलाह ।
अगहनक कठनी रैजवि गेन बहे । तहुमे १९३१ ई.मे मेहो
नमहव रौठा आएन बहे । कहले तँ रौठा दहावक कावण डी
झुदा उंगजोक कावण डी । ई निर्भर करैत गाम-गामक
जमीनक रूपाँरुपव । कोला गाममे गहीव खेत रैसी अछि
जगमे जँ शुकहोमे दूरी नमहव रैवखा भ२ जाएत तँ पाणि
पकड़ा लेत आ एहलो डूँटगव गाम सभ अछि (रैहूआला गाम)
जगमे जतरे कान रैवखा भेन ततरे कान पाणि बहन, रौकी
रैवखा गेन पाणियो गेन । गाम सुखन क२ सुखले बहि गेन ।
ओल गामक लेन रौठा खेलावा डी, तँ जँ डहरो-रौल कष्ट
क२ खेन-खेनन जाए तँ की हर्ज जे एहेन खेन ले हूअ ।

दुहेल सिगाली हाथे घेवाएन सिगाली जकाँ परिवार घेवा गेन
बहए । एक तँ १९३५ ई.क रौठा सँ परिवार धँसि गेन बहए ।
किअ ल धँसित । एक रौठा रा बौदी, प्रथि आधवित
परिवारकेँ पाँट मान धक्का मारैत अछि । शुकहे हाथुनमे दू
ठाँग (सिमियोत) एकठाँ रौस, खेरा-खवटाक संग हल्लाही
गेना । रौसक खूँछाव मलजबक कोवा-रौतीक घब ठाठ क२
काशिसँ डाढ़ि लेननि । बहक ठौर होगते अपन पोथरिना
जमीनकेँ माह क२ ताम-कोव कवए नगनाह । खूँछा पछेव-



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुसिंह खन्कुमार ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिलीक रौन । जहिला रौदमे रियतनामक लोक एक-एक गेट
भुमि, जे रौम-रौकदमे नखै भऽ चुकल भेल, खेती योग्य
रौलोननि । तहिला हकिलीक लोक गामक रौन उज्जाड
नगनाह । रौन एहेन जे दम धुव तमनिहार अगनाकेँ मेहनती
बुनैत । दुनु भाँग रौला तोड़ि आ गाम (रौवगा) आरि-आरि
खबेटे नऽ जाथि । भूह गामक रौद पहिने उज्जा हाथ
नगननि । ठेगुआव गाँव जकाँ एक मंग जमी (धान), मकग,
काँउ गत्यादि हाथ नगननि । परिवारक काज रौदनि ।
खेतीक लेन एकठाँ रौद मेहो कीनि कऽ नऽ गेनाह ।
परिवारक एकठाँ कप लेखा तैयार भऽ गेननि ।

अखन धरि हकिली गाममे रौम परिवार रौम चुकल भेल ।
तीनठाँ टापाकन मेहो गरि चुकल भेल । पानिक सुरिधा मे भऽ
गेन भेल । रौम हलैट पाँग, भूह हलैट हलैटवमे भऽ जाग ।
नगदी हसन पटुआक खेती शुक भेल । तीस-पैंतीस रौधा
जमीन उज्जाडक हकिली गाम रौम गेल ।

१९७२ आमे काबी मण्डन (जगदीश प्रसाद मण्डन जीक छोटे
पिम्पियोत भाँ) रौमाव पड़नाह । नीक रौमाव । गनाजक कोला
सुरिधा हकिलीमे ले । तग मयैमे दबडगा जिनक मगडुआ
गामक एक छोटे रौवमेमे डाकठरी करैत भेल । हसनमान
भेल । मसमावा मारिक । मसमावा-मगडुआ मण्डे दुनु गाम ।
जगम हिनका मडक मग-भगिनाक मरै ओग डाकठेव महाएक



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

संग रंगन डनहि । ओना ओ वहे डना दसनगाण ठेनमे, ददा
मात्रिकक अलमँ रैनी कान अलीठाय वहे डनाह । हुनका माए
कहनकनि जे तैगा, भागिण रँड दूथित अछि ।

ओ जगले तैगाव भ२ गेनाह ।

ओ ग समय रैकामे दूरी रैगु डनाह । पहिने सुन्दर ठाँव आ
दोसब डनाह नीबस महतो । सुन्दर ठाँव पडित डनाह ।
आचार्य डनाह । ददा शरीरसँ अरौह (नांगर) डनाह आ थोड़के
रौनी तोतवाग डननि । ददा ओ जिनगीकेँ एते नगसँ देखे
देखि जे परिवारसँ किछु छुटि अगल अग्रिम रँलोल डनाह ।
उयधानय नाम डलेक । खेत-पथावरँना परिवार बहल उयधानय
अगल-अगलसँ रँलोल डनाह । उयधानयक अगलमे सगयो
वंगक जड़ १-रूँटी सत नलोल डनाह । निश्वसरँह जिनगी
डननि । ओना निश्व भंग सेहो होगत डननि । निश्व भंग
कावा बहनि रैदगवी कवरँ । रैदगवी (डाकूँवी) ओहल पेशी
डी जे जिनगीक अतिम घाँठ धरि रँसत अछि । उँए कथन कोन
घाँठक यात्री छनि आओत तेकब ठेकाष ले । ददा रैगुजी मे
किछु कर्मक प्रति मजगुतियो बहनि । मजगुती ए बहनि जखन
ओ पूजा करए नगथि तखन कियो हुनका ठेकि ले पँरैत ।
तगले ओ एकठो उगवरँह वथे डनाह । ददा मसमे ए कटेष्ट
बहरँ कबनि जे जगले पूजा कले डी जँ ओ देरता आगुमे
छनि आरथि तखन की कवरँ ? ददा किछु दिक पढाति कष्टिग
रँदनि जेननि । टोरीस घाँठक गाड़ १मे लोक अगला-अगला
ठगसँ कष्टिग (काजक हिमारे) रँगा लेत अछि । तहिना ओहो



বিদেহ ১১১ ম অংক ০১ অগস্ত ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১১)

মানচিত্র সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

দিলক পূজা কবর ভোড়া বাতিমে কবল মগনাহ। জগন্
মভকৈ রবারে নাত হুখ মগননি। জিনগিয়ো নমহব রেলো
ভনাহ, ঐঠরো যোড় গব চঠা ঐল-ঐল গামক রেণ্ড মভ
ঐঠাম জাগ ভনাহ, লিকো ঐঠাম ঐঠে ভননি। জগন্ রেচাবিক
মরধম ম২ ক২ রেচাবিক (জড় ১-রুঠীক গাভ মগরেক মরধম
ম২ ক২ দরাগ রেচাবিক ঠগ ধবি) মরধ মজগুত ভননি।

দোসব রেণ্ড ভনাহ নীবস মহতো। গ. স্বন্দব ঠাকব জকা
পঠন-লিখন লে দ্দা মলুকথোক ত ঐজীর রুনারিষ্ট ঐভি।
কিয়ো কওজজম পঠা ডাক্ঠব-গজনিয়ব রেলত ভুথি ত
কিয়ো গামে-ঘবমে ঘুগি-ফিবি রৈনি জাগত ভুথি। তলিা ওহল
বামায়া ঐ মহাভাবত পঠনিহাব (গাধি ক২ পঠনিহাব) কতেকো
ভুথি জিনকা ঐগল নাও-গাও লিখএ লে ঐঠেত ভননি। মাঠম
উগজল রেণ্ড নীবস মহতো ভনাহ। গামমে দ্ধু গোঠেক গাভাজ
চলেত ভননি। দ্দা এলোপেখী দরাগক ঐগমল গামমে মেহো
ভ২ ঢুকন ভন। জগন্ রেবাক রেবাক গামক ঠুণীরাই ঐ
রুচফল রাইক ঐরা-জালী মেহো ভ২ গেল ভননি।
মগডু ঐরাই ডাক্ঠব কবীর পলবহ রৈথ রেবামে বহনাহ। ওনা
হুকব নাও ঐখলো লে ককবো রুমন ডে। তেকব কাবণ ডে
জে মভ মমে কৈ ভননি ঐ ওহো ভগিল কৈ ভননি।
জগদীশে ত্রমাদ মল্লক মাগযো ভগয়ে কহনি ঐ ওহো রেহনিযে
কহনি। ঠৈমক (দ্রসনমাণ) লোক ডাক্ঠব মহএর কহনি ত
কিভ ঠৈমক লোক মোনরী মহএর কহনি। ওনা ও নরাজী মেহো
ভনাহ। কিভ ঠৈমক লোক মোনরী মহএর ডাক্ঠব কহনি তঐ
হুকব ঐমন নাউএ হবা গেল বহনি।



जगदीशे प्रसाद मन्दनक जेठ भाय (कनकन माँडन) माए आ
माया (डाकूँव) तीनु गोठे तहबियामे पाड़ १ पकड़ि घोघडीह
राँह (कोसी) तक तँ उँतुसाहसँ गोना, झुदा राँहपवसँ जे
देखनसि तँ माँगयो आ भैयोक मल डरि गेनसि । आगु डेग
रँठरौक हिआँडे ल होन्हि । राँहक रँगलेमे नमहव पाव ।
जेकब पाँसि काहनी तेज गतिमे चलैत । माया रूमि गेनसि ।
उँ धैरि रँठरौत कहनसि-

“रँहसि, ए कोन पाव छिँ, एँसँ नमहव-नमहव पावमे नार चलै
छी आ हेनरौ करै छी । केहन रँठरि या नार छै । जहिया सब
पाव कबत तहिया हम्छँ सब पाव कवरँ ।”

तग रीट एक गोठे हलियाहियेक भैठे गेनसि । राँहपव
पुढ-आँडसँ भाँज नारि गेनसि । शेर-राँज्रावमे रिया मतनरौ
किछ पुढरँ नीक लै होग छै झुदा पावक गनाका, रौनक
गनाका, मकतुमिक गनाकामे ठेल नीक होग छै जे संगी भैठे
जाग छै ।

तीनु गोठे हलियाही पहुँचलाह । डाकूँवक नाँउ सुनिते आला-
आल परिवारक लोक जमा भऽ गेन । पहुँचते सुगना-दराग
छानु केनसि । काबी माँडनक गनाज शुक भेल ।



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

चाहक नीक अत्र्यामी डाकूँव सहाएँ । उना चाहे ठी अगला
बहनि । गाममे चाहक दोकासक कोष रौत जे चाहपती
टिनियोक दोकास ले । रैवमाँ जखन रिदा भेला रा
घोघडीहामे जखन गाड़िँ उतबनाह तेयो ले मल पड़नि ।
मला केना पड़ि तनि ? रिष देखन जगह केहेन अछि केहेन
ले तग दिस नजबि किअ पड़ि तनि । पहिन दिस त कहुना
थेपि गेलाह दूदा दोसव दिस तरौली हुअ नगनि । रिष चाह
पील मल भोट गेनि । गालव मागयो आ तेयोकेँ रूमि
पड़नि जे कतए आरि गेलौ ।

पहिन दिसक गेलाजसँ हुका (काबी माडन) मे किछ सुबाव
भेनि । मागकेँ (डाकूँव सहाएँ) एक दिस चाहक सगली धेल
बहनि त दोसव दिस रोगक गेलाजसँ मलमे खुनियो उपकेत
बहनि ।

अखन धरि गाममे गोब दमेक महिनो-गाए भ२ गेन छलै ।
सहवमा जिना (अखन सुपौल) आ मधुबनी जिनाक सीमाक कातमे
हल्लिहियो आ हवडियो रूमन अछि । रीचमे एकठा मबल धाव,
जे हल्लिहियो आ जएह धाव दुनु गामकेँ उपेठेल छन ।
तेयाक घब (गोषव माडनक) गाममे सभसँ पछिम । किएक त
जलिा रँजाव आगु अहे क२क२ घुमकेत छलै तलिा ले नर
गामो छलै । पूर-पछिममे गाम, उना ओ सुर्मडन गाम
भेन । जे रौसक हिमारी (पहिरका) नीक ले भेन, किएक त
आगि-झाव आ तरा-रिहाविक दृष्टिसँ उजाव रैसी हएत । धावक
भीता-काते-काते जलिा पछिम तलिा पूर । जगदीश प्रसाद



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मन्दनक अण दयाद दूनहाग मण्डन कहनथि जे सभ दयाद
मगागये क२ घब रौनहरै । पढुरौवि भाग हूकब घब तै
जगदीशे प्रसाद मन्दनक डैयो पछिमे दिस घब रौनहरै ।
उग मग सभसँ पछिमे घब बहनि हूदा अखन उगसँ रौत
पछिमे तक गाम रौत गेन अछि ।

दिसक कबीर तौन रौजे, हकिलियोक महीम आ हवडियोक
पढुरौवि छैन (जग छैन पबक हेमनताजी छथि ।) जे
हूनगवामक पूरि बियायक बहि दूकन छथि ।) हकिली रीम-
पछिमे घबक गाम आ हवडी तौन छैनमे रौत । जे थोडा
हठ-हठ क२ रौत । धालेक पेट आ किलिबिये दूनु गामक
महीम सभ चरैत बहे, कि ले आकि चबराहा सभमे मगड । शुक
भेलै । दूनु गाम मगे-मगे । हँसेवा-हँसेवी भ२ गेन । खुर
महब मारि (माठी-मठौरि) भेल । कते गोठैकेँ कपाव
हूँत, हाथ-पएव छैन । दु जातिक दूनु छैन, खुर मसँ मारि
भेल । कम घब बहिनो हकिलीक किछ परिवार सिहेमेव स्थाण
दिससँ आरि रौत बहए, तीसठाँ मेमव खनीहा बहए, तै मारि
रौसी हवडीरौना थोनक । हूदा केशि-होदारी ले भेल । तेकब
कावणो बहे जे एहब हूनगवामकेँ थाना दारि धाव छैपि आरैए
पछिमे तै उमहब स्वप्न मगदूथ कोसीक कते छै-छै पाव
कबए पछिमे ।



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

गोणव मण्डनक घबस कबीर पाँट रीया पछिम मारि भेल ।
मबदा-मबदी तँ मारि कबए गेल बहनि ह्रदा मृगीगण आ रैछटा
सभ तमागो देखनक । रैबमोक तीनु गोठे- डाँकठेरो सहवाएँ
मागयो आ भैयो मारि देखननि । मारि देखि तीनु भयभीत
भ२ जाग गेलाह । तीनुक पाछु अगल-अगल काबा बहनि ।
डाँकठेब सहवाँ थागा-कटहरी जलैत बहनि तँ भयभीत
बहनि । अँदाज बहनि जे जखल थागा छँत तखल मारि
केनिहाव गाम छोड़ि देत । ह्रदा जगदीशे प्रसाद
मण्डनक..... ।

तलिआ जगदीशे प्रसाद मण्डनक माए आ भागकेँ सेहो रैबमाक
१९३७-३९ ई.क प्रथमक दोड़ देखन बहनि । माँसु गहब सभ
रिटाव केननि जे काहि भाले एँठामँ मरीज (काबी मण्डन) केँ
जेल गाम (रैबमा) छलि जाएँ । सहए केननि ।

अगला एँठाम (रैबमामे) तीशठा महीस आ दूठा रैछद खुँठागब
बैत छलनि । मगांग घटल महीस तीशँ एक भ२ गेल । रैछद
रिना रैलेरना ले । छवि-गान मान पहिनि १९३७-३९ ई.मे
भाय मिछन सकुन छोड़ि अमानत (अमीनी) मे नाँ लिखा केननि
छरै मसक पठा गेल । ह्रजयवपुवसँ एकठा शिक्षक (अमीन)
आरि गाममे सकुन चलोले बहनि । जगमे पहिल दस गोठे
नाँ लिखौनि । ह्रदा किछु दिन पछाति आरि छह गोठे
छोड़ि देननि । छवि गोठे अन्तो-अन्त पढ़ा अमीन
रैगलाह ।



अखन धरि जगदीशे प्रसाद मन्दन महीन पाछु तँ नीक जकाँ ले
पड़न बहथि दूदा भाग सरहक संगे चबई जागत बस्थि ।
सर्गाग घईल भाग पछि गेलहि । परिवारक आगदनी बहथि ।
पिमिठत भागक परिवार गेल (हकिमी गेल) परिवार
कमलहि । जगसँ परिवारक काजो घईलहि । अखन तक माए
घबसँ निकलि थेत-पथाव ले जागत छलहि, सेहो जाए
नगलीह । जगदीशे प्रसाद मन्दनक तैयारै (गोखर माँडन) जे
जमीन देन गेल बहथि ओ रैटि क२ न२ गेला । जगसँ थेतो
कमलहि । उगजो कमलहि । दूदा चाकि पीठिमे आगयो
ओग परिवारक संग ओहल सरंध रैनन छहि जहिना पहिल
छलहि । अखला उमेशि माँडन (पुत्र) संग जे सजय बहैओ
पिमिठते भागक पोता छियनि ।

हागये सकुनमे बहथि तखन द्वागमल भेलहि । रिश्वत पहिलहि
त२ चूकन छलहि । पिमिठत भागकै गेनासँ परिवार ले
कमलहि, घबक कारोबार कयि गेलहि । परिवारक तीतव
अनदकनी रिरादक जगसा सेहो भेल । जगदीशे प्रसाद मन्दनक
पठरै रिरादक कावा मुनमे छल । जेकर दुष्टी सिब (सोत)
छले । पहिल भाग महाएरक आ देसव समाजक हित-
अपेक्षितक । खुनम-खुनता तँ परिवारमे ले छल दूदा भाग
महाएरक फिया-कनाग रैदल नगलनि । जगसँ घबक काज
छोडि भवि दिन नाटक पाछु पछि गेला । साप्तरामे नाट
पाछी चलनि ।



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुसिंह खन्खन ISSN 2229-547X VIDEHA

१९७१ ज.क. दूतार आँएन । जगदीशे प्रसाद मण्डल कम्पनिस्ट
पार्टीक सदस्य रैनि गेन बरथि । दूतारमे जिना तबिक रूथपव
खुर धरिनी तेन । उना जलिना खुर धरिनी तेन तलिना गामे-
गाम मारियो-पीठ खुर तेन । केने-मोकदमा खुर रैठन ।
जहनक आरौ-जाली सेनो रैठन । केने-मोकदमा तेन कोठ-
कचरवीक काज रैठन । बाज्यमे (बिहाव) मतवहे ठी जिना
हुले । उगमे रैठ तबरीक मंतरणा रैठन । सरडिरीजन, रैलोक
गत्यादि मन्त्रमे रैठ तबरीक मंतरणा रैठन ।

१९७१ ज.क. दूतारमे (अखनका मधुरनी जिना, तग मग अखनडले
हुन) कम्पनिस्ट पार्टीक एम.पी. भोगेन्द्र जी (भोगेन्द्र मा)
तेनाह । दुष्टी पार्लियामेन्ट मीठमे एकठा कम्पनिस्ट पार्टीके आ
एकठा मोनिस्ट पार्टी (शिरचन्द्र मा) के तेन । उना जिनाम
काँग्रेस जलिना पार्लियामेन्टम हावन तलिना बिबाध मन्त्रमे सेनो
हावन । कम्पनिस्ट पार्टीके चरिष्टी एम.एन.ए. आ एकठा एम.पीक
मीठ तेठन । बाज्यक सबकाव रैदनि गेन ह्दुदा देशेक
(दिननीक) सबकाव ले रैदनि । ह्दुदा बिबोधी दनक सदस्य
रैठन । जग-जग बाज्यमे काँग्रेसी सबकाव ठेठन उग-उग
बाज्यमे बिबोधीक सबकाव रैठन । ह्दुदा एकडाला कतौ ल
रैठन । थिचड़ी सबकाव रैठन । काँग्रेस पार्टीम एक ग्रुप ठेठ
जनक्रान्ति दन बिहावमे रैलोल हुन । जेकब लभतुर माहागाया
राँरु करैत हुनाह । ह्दुदाली रैठनाह । अखन अखनडाव ह्दुदाली
मन्त्रमे रैनि गेन अछि । ह्दुदा उदु मन्त्रमे चोवन्करा खुर



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बहु। चाहे जे कोना रिभाग बहे झुयछाटावसँ आह्वानत हुन।
माहमाया रौबुक सबकाव पछिना काँचेली मंगीक रिबोधमे सुथीम
कोरक जजक लभ्रतमे जाँट आयोग रेलोनक। अग्य
आयोग नाँ पड़ल।

रैद्यनाथ बाग अग्य सुथीम कोरक जज हुनाह। दक्षिण
हुनि। कबीर पणचानरै-डियानरै रैथक हुनि। जिरिते हुनि।
पुरि रिहाव सबकावक हुन्छी मंगीक रिकछ अणज जाँट रिपोर
द२ देनथि। कबोड १क ठुँ सारित क२ देल बहुनि।

१९७७ अ.मे रिहाव रौदीक चपेष्टमे आरि गेल। उना पहिने
रैथ बहुल ओते रूमियो ले पड़ल। जँ रूमि पछि तेँ उँ
१९७१ अ.क छुनारी रुदा रेलित से ले रैनन। रुदा सबकाव
रैनना उँतव दोसव रैथ खुर रूमि पछि नगले। तखनारी हूअ
नगन। सबकावक सोना जुरदस्त सरोन उँठि क२ ठाँठ भेल।
जमाथोव सरैक रिबोधमे अतिगण चनरैक निर्णय भेल।
रुदा तेल्ले नष्टक ठाँठ भ२ गेल जे अतिगण मज्जाक रैनि
गेल। नष्टक अ भेल जे दम रीमछी ओल सत पकडल नगन
जेकव कावोरौव (अल्लक कावोरौव) घोड १-घोड १पव चलैत
बहु। रुदा सोनहरी सएह ले भेल, किछु एहना जमाथोव
पकड १एन जेकवा सोदासमे नाथो करीण्टन अणज बहु।



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

पार्लियामेण्टक शेषतः ग्रहण केला पछाति भोजपुरी जी जखन
मधुरीनी घुमानाह तँ सकबीये पहिन आय सता केनमि । एक तँ
नर सदस्य बहल दोसर अपन पार्टीक बहल कबीर पनबह-रौस
गाम (रौबमा) सँ सताये भाग लिख गेनमि । गाड़ की सुरिया
बहल कबहि । तहुमे जान सँडारना सत दिनी तक प्रदर्शन
कबिते छन । ओना भोजपुरी जीक भाषाक फा बहलमि जे ओ
पहिल राजि दग छनमि जे जिनका जे धर्म पछेक हूअ ओ
पुछि दिख । जराँर देर हूका भाषाक मून रिन्दु छनमि ।
भाषाओ नमहब करैत छनाह । समथ भेटेनापब तीन-तीन,
चरि-चरि हँटी रजिते बहि जागत छनाह ।

ओ समथ निर्मलीसँ समस्तीपुर एकठा गाड़ की चलेत बह ।
रँड की मागलक कतौ पता ले । दूदा कमलानिष्ठ पार्टीक
नड गक एकठा दूदा गहो बह । कथला उग्र तँ कथला धीमी
गतिसँ चलिते बह । ओना पुरोसँ आ पछुडियोसँ अरैरना
गाड़ की मेन सकबियेमे बह दूदा से ले भेलै । ककबयछीमे
मेन भेल पछुरिया गाड़ की पछुआ गेल । सँठेनिसँ पोडरै
हँटी क२ दछिनरौबि भाग सताक आयोजन भेल ।

जगदीश प्रसाद मंडन- एकठा रौबोत्रायी...गजेन्द्र ठाकुर द्वारा
(अनुवर्तते...)

३ बचोपब अपन मतिर ggaj_endra@videha.com पब
पठाड ।



गजेन्द्र ठाकुर

ggajendra@videha.com

http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post_3709.html

२. गद्य



२.१.१. कुमारी: रौन गजनः प्रवास देहक नर देहवा



२. उम्रकामि सा: मैथिली रौन गजनक अवधावा



३. जगदाशन्द सा मय - रौन गजनक अवधावा



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानसिंह सर्वज्ञ **ISSN 2229-547X VIDEHA**



८. श्रीशिव अग्रवाल- की शिक रौन गजन ३.
टंदन कर्माव सा- मैथिली रौन-साहित आ रौन-गजन

—



२.२.१. योगेश्वर पाठक 'रियोगी'- नमूना-



देवराणी २. नरेंद्र कर्माव सा- रिजनीक क्षेत्र मे
आमे निर्भवताक जेन सबकाव क२ बहन प्रयास



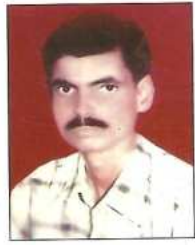
२.३.१. अमित मिश्र- रौन गजन: कोमन कलेजक आथव



२. मिहिर सा- रौन गजन



२.४. श्री बाज- यात्रीक कविताये गाय



२.५. क्रमाजी-बिरुनि कथा सभा



२.६. श्रीमती अमरिकाव द्वावा श्री जगदीश्वर अमरिकाव
गणपतीजी लव मास्काकोव



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



२.१.१. बाजुदेव मण्डल- जगदीश प्रसाद मण्डलक



कविता संग्रह बाँति-दिलक संगीक्षा २ डा. धनकब
ठाकुर- संगीक्षा युन तितली श्री तुलरुन (लेखक -श्री सिगाराम
सा 'सबस')



२.१.१. जगदीश मण्डल- विरुषि कथा- जगदीश



रैदलि गोलो २. जगदीश मण्डल- विरुषि कथा-



मसोयाता/ बरुश ३ प्रजित कमार सा- विरुषि
पेष्टिर्षक विदेहमे मांग रैदल -रुद्रमे विरुषि



पेष्टिर्षक श्री जगदीश प्रसाद मण्डल- वधकथा-सुदि तबल



१. अज्ञाजि: रौत गजन: प्रवास देहक नर देहवा



२. उमथकशि मा: मैथिली रौत गजनक अरधावणी



३. जगदामन्द मा मन्त्र - रौत गजनक अरधावणी



४. अमीय अरुटिहाव- की थिक रौत गजन ३.
टदस अगाव मा- मैथिली रौत-साहित आ रौत-गजन



१.



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA



रुमाजी

रौन गजल: प्रवास देहक नर देहवा

घड़ की पेशुनम सन सुलेत जिनगीमे हिवता भागन फिरै।
ल देह हिव आ ल छित। केथला क तँ अगला ठव-ठेका
हेवाएन सन नहोए लोककै। जँ छिन्नशील भ तकरै तँ
ठकाएन सन अन्नभर हएत। एहन हितमे कोना नर मोट रा
नर अरवावगारै घाटा-तीरीमे हँसि जेरौक अर्शिका घेरि जेए।
रुदा कसामेको भ रएह नर अरवावगा, नर प्रयोगनर बचना
माहिरकै जिया क बखरौक अमता देखैए।

पद्य रिवाक एकठा कप गजल अगल आ समाजक सौन्दर्यरौध
कबलै। हसिक, बसिक भ प्रेममे ठमवा उर-डूर करैत
अगल रौठ पव समवन जागत देखाए। गजलक रौठ
लोकप्रियता आर अगल रिस्तार तके। आर गजल सत भारमे



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

टतवन-पसवन झा बहन अछि । ए रीट टर्चित हरा गजनकाव
आशीय अणटिहाव जी गजनक फेब्रुमे एकठा नर अरवाका
बखनहि । साहिब अकादेमी आ मैलावगक मशुत तबारावामे
भेन कथा गोष्ठी २४ मार्च २०१२केँ अणटिहाव जी रौन गजनक
अरवाकाकेँ स्पष्ट करैत कहनहि "जेना गद्य रिधा रा अण
रिधामे रौन साहिब निखन जागत अछि तहिना गजनमे सेहो
रौन मलारिक्ताष पव आधारित रौन गजन निखन जाए" । २४ मार्च
२०१२ केँ प्रस्तुत कएन गेल रौन गजनक पबिकम्पनाक रिधिरत
घोषणा अणटिहाव आखव आ विदेहक फेब्रुमेक रमन पव २१ मार्च
२०१२केँ होगते रौन वाम पबिगन रौन गजन मत सौमा
आएन । घोषणा होगते ए रिधाक पहिन बचनाकाव भेनाह
आशुतोष मिश्री जे की लपामसँ दुधि दूदा ददा-कदा निथेत
दुधि । देसब आन पव भेनाह जगदलद ना मल आ तकरा
रौन तँ अमित मिश्री, करी ना, नरन श्री गकज, टदन
ना, मिहिर ना, दूमा जी आ आन गजनकाव मतहक रौन
गजनक प्रकाशक फेम रनि गेल । आ एँ तबहँ ए अरवाकाक
प्रथमे चषा ठोस भ सौमा आएन , जाहिँ एकव मजगुत
भरियक आकनष कएन जा सकैए । संगे एकव पूर्ण मंतरणा
सेहो जागत देखागए ।

अणटिहाव आखव द्वावा रौन गजनक महबुकेँ देखेत " गजन
कमना-कोसी-रौगमती-महलद सन्मान" अणगसँ देरौक घोषणा
सेहो कएन गेल । आ ३ मार्च माससँ प्रतारी मानन गेल । आ
श्रीमती प्रीती ठाकुर जीकेँ दूधाचलकती रौनाएन गेल । एखन
धरि जून मास धरिक प्रावृत्तिक चषाक चषा भेन अछि जे एना
अछि-----



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुसिंह कर्कत ISSN 2229-547X VIDEHA

१) मार्ट लेन श्री मती करी मी जीके दून लेन ।

२) अर्थ लेन नरनरी गंज जीके दून लेन ।

३) मग लेन अमि मी जीके दून लेन ।

४) जून लेन टंदन मी जीके दून लेन ।

मंथति बिदेह द्वावा प्रभुत रीन गजन मीमैयक एकव आवारके
मजगुत कवरक दिमैय एकठा मगु प्रमम अछि जहिमे एकव
रिक्कमक मंथारन अछि बहए ।

२.



उमेशकानि मी

मैथिली रीन गजनक अरधकानि

जेना कि नाम मँ स्पष्ट अछि, रीन गजन माले लेन लेना-
तुठक लेन गजन । रीन गजनक अरधकानि मैथिली मे
एकदम नर अछि आ गहन लेन २४ मार्ट २०१२ केँ श्री अमीय



मानवीय

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

अनतिहाव ए अनथावणा के समल आनयि । रूत अण्प समल
मे रौन गजन रूत अमिह्रि गउनक आ रौन गजन कहनिहाव
गजनकाव सभक एकठा रिशोन पाँति ठाठ भ२ गेन । ए मे
सरिणी गजेन्द्र ठाकुर आ आशीय अनतिहाव जकाँ स्थापित
गजनकाव तँ छथि, एकव अगले नरै गजनकाव सरै सेहो रौन
गजन कहरी मे रिशेय अतिकटि देखोनहि । रौन गजन
कहनिहाव नरै गजनकाव सभ मे सरिणी मिहिव सा, झुझा झी,
गवा मल्लिक, अमिह्रि मिश्री, चन्दन सा, गकज टोथरी नरनली,
बाजरी वंजन सा, जगदामद सा मल्ल, करी सा, अमिह्रि मैथिल
आदि अलको गजनकाव छथि । “अनतिहाव आख”, जे मैथिली
गजनक एकमात्र रूनाग अछि, देखना गव गता नालीत अछि जे
रौन गजनक अनथावणा अगनाक रौद सँ एखन धरि(३ आनख
निखरी तक) १३(तिरुतयि) ठी रौन गजन ए रूनाग गव पौष्ट
भ२ टुकन अछि, जे अगल आग मे एकठा कीर्तिमान अछि ।
थाम क२ एतेक कम समय मे एतेक पौष्ट आएँ रौन गजनक
लोकप्रियताक थिम्सा कहि बहन अछि । रौन गजनक रिधा एकठा
स्वतन्त्र रिधा रौनरौक रौठ मे अग्रसव अछि, जे एतेक कम समय
मे एतेक सँथा मे रौन गजन कहनिहाव गजनकाव आ रौन
गजनक सँथा सँ स्पष्ट अछि । सँगहि किछ लोक केँ मिवाटा
सेहो नागरै शुक अछि आ ओ लोकनि रौन गजनक सम्पूर्ण
अनथावणा केँ नकावरौक कसित असहन प्रयास मे जव क२
अछि नैष्ट पौष्ट देरै२ नागनाह । ३ गप आब स्पष्ट कलैत अछि
जे रौन गजनक रिधा मजबूती सँ स्थापित भ२ बहन अछि ।
कियाक तँ सहन राजि आ रिधा सभक आकर्षक केन्द्र रौलैत
अछि आ रौन गजन सेहो सभक आकर्षक केन्द्र रौनि टुकन
अछि, टाहो ओ गजनकाव होइथि, पाठक होइथि, आलोचक
होइथि रा जवनिहाव लोक सभ होइथि । जखन मैथिली
गजनक टर्त भ२ बहन अछि, तखन श्री आशीय अनतिहावक टर्त
स्वभाविक अछि । मैथिली गजनक विकास मे हुनकव योगदान
हुनकव धू रिवाधी लोकनि सेहो मालैत छथि । मैथिली रौन



বিদেহ ১১১ ম অংক ০১ অগস্ট ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১১)

মাসিক পত্রিকা ISSN 2229-547X VIDEHA

গজেনক অবধাবণী ভেন শ্রী আশীষ অবচিহ্নাব মৈথিলী সাহিত্য মে
অগন অবধাবণী স্থান রীনা চুকন ভূমি। রীনা গজেনক অবধাবণী
সেহো হুকে উচি, জে রীহুত সফল ভেন অচি।

আরো কিছু গগ কবী মৈথিলী রীনা গজেনক বচনা সভক সর্বিধ
মে। হুমা রিচাব সঁ রীনা গজেন লনা ভুঠকাক ভেন কচিগব তঁ
হেরীকে চাহী, সঁগহি এ মে কোলো স্পষ্ট সামাজিক মলস হোগ
তঁ ও সোণ মে সোহাগ জকাঁ হুত। ওনা তঁ সভ রীনা গজেন
কহনিকাব গজেনকাব সভ এ মে সক্ষম ভূমি আ বীক সঁ বীক রীনা
গজেন বিখ বহন ভূমি, হুদা এ সন্দর্ভ মে হুমা শ্রী গজেন্দ্র
ঠাকুরজীক রীনা গজেনক উল্লখ কবর উচি রীমি বহন ভী।
হুকেব একটা রীনা গজেনক মতনা অচি:-

কমিয়া প্তবা ডোড়, আশু রীরা

জঁ বঁগ গনারী উে তঁ জানু রীরা

এ গজেন কেঁ পুবা পঠি ক২ কল দেখিযো। ও গজেন কমিয়া
প্তবাক উল্লখ কবিত লনা-ভুঠকাক মলারজল তঁ কবিত অচি,
সঁগহি অজুকা রীজাববাদক রীনিরদী পব ফরীল ভেন মল্লবখক
মার্গিক রিরেচনা সেহো কবিত অচি। এহল আরো কতকো রীনা
গজেন সভ "অবচিহ্নাব আখব" পব ভেঠেইত অচি, জকবা এ
রীনাগ পব পঠন জা সকেইত অচি। ও গজেনকাব সভক
সামাজিক সঁরদনা কেঁ থকঠ কবিত অচি আ হুমা এ ভেন সভ
গজেনকাব কেঁ সাধুবাদ দৈত উচিযেহি। হুমা এহল রীনা গজেনক
আস গজেনকাব সভ সঁ বঁগওল ভী। কিয়াক তঁ গজেনকাবক
সামাজিক দাঁগিল সেহো উে, জে পুবা হেরীক চাহী। আধুনিক
মৈথিলী গজেনকাব সঁ মে ও ক্ষমতা অচি আ ও দিল দুব লে
অচি জখল এক সঁ এক স্রমব আ রীনাগযোগীক সঁগে সামাজিক
সমস্যা পব রীনা গজেনক ভবমাব হুত। রীকবীক হিমারো



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मैथिली रौन गजन नीक रौन धएल अछि । अणटिहाव आखबक
ठीमक परिश्रमक कारणें मैथिली मे रौनवशु गजनक कान शुन
भऽ चुकल अछि आ सबन रारिक रौन(जकब अरबाका) श्री
गजेन्द्र ठाकुरजी देवथिन्ह) केव अनाले आर अवररी रौन मे
गजन कहनिहाव गजनकावक कमी ले छै । रौन गजन अण
शुनआते सँ रौनवशु अछि, जे रौन गजनक लेन शुभ संकेत
अछि । शुनआतिअ समय मे जे आ जतरौ रौन गजन निखन
लेन अछि, ओ सब रौन मे अछि, चाहे सबन रारिक रौन होग
रा अवररी रौन । रौनक अनाले वदीह आ काहियाक नियमक
पानन सेहो गुवा गुवा भऽ बहन अछि । र्याकवा पाननक अ
प्रतिरौहता निश्चित कए रौन गजनक सहनताक गाथा निखरौ
मे सहायक हएत ।

मैथिली गजनक रौनते डेग संग आर मैथिली रौन गजनक डेग
सेहो उँठ लेन अछि । मैथिली रौन गजन जाहि द्रुत गति सँ
अण डेग उँठउनक अछि, ए सँ तँ येन नालीत अछि जे
अनिना सान आरित आरित मैथिली रौन गजनक पोथी प्रकाशित
भऽ सकैत अछि । संगहि असुकनक पाठक्य मे रौन गजन
समिलित हेरौक संभारना सेहो साकार कए नऽ सकत ।
पाठक्य मे समिलित हेरौक रौन मैथिली रौन गजन सब
पठनिहाव-पठनिहावक संज्ञा मे नीक जकाँ आउत आ
सामाजिक विकासक संवचना मे अण महत्वपूर्ण योगदान, जे
अपेक्षित अछि, सेहो दऽ सकत ।

३.



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक ISSN 2229-547X VIDEHA



जगदीश चन्द्र झा

ग्राम पोस्ट- हरिप्रसाद जी, मधुबनी

बौद्ध गजवक अर्थविका

बौद्ध गजवक अर्थविका कोला रौमी प्रवास नहि अछि । आर्थिक
देखले- देखले चाबि महिला भेल होएत । दूदा जेला कहल
जाइ छैक, कोला कार्यक अर्थविका अर्थविकाक सुरुवात कतेको नहि
कतेको सँ होएते छैक । आ हम सँ एथुनका समकालीन
गजवकाव (विशेष कए बिदेह आ अर्थविका आथव सँ जुवल)
मोतागमिनी छी जे एहि महान घटनाक्रम केँ परोक्ष अपन आर्थिक
सँ देख बहल छी आ गतिहास मेँ धारणाक गराह रैनि कए आएँ
।

उना कोला कार्य केँ हवदय दूगोष्ट पक्ष होएत छैक एकटा
पक्ष मेँ तँ दोसव रिपक्ष मेँ । रौत वास रिपक्षक लोक
केँ एथन तक मैथिली मेँ गजव, सेहो नहि पछि बहल छैन आ
अर्थविका पीछी हलका सँ केँ सामान मैथिली मेँ बौद्ध गजव नए
केँ उपस्थित भए गेल । आ हलका सँ केँ जेन अर्थविका आ
अर्थविका केँ सँवारीक छैनि । किएक तँ बौद्ध गजवक
अर्थविकाक उपेक्षा एथन तक उर्दु आ हिंदीयो मेँ छुप्ता अछि,
उहि ठाम मैथिली मेँ गजव नहि पछि रैना सँ केँ मौमा मेँ
कवीर चाबि महिला मेँ नगलग सय सँ रौमी स्वयं-स्वयं लक्षण
सँ भवत बौद्ध गजव हलका सँ जेन आर्थिक दूदा हमरा सँहक



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जेन प्रभुताक रियस अछि । किछ लोक सँगि केँ जेनाक बाद
माथी पिटे सँ लागन बहेत छथि । तँ किछ लोक एकठा
सार्थक शीजन सँ, ह्रदा गतिहास रँबारै रँना सँ नाम सदिखन
शीजनकर्ता केँ अरैत छैक । हम सँ केँ सँ एखनका समय
केँ शीजनकर्ता छी ।

रौन गज्जनक अरिधावना कोना समुह भेलै आ कोन-कोन महिना
सँ एकव पुर्ण जाणकारी चन्दन या जिक आनेथ सँ नीक सँ अछि
ह्रदा हम एतेक जकब कहै जे एहि अरिधावनाक जग आशीय
अनछाव जिक मोन सँ भेलैह आ रँहूत जल्दीए जे अगन
सुतँव भाग जग-जग केँ मोन पब छेवत ।

रौन मोनक कपना केँ कोना सीमा नहि छैक, रँस ओ कपना ओ
चरित जे जिरनक भागभाग सँ कतौ हमरा सँ सँ हवा जेन,
कनी कान केँ जेन सँ किछ रँसवि कए रँटा रँनि कनम चनेल
रौन गज्जन । एहि सन्दर्भ सँ गजेन्द्र ठाकुर जिक जे उक्ति सग
छका ठीक छैन - "जे जतेक रँटा रँनि जेता ओ ओतेक नीक
रौन गज्जन कहता " ।

रिग पामिक नाँउ चनाएँ हम

रिग चक्राक गाडी रँनाएँ हम

नहि रिना पामिक नाँउक कोना प्रयोजन आ नहि रिग चक्राक
गाडीक कोना प्रयोजन ह्रदा उगवका शैव सँ रौन मोनक
परिकल्पना अछि आ ओ रौन मोन किछो कए सकैत अछि । रिग
पामिक नाँउ चना सकैत अछि, रिग चक्राक गाडी रँना सकैत
अछि, रौना केँ घोवा रँना सकैत अछि । ओह रौन मोन जखन
गतीव होएत अछि तँ पवदेसि सँ रँसन काका रँरू केँ
रँजारैक हेतु टिकेव कबैत अछि -

मय दै सगत घब घुबि आँउ काका रँरू

लगा केँ कथन तक कोँठ ठोवाएँ



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुसिंह सरस्वत, ISSN 2229-547X VIDEHA

४



आशीष अणदिवान

की थिक रात गजनः

किछ लोक "रात गजन"क नामसँ तेनाहिजे टोकि उठन छथि
जेना केओ हुनका अणदोकेमे हूँपेष्टि देल जे। जँ एहन
रात मात्र मैथिलि एठामे बहिये तँ कोना रात ले, झुदा ए
टोकर हिन्दी आ उर्दूमे सेहो भए बहन छै। कावण ए
अरथावणा मात्र मैथिलि एठामे छै आब कोना भारतीय भाषामे
ले। जँ हम कोना हिन्दी-उर्दू भाषी गजनकाव मिस्रँ "रात
गजन"क छट करीत छी तँ छेष्टि कहिये छथि जे उर्दूक रँहूत
गजनकाव सभ रँहूत शैवमे रात मलारिङ्गाक रँषि केल छथि
थाम कए ओ अदम्य हकिम द्वारा कहल आ जगज्जीत सिंह द्वारा
गाओल गजन----- "ये कागज की कन्ती रो राबिस का
पानी" रँगा मंदर्त दे छथि आ ए रात ओना सए छै झुदा " रात
गजन"केँ हूँपेष्टि कए ओकवा जेन अणग स्थल मात्र मैथिलि एठामे
देन गेलोए। आ ए मैथिलीक सौभाग्य थिक जे ओ "रात
गजन"क अणुआ रँषि जेन अछि भारतीय भाषा मध्य। आ
बिदेह एकव रिशेयक निकानन ताहि जेन हम एकवा धन्यवाद ले



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

दए सकेत छी काँ विदेह हमर छी छी आ लोक अगला आगलै
धन्यवाद कोना देत ।

जहाँ धरि रौन गज्जनक रियस चयन केव रौत थिक तँ नामेसँ
बूमा जागत अछि ए गज्जमे रौन मल्लारिज्जन केव रूपाँ बहेत
छै । तथापि एकठा परिवर्तना हमरा दिससँ ---- " एकठा एहन
गज्जन जाहि मँहक हलक शैव रौन मल्लारिज्जनसँ रूपाँ हो आ
गज्जनक हलक नियमकेँ पुर्रित पावण करैत हो ओ रौन गज्जन
करैरौक अधिकारी अछि । जँ एकवा दोसर मैथिले कही तँ ए
कहि सकेत छी जे रौन गज्जन जेन नियम सब रहल बहते जे
गज्जन जेन होगत छै रौन खानी रियस रैदनि जेते ।

आरि आरि रौन गज्जनक अस्तित्व पब । किछ लोक कहता जे
गज्जन दार्शनिकतासँ भवन बहे छै तँ रौन गज्जन तैए ल
सकेए । ह्रदा ओहन-ओल लोक विदेहक ए अक जे रौन
गज्जन विशेषाँक अछि तकर हलक रौन गज्जन गठयि हुनका
उत्तर भेटै जेतहि । ओना दोसर रौत ए जे करिजा-कथा
आदि सब सेहो पहिल गतीव होगत छन ह्रदा जखन ओहिमे
रौन साहित्य भए सकेए तँ रौन गज्जन किएक ले ? ओनाहो
मैथिलीमे गज्जन रिवाकेँ रूत दिन धरि सायाम (खाम कए
गज्जनकाले सब द्वावा) अरुदेवि देन जेन छलै तँ रूत
लोककेँ रौन गज्जनसँ कछु भेलाग स्वाभाविक छै ।



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

की रीत गजब तब नियम रीदमि जेतै:

जेना की उपवसे कहन गेल अछि जे रीत गजब तब सत
नियम गजबे रीत बहते रीत खानी एकठा नियमसँ समझौता कब
पड़त । माल जे रीत-काहिया-बदीह आ आव-आव नियम
सत तँ गजबे जकाँ बहते ह्दा गजबमे जेना हलक शैव
अनग-अनग भारकें बहते अछि तेना रीत गजबमे कठिन
रूमागए । तँए हमरा हिसारें एठाम आ नियम छुटत ह्दा तेओ
कोला दिकत ले काका हलसन गजब तँ होगते छै । अर्थात
रीत गजब एक तबहें " हलसन गजब " भेल ।

रीत गजबक पूर्ण भूमिका:

तारीखक हिसारें रीत गजबक उपेति २४.०३.२०१२ कें मानन
जाएत ह्दा ओकब स्वरूप मैथिलीमे पहिलहें फड़ि छै भए छूकन
हुन । ०९ दिसम्बर २०११ कें अलटिहाव आखर पब प्रकाशित
श्रीमती शीति लक्ष्मी टोपरी जीक आ गजब देखन जाए (रीदमे



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अ गजल मिथिला दर्शनक अंक यथा-सुख २०१२मे सेहो प्रकाशित
भेलै) आ मोहन झाए जे बिना कोना घोषणाकेँ एतेक नीक
रौन गजल कोना निखन गेलै-----

निगु मियाँ उपाय उपायन छिये हमर आग्रहति छैी

बैबैबी गान्धीक कोमल आँन छिये हमर आग्रहति छैी

छिमेकत कमलबन, धर-धर यात्रा सन कपोल

पुष्पसरीक छमेकत टाँन छिये हमर आग्रहति छैी

बिहारीत छैव ये अमृतधारा बिबैबीत छैव सोमक

निगु सुकण्ठक शीतगणन छिये हमर आग्रहति छैी

लोनिहाव किलकारी सकस मिथिलाबन मलालब पोथी



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

दो-दो-ना-ना-यो साखगाया गौन छिये हमर आश्रयति छैती

सरक गमिवावक अवस्थावा खगलीक सबसुती

अगल बेया-नितालीक जाल छिये हमर आश्रयति छैती

जलगीठक छैती छिये सुतछिह मिमिवाक दूरी कसत

माह निह रुवक अवसल छिये हमर आश्रयति छैती

गोतिवसरी विदेहक घर-घर देखय अयर निगुवसरी

छैतीजातिक भरिहू ग्रामल छिये हमर आश्रयति छैती

.....की २२.....



तेषां हि ते एकठां हयव रीणां दुंद रीहवक गज्जन अर्णहिहव आथव
आ रिदेहक फेसबुक रर्सन पव 6/6/2011कै आएन डन मे
देखु-----

होअत डेक रीवथा आ ले रीवथा
कागतक नरु रीना ले रीवथा

देखिहै घुसो ल छेवरी घव मे
हाथमे छेगा डी ल रीवथा

तेले पव सभठी माण-गुमान
माएक माण रीठ । ले रीवथा

डेक गज्जन कष्ट घृक कवेज्जमे
प्रेमर्ष ओकवा छी ल रीवथा

नहि सुको माथ तेलेव दुगेमन वग
देनेक लेव माथ छी ल रीवथा

तेषां हि ते ४ अर्कटूरव २०१०कै अर्णहिहव आथव पव प्रकाशित
गजेन्द्र ठाकुर जीक ए गज्जनकै देखन जाए----- जे



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक संख्या **ISSN 2229-547X VIDEHA**

नैतिक आधार पब रान गजन अछि ह्द अर्थ रितावक

कावर्ष रान आ रूठ दू जेन अछि-----

रानव पछि लेने अछि तैयार

रिबलन सभ कक ले उछार

गाएक अर्थ-रौ स्रनि अछि ले

दू सभ जगतक कपार

पुन रेलरौक सगटा ठेक ले

अर्थमित्र-प्राथमिक दुले भंडार

कोरो रानी उरली देरौक जेन



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

आँउ रँजाँउ रँउ षम - भजाव

डवक घाँ नहएन छी हम

से महरँ दहोदिने अवाचाव

एवारत अछि देखा - देखा कए

सभँ देखेत अछि ओ रागाव

ए तीरँ गजनक आवाव पव ए कहँ रँसी उँटित जे रँग
गजनक भूमिका रँहूत पहिल रँगि जेन डन रुदा
रिश्काँ 24/3/2012कँ भेलै। आ ए रिश्काँमे जतेक हमर
भूमिका अछि ततँ हिनका सभकँ सेहो छि।



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

1

बौल गजल

अ डौड़ १ थिक रिदनी सन

सौमे नाटे घिवनी सन

बिदमाशीके तगमा ठे

60



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मूलक गाली हिवी सन

लैसन भूतक गाली रैनि

गाली छै झूहटिवनी सन

रैछा नग रैछा गाली

बूढ़ा या नग रैततिवनी सन

अ दुनियाँ साँपे तेओ

लैछी चमले किवनी सन

हलेक पाँतिमे दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

2

रौल गजल

भोलै उठि मैदान गेलै रौआ

ओखहिँ दतगि तँ जेतै रौआ

पोखरिमे नीकसँ नहेते धोते

टिक्ल टुल्लन रनि क एते रौआ

सबिअते पोखी पहिबते अंगा

अकुल्लो खुँ तँ जेतै रौआ

62



ले बखते दोहरी खवापक संगे

पठि रँडका डाकैव तँ रँगते लौआ

सभहँक कवते गदति मोना रँछै

सदिखन नीके रौछै छनते लौआ

हलेक पाँतिये दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-
दीर्घ

३.



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानसिक संस्कृत, ISSN 2229-547X VIDEHA



टिप्पण करवाव सा

सबबा, मदलमेव स्थान

मधुबनी, बिरुवा

मैथिली बाव-साहित आ बाव-गजव

मैथिली साहित्यक गतिहास करीब ५०० वर्ष पुरान छैक आ मे
एकर समृद्धि बिदेह-साहित्य जगत मे अपन हवाक आ रैडुग स्थान
बैलौल अछि ताहि मे कोनो दु मत नहि.अन्त, जखन मैथिली
साहित्यक एहि समृद्धि केँ ध्यान मे बसेत मैथिली बाव-साहित्य पब
दृष्टिगत करैत छी रा आन-आन भाषाक बाव-साहित्य सँ एकर
तुलना करैत छी तऽ हेर आ नगणाय समझा जागत
अछि.मैथिली भाषा मे बाव-साहित्य रहैत कम लिखल गेलैए
एखनधरि. लेकिन, एकटा बाव जकर छैक जे मिथिला क्षेत्र मे
घबक बूझ-पुरान द्वारा बिया-पुता सबकेँ विभिन्न तबक
प्रेषणादानी थिम्मा पिहानी स्वयंराक प्रचलन रहैत पुरान छैक



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

झुदा, एकबा रौन-साहिल केर अतबगत माग्यता नहि देन जायत
किएक तऽ ग्री निथित कग मे नहि उगनट्ट अछि. रिभिन्न जगह
पव एकव रिभिन्न स्वरुप मे कथानक रैदलोत बहैत छैक. निथित
कग मे नहि हेरौक कावणै ग्री थिम्मा-शिलाणी स्वरुप आ स्वरुपक
पवगवा मेहो रिगुतु तेन जाऽ बहन छैक.

मैथिली रौन साहिलक प्रादुर्भावकाल प्रायः रीसम शताब्दीक उत्तरार्ध
केँ मानल जायत. ओना हमरा नग एतखधरि एकव कोना प्रासांगिक
ताबीख तऽ उगनट्ट नहि अछि झुदा, रौन-साहिल निथिनिहाव पुवान
साहिलकाव सतक बढाकाल केँ धेयाण मे बथेत हम ग्री रौत
अणन अणुमानक आधाव पव कहि बहन छी. एहि समय मे
प. ट. दत्ताथ मित्रि "असव", प. गोविन्द सा, झुवनीधर सा, कानीकांत
सा "रूट", बागलौचन ठाकुर सद्गुण झुवनीधर मिश्रा, स्थापित
साहिलकाव आ मैथिलीमेरी सत अणन कनकक मोसि पिया
मैथिली रौन-साहिल केँ पौमनमि. जेव झीरकांत, सियाबास सा
"सकस", सन लोकप्रिय साहिलकाव एकबा अणन आंगुव धवा डेगा-
डेगी चलोनि. एकेसम सदीक शुरुआत मे ताबाणन्द रियोगी. जे. क.
मयाणाथ सा, जगदीश प्रसाद मन्डन, गजेन्द्र ठाकुर आ शिती
ठाकुर, जे. ए. दि. मैथिली रौन-साहिल केँ रौन दूनाव-गनाव भेटै
बहन छैक. रतमान मे मयि रशिष्ट आ डा. शशिधर कर्मकर रौन-
साहिलक लेन कयन जा बहन अरदान मेहो उल्लेखनीय अछि. तखन
आरि ग्री आशि निश्चित कएँ कयन जाऽ सकैत अछि जे मैथिली
रौन-साहिल मेहो कयनः जराणी आ शीठारसू केँ प्राप्ति कवत
आ चिबजरी रौन. एकव एहल उल्लेखन भरिया केँ देखैत
साहिल अकादमी दिगी मेहो मैथिली रौन-साहिल केँ माग्यता दैत
एकबा लेन पुवकावक प्राप्ति कयनक अछि. अस्तु.

मैथिली साहिल जगत मे गज्जल मेहो कमोरेशि नरके रिधा
कहन जायत. ओना एकव उल्लेख मैथिली मे कवीर सग रौन पुरि



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

भेन बहेक आ लेब कहियो गजन तऽ कहियो गीतन के कण
मे आ अछन बहन दूदा, एहि गीतन-गजन सभ मे गजनक
र्याकवण केँ कमोरेने एकात कऽ देन गेलैक. परिणामस्वरूप,
मैथिली गजन आ गजनकाव मैथिली काराबाबा सँ सभदिन
कतिअएने बहन आ गजन सेहो सभदिन अपन अस्तित्वक
नङ्गा नङ्गेत बहन अछि. एकेसम सदीक एखनधरिक राबह
रबथ मैथिली गजनक गतिहास मे अत्यन्त स्थान बनेत अछि.
एहि समारोह मे श्री गजेन्द्र ठाकुर आ आशीय अन्तिमक
अरक्षण अस्मिताकीय अछि. गजेन्द्र जी गजन र्याकवणकेँ पछ
कबैत नहि खाली गजन निखार अर्पित सबन रर्षिक आ सबन
मात्रिक रबहक कण मे मैथिली गजन सभाव केँ दूष्टा अन्वयान
रबह रा गजन-हुँदक ठाँटा देनखिन्ह जे हमरा सन-सन कतेको
नरनुबिया आ नरनुबिआ केँ लेन गजन निखरा हेतु सहायक
निह भेल अछि. एहि सँ मैथिली गजन केँ अतृप्तगुर्न समृद्धि भेटै
बहन छैक. रतिमान मे मैथिली गजनक लेन आशीय अन्तिमक
समर्पण रर्षिनातीत अछि. आशीय जी उर्दू आ अरबीक समूह गजन
र्याकवण केँ मैथिली भाषाक आरम्भिकतासभाव जाहि तबहै
सबनीकवण लेनयि आ लेब अन्तिमक आखक माध्यम सँ आम
जनमानस मे रबह आधारित गजन कहराक (निखराक) लेन कटि
जगा बहन छथि से जाधरि मैथिली गजन गतिहास बहत ता
धरि हिनकव एहि अरक्षणक चर्चा अरम्भ कयन जायत.

मैथिली मे रान-गजन एकदम छैका परिकल्पना अछि. आन
भाषाक रान-साहित्य सभ मे सेहो रान-गजन किआगते
हेतैक. उर्दू मे गजन माल प्रेमानापे रूमन जागत डलैक
गहिल दूदा, लेब गजनकाव सभ एकवा रिस्ताव दैत एहि मे
सांसाजिक सलोकाव केँ सेहो समारोहित कयनयि लेकिन रान-
गजन उतहुँ जन्मान हेतैक ताहि मे हमरा शैले रूमना जागत
अछि. मैथिली मे रान-गजनक परिकल्पना सरप्रथम २४ मार्च



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

२०१२ केऽ आशीय अष्टमिहारा द्वारा कयन गोन आ हरेव २१ मार्च
केऽ आशीय ज्ञी सूचना देननि जे २३ रा २७ मार्च केऽ
मैथिलीक प्रवास आ स्थापित गजनकाव ह्मना ज्ञी द्वारा एकठा
रौन-गजन निखन गोन अछि.एहि तबहै ह्मनाजिके ग रौन-गजन
मैथिली रौन-गजनक गतिहास मे प्रथम होयराक गौरव गोल
अछि.आमी करैत छी जे बिदेहक एहि रौन-गजन विशेषांक मे
ग रौन-गजन प्रकाशित होयत. रौन-साहित्य सृजनकाल मे रौन
मलारिहास केँ प्रयास मे बाखरि पवमारभिक.एकठा उक्तेछ, साहित्य
मेन जकरा छैक जे ७ सवन, रौधगया आ प्रेवणास्पद
हो.जखन रौन-गजनक परिकल्पना मैथिली गजनकाव सभक
सोनाँ एननि तऽ स्वाभाविक रूपेँ ह्मना सभक योष मे ग प्रथ
उठननि जे एकव रूपलेखा केहन हेतग....एकव र्याकवण आ
भारपक्ष केहन हेराक चाली...गवादि.ह्मना सभक एहि जिह्मा
केऽ गीत करैत गजेन्द्रजी कहनथिन्ह जे कायदा-कायन तऽ
सायास गजन जेकाँ बहतेक ह्मना भारपक्ष एहन हेराक चाली
जे छेष्ट-छेष्ट मिया-पुता के कटग.उकव सभक मल-मल्लिक
केँ पटग आ तग जे गजनकाव जतेक रौन रौन रौन-गजन
कहतार(निथतार) उ उतेक सफल हेतार.

उसोह आ प्रतिभा सँ भवन अगित मिश्र,गकज टोषवी
'नरनरी',जगदानन्द मा 'मल',करी मा, मिहिव मा,गवादि सन
नरगजनकाव सभ गजेन्द्रजीक उगवाउ कहन रौत के पूर्तिः
आमेसात कयननि.फलस्रकण, २४ सँ ३५ मार्च २०१२ अरौत-अरौत,
एक सथाह के तीतव गोष्ट दमेक सँ रौनी रौन-गजन हमार
सभक सोनाँ आयन.एहि क्रम मे हमछ एक-दुष्टी रौन-गजन
निथराक प्रयास कयनहू.ह्मना.एहिठाम उल्लेखनीय रौत ग जे मैथिली
रौन-गजन प्रायः सोगरीये सँ अगल कप आ भार सँ आमा
जगमाणस के आकर्षित-प्रभावित कवय नागन.रौहव आ र्याकवणक
मागदस्र पव मेठन आ रिश्र आ भारसँ उत-प्रात मैथिली
रौन-गजन अगल जगहि कानसँ सकेत देमा नागन जे मैथिली



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

रौन-महिर् मे ओकर भरिया रेशे डेकरन डेक आमे नगभग
चाबि मासक अप्पारि मे एकसय सँ रेशी रौन-गजन एहि
रातक प्रह्ला प्रमाण अछि.

अमित मिश्र एखन ज़रिणक ड़ात्रारहा मे छथि आमे एखन हिनकर
एकठा पएव लणगण त२ दोसब जूआनीक सोपान पब छहि आ
तकरे प्रतिफल डेक जे हिनका रौन मल्लोभारक मागव मे
डुरकी नगरौत देवी नहि नहौत छहि.यैह काबि डेक जे ३
रौन-गजनकावक पाँति मे सभसँ आगु ठाठ भेठैत छथि.एखनधरि
गोष्ट तिमैक सँ रेशीए रौन-गजन बटि टुकन छथि आ तगमे
अधिकनि अबरी रहव पब आधारित अछि जे हिनकर गजनकावक
कग मे प्रतिभाक पविटायक अछि.३ दबतंगा मे बहैत छथि मे
हिनकर रौन-गजन सभ मे मेहरी आ ग्राम्य परिवेश मे रौन
सभक मल्लोभारक अछुत टिपण-रनि भेठैत अछि.३ कतह-

माष्टक चाँव पानिक दुध पातक थावी रौनरौ

माष्टक टूला पब थीव बाहि,तबकावी रौनरौ

आ

रौनक टिपणी कानो के दली गेला हुनक टूडा हेटै

वैनक (खगष्ठा) टकना मँठी के रौनला मे गुड़ १ रौनरौकहेत
भेठैतह त कतह:-

पाँठ पब डे रौन रौआ चमन गफुन

नान पियव ड्रेस चमके भवन गफुन



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

उपलब्ध ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

ले गहाड़ । पठरै ले सीखरै कहवा

आरै छै कंष्टर मिथा बहन गफुन....आ हेल रातु माय-रौप
आ एकाकी होगत रँचण दिशि अशिवा करैत कहैत छथि -

ले जो पठ रौ के लेन गफुन माँ

तु जाग छै रँदले घर त रणरास मे

पंकज टोषरी नरयणी सेहो प्ररामी छथि आ गाम सँ दूर
हिनका रँव-रँव लणा मे रीतायन दिन गयाद अरैत छहिनै
महजहि कहैत भेटैतहः -

देखि भूख सँ लोहठन लणा दूख-सूख सल्लै लोप भेलै

तँसा घर मे गाम सँ बीजन काज करै सभ छूट-छूट माँ

होय कहाँ अलका देखलैलै "नरन" अ मायक माया-हठ्या

भेब निम तगयो कहि थिम्स दूध पियारैय घूँ-घूँ माँ.....आगाँ
कहैत भेटैतहः...

मोष पड़न अ किये अलले रौत पुवणगव रँचण के

आँखि लालेलै मोष जड़नेक याद कलणगव रँचण के

रौरूक कलहा मायक कोवा अण्णम मुना सन घूँ-घूँ



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

ता-ता-ता बैसा आव ठैहूँनिया खेन डमसगव रँचण कै.

करी मा एकठा गजबकावि हेरौक संग-संग माय सेहो दुधि से
हिणकव रौन-गजन ये मायक मगता स्पष्ट दृष्टिगोचर होगत
अडि.जेना:-

कसिये जेन रौआ ममाएँ कोना कए

निर्धन माय रौआ बुमाएँ कोना कए...हेब आगाँ कहैत
भैठतीह:-

जनन ठूमकि रौआ कते मोहारन नाली छै

रौजन रौआ तोतन माँ ममभारन नाली छै.

ममूजी रैशीकान रौनमन के अपन धेबक रौन-गजन सभक
माधम सँ धेवित करैत भैठैताह से अछि सभ देखु:-

झूठी भवि रिया भागक अपन हम बोधि

अपन माँ मेँ हँसि हँसि कँ जोवाएँ

आ हेब...

हमवा कहैत अडि "ममू" मूर्थ चवराँहा

पढ़ा कए सभ चवराँहा के पढ़रौ हम

माय नहि चवराँ जेन गाय जेरौ हम



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

पठा हमरा अफुन कापी पेश जेरो हम.

उपलब्ध मेव रा गज्जन सभ तऽ एकठाँ रौनगी मात्र
अछि. एखनधरिक रौन-गज्जन शेतक पब यदि दृष्टिगत कबरँ तऽ
माय-रौनक दुनाव-मानव, भाय-रौनिक सगड 1-साँठी सँ नऽ ले
नखन्यापि हेतु धेबाँ आ सँकष सभ किछु भेटै जायत. आ
हएव अ कहरो मे कोना अतिशयोक्ति नहि बहत जे मैथिली
रौन-गज्जन अपन दुर्द्विहाते सँ ज़ीरकात, सबसज्जी सन-सन निमग्न
करि सभक रौन-करिताक समकक्षी रैनि जेन अछि अछि.

अत मे कहय चाहँ जे बिदेह जे अ रौन-गज्जन विशेषांक
रौनक कबरौक लयाव केनक अछि मे निःसंदेह मैथिली रौन-
गज्जन आ रौन-साहित्य इतिहासक विकास माझपब एकठाँ मागनक
पाथव सारित होयत. एकरा आरो ठोस रूप देबैक मादँ हमर
सुमार बहत जे एहि अक मे समिलित रौन-गज्जन आ रौन-
गज्जन सँ संरक्षित आलेख केँ संग-संग एखनधरिक किछु उल्लेखनीय
रौन-गज्जन सभकेँ एकठ्ठा कऽ एकठाँ छोट-छोट पोथीक रूप
मे बिदेह परिवार प्रकाशित कबारँ आ संपूर्ण मिथिला क्षेत्रक
विद्वान आ पंडितक सभसेँ उपलब्ध कबारँ जाहि सँ रौन-
गज्जनक परिकल्पना अपन उद्देश्य के प्राप्त कबत, गाम-घबक लना-
तुठका रौन-गज्जन सँ परिचित हेतार आ हृषका सभ मे
मैथिली रौन-साहित्य पढ़बैक प्रति बढि जगतैल संगहि मैथिली
रौन-साहित्यक गज्जनकाव सभक मेहनति नोकान्न नगति. एहिठाम
हम मिथिला क्षेत्रक उल्लेख विद्वान, सामाजिक आ शैक्षणिक
संस्था, गायक, संगीतकार, जेनादि, सभ जे आर्थिक रूपेँ सरल भुवि, सँ
लहोवा कबरँ जे ओ रौन-गज्जन के ऑडियो-विडियो
केसरेट, सीडी, डीवीडी रैना गामघबक अंगना-घब मे पहुँचैबैक
प्रयास कबथि. मैथिली रौन-गज्जनक त्रिविधमे विकासक मादँ हमर
मनावथ अछि जे अ विद्या-प्रताक ठोब पब ओहिना सज्ज जेना



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक संख्या **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मैथिली भाषा के क्षेत्र में पत्रिका के माध्यम से

गीत, मोहवा, टोमारा, बाबुआसा, समादाईन रसम के अन्तर्गत

ई बासा के अन्तर्गत ggajendra@videha.com पर
पठाओ ।



१. योगेश्वर पाठक 'रियोप्री' - नमस्कार-



देवरानी २. नरेंद्र कुमार झा- रिजनीक क्षेत्र में
आमे निर्विकार के लेन सरकार क बहन प्रयास

१



योगेश्वर पाठक 'रियोप्री'



मधुकथा- देवराणी

हम अ नरका पंडितजीक कल पवीका न२ बहन छी । पंडित
जी जे प्रवण दुनाह से तँ कहिया ल सुप्रसारी भेनाह । उ
परोपस्था से नामी लोक दुनाह पंडित संसार नाथ मित्र ।
पंडितजी व्याकरणार्थ, साहित्यार्थ, आहार्यार्थ आब नहि जानि
कोन कोन नियमक आचार्य दुनाह । हमरा गाम अर्थात् मालिपुर
से महासाया संस्कृत विद्यालय हुनके ग्रामसे " स्थापित भेल दुन
जहि से सुलेत डियेक महाबजा नक्षत्रिय मिह स्वर्ग उद्धार
कवरी लेल आएल दुनथिह आ विद्यालय प्रांगण से एकठा आम आ
एकठा पीपव के गाढ बोगल दुनथिह । आमक गाढ तँ मन्
सतारन के रौंठि से सुखा गेलैक दूदा पीपव तँ एखनहुँ छैके
जे अर्द्ध सँ देखिते डियेक ।
नरका पंडित जी भेनाह हुनकर ग्रामोत्तर । पंडित संसार नाथ
मित्र जी के " चाकि रिवाज से एकठा रौनक भेलथिह । तहि
सँ पहिल तीन रिवाज से चारि चारि ठा कथा बने ग्राम भेलथि
जेना नक्षत्रि सबसती सीता लोरी सँ अण अण मन्त्री रौनकाक
संग अरतवित भेल होथि । पंडित जी जिदी लोक । चाकि
रिवाज सँ पुर जखन किछ आर्य सँ हुनका रूमरै गेलथिह
जे " देखु आरै रयमो भ२ गेल । एहि रौबह ठा रौंठि के
पानन पोषा आ कथादान आदि से अणलक जे दमा भ२ बहन
अछि से तँ अणनहि जलैत छैक । ते " हमरा सरैक कहै
जे हेल रिवाज कवरैक अ रिचाव छोडि दियेक । मनि निश्च
जे रौंठि भाग्य से नहि अछि । " तँ पंडित जी थिसिया क
रौंठन दुनथिह " देखु अ भुआ भगवान के न२ । अ
डियेक । यदि भगवान के " जिद नागन छहि जे रौंठि नहि



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक चर्चामा, ISSN 2229-547X VIDEHA

द२ कए पर्विका नियेक तँ भङ्ग के मोहो प्रतिज्ञा छहि जे
रौंछी नगए कए बहताह । हमरा ३ नङ्ग १३ नङ्ग दिअ २ आ
अहाँ सँ कात सँ तमासा देखेत बद्ध । ” अतः, जेना कि
पौवाणिक कात सँ लोगत बहलैक अछि, अतः भङ्गक मोसा
भगवान् हारि मालीत बहनथिन्ह अछि, सएह भेलैक एहू रौंछ आ
चाकिम रिगाहक रौंछ कवीर पछाण रयिक उमेव मे पंडितजीक
तपस्या सहन भेलहि आ आगमाग सँ गौनहि मोहव “ननवा
ले घब घब रौंछे रौंछा ३ कि प्रष्टजी जग लेन ले...” ।
नरजातक नाम पंडित सँकाव नाथ मित्रि अगनहि
छनहि । परोपष्टाक लोक तँ हूँका सँ नामकवा कबलैत छन, ३
कतए जगतथि । से नाम बाथन गेन भुजनाथ । आरि जे
सुनए सएह हँसए । सँ रूमए नागन जे सत मे पंडितजी
सँकाव गेलाहए । कियो कियो अहो अर्थ नगरैए जे पंडितजी
के “ भुजा रौंछ पम्लि छहि । किछ अहो रौंछए जे एहि सँ
नीक तँ ‘अनाथ’ नाम लोगतैक, किछ अर्थ तँ बहलैक । जखन
टाक कात थिअस होअए नगनहि तँ नरकी पंडितागल एक दिन
ठैकनथिन्ह जे रौंछ ठी रौंछीक रौंछ तँ एकठा रौंछी भेल तकव
की नाम बाथि देखियेक जे सौ सँ गाम हँसत अछि ।
पंडितजी कल दुअगियाँ हंसकी दैत नरकी के “ रूमनथिन्ह “
लोक की रूमनैक ? ओकवा सँ के “ लाल कतैक छैक
? देखु ३ नाम अपूर्व छैक । एकवा एनाकए रूमियोक : भु
छै जा छै नाथ । भु माल पृथ्वी, जा माल ताहि सँ उमेव अर्थात्
भुजा भेलीह सीता आ भुजनाथ भेलीह साक्षात् भगवान् राम ।
अही मोचियोक यदि मोमे राम नाम बाथि दितियेक रौंछाक तँ
सँकाव नाथ मित्रि क लोचन कोन काज ? हँस ओले नाम तँ
हलैक छैन परोस मे भेलैत आ थोडरै दिन मे राम भँ
जगतथि बद्धआ । बद्धआ ककरो हवराह, बद्धआ कोला रौंछिह,
बद्धआ ककरो टाकव आ बद्धआ कोला पंडितक रौंछ । हँस



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अनुव की भेलौक ? ”

आरै जे अ राखा मूअ मूअ कहए राहराह, पडित मयाव नाथ
मिथि मय राकबाछर के “ छोटि के एतेक सुन्दर नाम मोटि
सकैत छन ? नामकवा मे हूकव खाति आब रेशी रैति
गोनहि ।

झुदा मरै किछु होगतो एहि परिवार मे आगु दु पञ्च तक
राकबा आ साहिब के “ के कहए मयूत पठरौ रैद भऽ
गोन । भेलौक एना जे मयाव नाथ मिथि भगवान मँ एकठा
राजी तँ जीत गोनह पवतु पुवा खेन तँ हूका रूमन छनहि
नहि ।

भुजनाथ के “ तीन ठा रैडका माए आ रावह ठा रैलिन । मरै
मिना कए एहि मोनह मरीगणक ओ अति दुनाक रैछा । नीथर
पठरै मँ ओ तहिना पड़ यि जेना नरैका रियाह भेना पव
पडितजी पवना कनियाँ मरैमँ पड़ यि । एहि मोक मँ रूम आ
कि उमेवक प्वा दोय, पडितजी अस्त्र बहए नगनाह । पाँचमा
रय मे भुजनाथक उगणए भेलहि आ तकव किछु दिनक बाद
पडितजी भगवान मँ भैठे कवए स्रष्टा छन गोनह । भुजनाथ
भैठे नहि देखहि ।

भुजनाथ रैठेत गोनह आ ओतरे रेशी अरैड होगत गोनह ।
हूका पहाग कवऽ मे आ तिनकोव तोरे मे रेशे आनन्द
अरैहि । जमीन जान तँ पिताजी रावह ठा कयादन मे प्रायः
मेमे कऽ देल छनहि ते “ घब गृहस्थीक टिछु कोन । रावह
ठा रैलिनक मासुव आ चारि ठा मात्रिक मे रूमि रूमि ओ पहाग
कवयि । भवदुतिया मे ओ रेशी पलेशन भऽ जायि । एक दिन
मे रावह गाम कोना जेतह ? कोन रैलिन मँ लात जेहि
आ किनकव उगवाग सुनताह ? झुदा एकरो मयोजे कली जे
पडितजी अगन रावहो रैलिनक रियाह जाहि गाम मरै मे केनहि
मे मरैठा गाम लेनरौ नागन के दुनु कात सकरी मँ निवमली के
रीछ आ कि सकरी मँ जयनगव के रीछ एक कोस मँ कमे दुव



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

पव । ह्येव रेलीस सरे अगला ये रिटाव क कय हुनका वस्तु रैता
देवथिह जे एक रैवथ ये ओ टारि ठाम जाथि । भवदूतिया सँ
एक दिन पहिल एक गोठे ओतए पहुँचि जाथि आ ओतए अगिला
दिन एकदम सकान लात नऽ कय दोसर गाम पहुँचि जाथि ।
ओतए लात नऽ कय ह्येव रैवथरैजिया गाडी पकडि राकी दु
रैहिन के गाम जा कय लात जेथि । एरम् थकाले ५ दिन
अछिटे ओ सरे ठाम पाव पुनि जेतार । एहि थकाले ५ हब
टाविम रैवथ ये सरे रैहिन के ५ भाग के ५ लातरौक सऽथ
पुव होगत बहतहि । एहि ये भुजालाथ के ५ एकठी नया ३
भेनहि जे भाव दोव के समष्टि खतम भऽ जेनहि । टारि
टावि ठामक भाव तँ एक सँगे नऽ जगतथि नहि । ह्मन पिय
घाँटी ३ भेनहि जे भवि दिन एक गाम सँ दोसर गाम दोडैत
बहना सँ कती गछा भवि तिनकोव नहि था परैत डनार ।
अबु, उँटित समय पव भुजालाथ के रियाहो भेनहि । अरैड
डनार आ कि संकृत नहि पठनहि ते सँ की ? मिथिला ये ल
कोला रव ह्मन बहलोकए आ ल कोला कया ह्मनवि
बहलोकए । वृत्ति बाँव कनियाँ आ आहव रेलीव आ कि ठरनेन
रैकनेन रव, सरैक रियाह भेरे केले, घटक ठा होशियाव
बहन टाली । तथन भुजालाथ तँ पडित संकाव नाथ मित्रिक पुत्र
डनथिह । घटक दरिद्र नारायण टोषवी एहि काज ये सहायक
भेनथिह । कोमिकनला कातक एकठी मनोमातक वृत्ति किहु
सुन्दरी कया सुर्गीय पडित संकाव नाथ मित्रिक पुत्रोह रैमिक
मालीपुत्र एनीह । ओ ह्येव घुमि कय लेहव तँ नहि गेलीह, मागए
मान दु मान पव खोज खरवि जेरा जेन आरि जागत
डनथिह ।

समय पारि भुजालाथ के ५ पहिले प्रयास ये पुत्र भेनहि ।
हुनका पिता जकाँ तपस्या नहि कय पडनहि । ह्मन एहि समय
एकठी दोसले रिटि घटना भेलोक । सोरी सँ रैवथगत एकठी
अगनछेठे डौडी राजि उँठन जे उँह ह्मनरी भेलोक । ३ मात्र



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

ओहि रौटाक रिंग निर्याक सुटक शेट, डलैक। दूदा से ओहि रौटा
के नामकवणे भ२ गेलैक आ. ओ दूसवीए भ२ कए बहि गेल।
नाम किछु रिचित तँ जकब डलैक दूदा मिथिलाक गौरवमा
गतिहास से कतेको दूसवी भ२ गेल छथि से तँ अछि सर
जमिने छिड़क। आ नामो सर एक सँ एक रिचित जेना कि
खुदी, हुदी, तिलकौडी, गळु सळु आदि। तेँ एहि रौत पब
कोला रेशी धाग बहि देन गेलैक। ओना स्रग्ना से पडित
संसार नाथ छि अण पौत्रक एहि नामकवा पब की मोचल
लेताह से हमवा सर कहियो रूमि बहि सकर।
दूसवीक माए बुद्धि जकब डलथिह दूदा डलथिह होशियार।
हूका अण रौटा केँ पढे रौ पब रेशी धाग डलथि। दूसवी
युन जध नगनाह। संयुत रिद्यानय बहि, गामक सबकावी
प्राथमिक रिद्यानय। बजिष्ठर से नाम लिखाएन दूसवी नाथ
छि। आ तकर रौद हूकब नाम लिखाएन गेल मालिखर सँ
कवीर डेट कोस दूर सबगतिआ ट२व के पुरबिया सीमा पब
हित गाम कनकठेनी के माता यमोद हांग युन जे हमवा
सरहक नरका एम एम ए यादर जी किछु रर्य पहिल स्थापित
कएल डलथ। दूसवी गामहि सँ युन जागत अरैत डलथ।
दूसवी पठरी से कोला रेशी कृमिगर्द्धि बहि डलथ। नागन
नागन कल्ला दशरी पास केनथि। आगु पठरीक ल गछा बरथि
आ ल सधन। रोजीक तक से गामेक किछु लोकक संग ओ
पहिल कनकठा एनाह आ ओत सँ एकठा ठीकेदावक संग कोवरी
टन गेनाह जतए रौडका रौडका थकान पारव सृमेल रमि बहन
डलैक। एतए ओ ठीकेदावक दूदा के अमिष्ट भ२ गेनाह आ
नाम भ२ गेलथि श्री एम एम मिसवा जी। नाम छोट करैक अ
अंगरेजिया तबीका मेनो कमान के डैक।
हमव एम एम मिसवा के ठीकेदाव मकान आदि ररैत डलथ।
मिसवाजीक काज तेनथि मजदूर सर के पाडु बरै। मजदूर
सर ठीक सँ काज कए, सुति रैमि बहि बरए आ किछु सामान



বিদেহ ১১১ ম অংক ০১ অগস্ত ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৬ অংক ১১১)

মাননীয় সম্পাদক **ISSN 2229-547X VIDEHA**

চোঁবা বহি নিশ্চয় তকলে দেখভান কবর ভেত কাজ হুগক ।
দুস্রী অগল ত ঠেঠে মে আবাদ কবখি আ এম এম মিসবা কে
বৌদ রঁমাত পানি রিহাখি মে মজদুবক মগে বহএ গডহি ।
গাম মে খরঁরি গোলক জে ভুজাখাথক রেঁঠা কে নীক লোকবী
ভেঁঠে গোলহি । ঘঠক দবিদ্র নাবাখা চৌধবী বুদ্ধ । ভেঁনা পব
মফিয় ভুনাহে । ও আরি ভুজাখাথ কে মলোঁনহি আ কিভ
মাধাবণ ঠোঁকাক জোত দং কএ হুগক রেঁঠাক রিহাথ ঠীক কবা
দেবখিহ ।

মগম পব দুসবী অর্থাত্ এম এম মিসবাক রিহাথ ভেতহি আ
জোব পিতামহক তপশ্যাক ফলে পুত্রবলে কে প্রাপ্তি মেহো ।
নাম রাখন গোল দিলীপ ফুগাব । নর পবম্ববাক অম্বসাব
পারিবারিক নাম 'মিশ্র' হুঠা দেব গোল ।

× × × × × × ×

আর আউ অমলী থিম্মা পব জে পণ্ডিত মফাব নাথ মিশ্রিক
প্রপৌত্র এহি আধুনিক কম্পাউব যুগ মে পণ্ডিত কোলা ভং
গোনাহ ।

এম এম মিসবা জখল কোবরী মে বৌদ রঁমাত পানি রিহাখি মে
মজদুব মরঁহক ওগবরঁলী কবিত বহখি তখল হুগকা ডেবাক রঁগন
মে হবনাখী নগহক কোলা গাম কে একটা গাঁড়জৌ বহেত
ভুগখিহ জে ওভএ পণ্ডিতাঙ কবিত ভুনাহ । গাঁড়জৌ কচা
পঠন নিখন কিন্তু রারহাখিক জোক । অগল পণ্ডিতাঙ মে মফুত
কম হিন্দীএ মঁ রেঁশী কাজ চনরঁেত ভুনাহ । হম্মাল চানীমা পঠি
কএ ও মলদেবক পুজা মেহো কং দৈত ভুগখিহ আ কতক ঠাম
কচাদান মেহো । দুদা তৈযো খুরঁ রাস্ত বহেত ভুনাহ আ নীক
ঠোঁকা কচা জৌত ভুনাহ । এম এম মিসবা জী দমরী গাম আ
ঠীকেদাবক দুস্রী কে অমিস্টে মাত্র পাঁচ হজাব কমাগত ভুনাহ
আ গাঁড়জৌ স্বখাবো মন্ত মে গচঁস তঁম হজাব ওঁঠা জৌত
ভুনাহ । ভাদর, কাতিক, মাঘ, রঁেমাত আদি মাস মে তঁ পচামো



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्व

हज्जाव पाव क२ लेत डुनाह । ठाका तँ जे से, माण सन्नाण
सेहो खुरै रैशी । यज्जमाण सरै अण अण रिउत अणुमाव बिद्या
रा गाडी पठा हुनका रैजुरैत डुनथिह । ते ० रौद रैसातक
संसर्त हुनका कहियो नहि गलेहि ।

पाँड्रेज्जी कमाङ्ग आ माण सन्नाण सँ एम एम मिमवा जी रैहूत
प्रभावित डेनाह । एक दिन पाँड्रेज्जी हुनका नग अण रिटाव
राउ केनथिह “ देखियो मिमवा जी, आग कानि सरहक रैषी
रैषी कम्पुष्टव गज्जनीयव भ२ बहलोकए । सरै रैगलारे मे
लोकवी कवए छहित अछि आ कि अमेविके जाए छहित अछि ।
रूदा पंडितक संथा कतेक कम भ२ गेलैक अछि । एतेक ठा
कोबरौ मे हम सरै मात्र दमे जोष्टे जी आ हवदम एक यज्जमाण
सँ दोसव के ओहि ठाम दौडेत बहेत जी । पंडित सरै कम्पुष्टव
गज्जनीयव सँ कोन कम कमागत छथि यदि अणल ठीक सँ
जोवियोक । सुले जी अहाँक पितामह नामी पंडित डुनाह से
अछूक परिवार सँ अ पवसवा उठि गेल । हमरा तँ नलीत अछि
अणिना पुस्त मे पंडित जाति रिगु भ२ जाएत । ”

एम एम मिमवा जीक पुत्र दिगीप रूमाव गामहि मे सबकावी
प्राथमिक रिद्यालय मे पठेत डुनथिह आ अणिना मान हुनकव
रिटाव डुनहि माता यमोदा हाग फुन मे भती कनेरौक । एही
समय पाँड्रेज्जी सँ प्रभावित भए ओ एकठे फांतिकावी निर्णय
लेनहि जे रैषी के ० महाया सस्कृत रिद्यालय मे पढीताह
आ अण पितामहक सुमने के ० पुनः स्थापित कवताह ।
दिगीप रूमाव महाया सस्कृत रिद्यालय मे भती भ२ गेनाह आ
नगनाह नयु सिछाबु लौदुदी आ अमर कोय बठेए । रूदा हुनक
प्रपितामहक हाग सँ एहि हाग तक रैहूत परिवर्तन भ२ गेल
डुलैक जाहि मे सस्कृत रिद्यालय आ मदरसा आदि मे सबकाव
नरका पाठशाला नागु कवा देल डुलैक । नरका पाठशालाक
अणुमाव रिद्यार्थी के ० आला रिद्य जेना गति, गतिहास आ



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

रिक्तान् आदि सेहो पठ्य पठित छनहि । उचिते, संस्कृतक
प्राथमिकता कल कम भऽ गेल छलैक ।

मध्यामा पास केनाक रौद दिनीप कमाव आरि गेनाह कोवरी आ
पाँडेजीक संरक्षण से नगनाह पडिताग के रारहाविक त्ना
प्राप्तु कवरी से । अथरा कहु अपवेष्टिम भऽ कए प्रशिक्षण
जेरैए नगनाह ।

पाँडेजी दिनीप कमाव के पठरी निथरीक त्नाक पवीक्षा किछु
झणक गपसग से नऽ जेतथिन्ह । तकर रौद ओ एक प्रकावक
क्रमे कोर्म के पाठ्य रेलौनहि जाहि से सल्लावाया पुजा आ
दुर्गा शेषुमेती पाठ मुन संस्कृत से छलैक । आ सरै देरी
देवताक प्रार्थना सेहो संस्कृते से । राकी हनुमान टानीमा आ
वागचवित मागस के रिभिन्न उद्भव छलैक । एकव अतिविड
किछु छिटछुट रेटपाठ सेहो । आ सरै दिनीप के " कर्ण
कवरीक छनहि ।

एहि कितरी त्ना के अतिविड रारहाविक त्नाक जेन पाँडेजी
दिनीप के " अगना सगे किछ किछ ठाम आयोजन सरै से नऽ
जाए नगनथिन्ह । ओतए दिनीप हुनकर अमिष्ट जकाँ काज
कवथि, जेना यजमान सँ रिभिन्न रहुक ओरिआओन कवथैर,
पुजाक सामग्री सजथैर, आदि । पाँडेजीक अन्तर छनहि जे
जतेक रिस्तुत कणे " सामग्री सजाओन जाए, यजमान रक्षा पव
ओतरे रेशी प्रभार पठित छैक । रिशामक नुडि सीथर सँ
सीथर सँ रेशी महर्पूर्ण । एकव अतिविड दिनीप पुजाक समय
पाँडेजीक प्रहक भार उगिमाक मुष्मा अध्यास कवथि ।

सल्लावाया पुजा से कथाक समय भाया टीका द्वावा हिन्दी से
लोक के " ओकव महत्त्व बुझाएर पाँडेजीक रिशेषता छनहि ।
समय जकर रेशी नलीत छलैक द्वाद एहि सँ पाँडेजीक
पांडित्य बाथ रेटैत छनहि । ओ दिनीप के " गरै सँ स्वरथिन्ह
“गाम पव पुजा होगत छैक तँ कथाक समय यजमान आ आला



मानवीय

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

लोक सँ रैमन रैमन गुंघाए नलौत छथि, मात्र पुवहित जौ
अगल कथा रैटैत बहेत छथि । हमरा कथा रैटैत कान अहाँ
देखियोक, लोक आनन्द सँ मुलैत बहेत अछि । रीट रीट मे
हमरा संगे मल्लाबागण भगराण के जयजयकाव सेहो करैत
बहेत अछि । काका सपथ छैक । संकृत मे कथा बेला सँ
ककरो किछु बुझैत मे तँ अरैत नहि छैक । पुवहितजीक
सम्व पाठ ओहल होगत छहि जेना रैटा के “ सुतरै कानक
लोबी पीत । कथा एहेन भाषा मे कहियोक जे लोक बुझैत ।
रैम, अगलहि सँ अहाँक संगे एकाकाव भऽ जाएत । ”
दिनीग एक दिन मन्द विरोधक स्वर मे कहनथिह जे संकृत तँ
देरराणी छैक । ते पव पाँडेजी हुनका रैड नीक जकाँ
बुझैतथि “ देखियोक, संकृत देरराणी तखन छलैक जखन सँ
लोक संकृते रैजैत छन । देरताक कोला राणी नहि छहि ।
हमले अहाँक राणी सँ देरता रैजैत छथि । राणीक बागमण छैक
संकृत मे आ तुलसीदास बागमण लिखनहि हमरा अहाँक भाषा
मे । लोक ककवा रेशी पठैत छैक ? एखन अहाँ भगराणक
आवती गरैत छी कि नक्कीजीक आवती कि आन कोला
देरताक आवती । सरैछा तँ हिन्दी मे छैक आ कतेक आनन्द
अरैत छैक लोक के “ आवती गरैत । एकले संकृत मे रैना
दियोक, कस्य लोक रैटत अहाँ के “ संग दै रैना । ”
दिनीग बुझि गेलाह असली गप्प । एरम् एकाले “ ओ छैल
होरैए नगलाह । छोटछोटी आयोजन सँ मे यजमानक हैमियत
देखि पाँडेजी दिनीग के “ एकसले पठैरैए नगनथिह । हुनका
अतीर खुसी छनहि जे ब्रह्मथान पठित प्रजाति मे एकठा सदस्य
जोड़ । बहन अछि ।
एक दिन पाँडेजी एम एम मिसवा जी सँ दिनीग कमावक त्रिया
के नेन रिटाव रिमर्श केनहि । हुनकव रिटाव छनहि जे दिनीग
कोबरी छोट कोला नर जगह छन जायि । एतए ओ पठिताग



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मिथनहि अछि । रौबीक पट्टा तीत होगतै छैक । अगला
गनाका मे कोना रिद्वान के " यमि नहि भेटैत छहि । ते "
रिद्वान के " रिदेमे मे अगल रिद्वानक प्रभाव कवरौक छानि ।
तहिना पडित के " अगवितित जगह मे यजमानिक प्रभाव
कवरौक छानि । शुबरीक के " अगवितित लोकक रीट जा कए
बाज करैक छानि । राहबक लोक के ग्रा अगवितित थान जल्दी
नहि नष्टैत छैक । ते " ३ सर दीर्घा होगत छैक जेना
अगला देमे मे अगवितित बाज ।

कवीर दु मान तक रारहाविक जग प्रानु केनाक रौद पडित
दिलीप कमार पट्टि गेनाह मिनरौमा जे एकठा नरका गुनागिक
केन्द्र भऽ बहन छलैक । ओतए किछु दिन स्थानीय हनुमान मन्दिर
पव एकसरे दिन वाति हनुमान छानिमा, किछु बागाविक उछवण
आ रिभिन्न देरी देरताक प्रार्थना संकृत मे सम्वत पाठ करैत
बहनाक रौद गेलै: गेलै: यजमान सर भेटैत नगनहि । एतए
ओ नरका पडितजी नाम सँ रिखात भऽ गेनाह ।

× × × × × × ×

हम सर मिनरौमा आएन छी जतए हमर जमाए एकठा छैकट्टी मे
गजनिगब छथि । ओ एकठा नरका छैठ जेनहि अछि तकले
गृहप्रवेशक पूजा छैक । एही आयोजन मे नरका पडितजी
रौदगेल गेल छथि । हमर छैठ कहनहि जे नरका पडित छथि
हमले ग्रामीण दिलीप कमार, सुगीय पडित संकाव नाथ मिश्रक
प्रानु । ओना द्रष्टा मे हमर दीर्घ प्रवास मे गामक ३ एकठा
परिवर्तन हमरा सुमन नहि भेल छल ।

हम पुन आयोजन मे हनुका सँ नजबि रौद कए हनुकब
रारहाविक अध्ययन कऽ बहन छी । हनुका गेलो नहि सुमन छहि
जे हम हनुकब ग्रामीण छैहि । ओ अगल काज एकठा नीक
प्रारम्भन जकाँ सम्पादित करैत छथि जाहि मे संकृत कम
हिन्दीए रैशी बहैत छैक । एकठा आयोजित रूठ रात्रि हनुका
छैलैत छथि " पडितजी, हिन्दी मे जे अर्थ सुमेनियेक मे



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

तँ नीक लागल हूदा संस्कृत मे पुजा पाठक रमेश्वरता किछु भिन्न
छैक । हमरा बुझल तँ संस्कृत रेणी बहिलेक तँ नीक । ”

पंडितजी रैड्डे संगत भारे “ हुनका कष्टनथिन्ह “ एतए प्रायः
माथि सतवि लोक जी । रैताँ कते गोठे संस्कृत बुझैत जी
? ” सरें छप । पंडितजी आगु रैजनाह “ देखु देरराणी सँ
लोकराणी रेणी प्रहृथ होगत छैक । गएह रौत तँ करि
रिद्यापति कहि गेलाह । जे बुझियैक सएह राणी । नहि तँ हम
संस्कृत मे पुजा कवी आ कि तमिन मे, दुनु एकर । ” सरका
पंडितजी अपन पांडित्यक प्रभाव रैना जेनहि ।

हमरा ए देखि खुसी होगत अछि जे अपन प्रतिभाहक
पंडिताग के किछु अमि जकर दिगीप हमार जी रैछा बहन
छथि । ओना हमरा ए नहि बुझल अछि जे देरराणीक ए
परिवर्तित कप स्रज मे रिवाजमाण पंडित संकाव साथ मित्र के
“ केहन लागल हेतहि ।

२



नरेंद्र कुमार झा

रिजनीक क्षेत्र मे आमे निर्भवताक जेन सबका क२ बहन
प्रवास



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

रिजनीक संकलन मेनि बहन रिहाव के अगिला पाँच रय मे आमे
निर्भव रैलैरौक नस्त्र बाखन गेल अछि । एहि रातु सबकाव
पुवाण रिजनी घबक मबनाति संगहि नर रिजनी घब रैलैरौक दिस
डेग उठौनक अछि । डुर्जा मंत्री रिजेन्द्र प्रसाद यादव जगत
देवनि जे प्रदेमे मे एखन रिजनीक सौघ कमी अछि । सबकाव
एहि दिस डेग उठा बहन अछि । पुवाण रिजनी घबक मबनाति
आ नर रिजनी घब मेहो रैनाउन जा बहन अछि । एकव अनारा
रिजनीक खरीदक जेन निजी कम्पनी सभ स पौघ अरधिक
मगसोता कयन गेल अछि । उन्नीद अछि जे अगिला तीन रय
मे प्रदेमे के मांगक अक्षकप रिजनी भेटैत नागत । सबकावक
प्रयास अछि जे अगिला पाँच रय मे मांग स रैनी रिजनी
उपोदन कयन जाय । गुना प्रदेमे मे गोठैक 3500 मेगारठ
रिजनीक आरथकता अछि । केन्द्रीय पुन स रिहाव के गोठैक
1300 मेगारठ रिजनी भेटै बहन अछि । श्री यादव जलोननि
जे रतमाण हिति स निगठरौक जेन पुन रैजाव स रिजनीक
खरीद कयन जा बहन अछि । सबकाव प्रदेमे मे तीन्ती नर
रिजनी घब रैनाउन जा बहन अछि । गुवगाराद नरीणग मे
एनपीसीक संग 2000 मेगारठक रिजनी घब रैनाउन जा बहन
अछि जे 2015 धरि टाबु भऽ जायत । एहि ठाम स 75
प्रतिशत रिजनी रिहाव के भेटैत । रैनीनी आ कष्टी हित
रिजनी घटक म्मता रैद ाउन जा बहन अछि । कष्टी मे 195
मेगारठक आ रैनीनी मे 200 मेगारठक दु-दुष्टी अकाङ्ग
स्थापित कयन जा बहन अछि ।

प्रदेमे के रिजनी संकलन स झुझि देवैरौक जेन
सबकाव पुवाण रिजनी घब सभक मबनाति मेहो कवा बहन
अछि । एहि दिस तेजरी स काज भलि बहन अछि । उन्नीद अछि
जे अगिला रयक अत धरि कष्टी आ रैनीनी रिजनी घबक
मबनातिक काज पुवा भऽ जायत । एहि स प्रदेमे के गोठैक



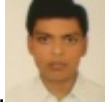
१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

गद्यविधि

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

400 मेगारष्ट रिजनी भेष्टत ओतहि सबकाव आरं खूनन रंजाव
मं सेहो रिजनीक खवीद कयन जा बहन अछि । मंरी जलतरं
देवनि जे सबकाव एण्ठीगीसी आ अदानी पारव मं रिजनी खवीद
बहन अछि हानाकि एहि रातु सबकाव के प्रति युष्टि 4.10 ठाका
रैनीक दाम नागि बहन अछि । पेघ अरधिक रिजनी खवीदक
समयौता सेहो कयन गेन अछि । एकव अतस्त तिलैया हित
विनासि पारवक मेगा थर्मि पारव प्राजेकठ मं रिजनी खवीदक
निर्णय जेन गेन अछि आ नातेहाव हित एम्मा पारवक निर्माणाधीन
रिजनी घब मं 1000 मेगारष्ट रिजनीक खवीद कयन जायत ।
प्रदेशिक कारोबारी रिजनीक फ्रेव मे सबकाव द्वारा कयन जा
बहन प्रयास मं खुनि डयि । हानाकि किड कारोबारी रिहाव बाजा
रिद्यूत रौडिक पोलेया फ्रमता पब प्रम टिह ठाठ कं बहन
डयि ।

ए बलापव अपन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाड ।



१. अमित मिश्र- रौन गजन: कोमल कलेजक आख



२. मिहिर सा- रौन गजन



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

१



अमित मिश्र

रौन गजन: कोमल कलेजक आख

आग समाज के भेद-भार, डूँट-नीट, जाति-पाति गमिया
क पकडल अछि । सरँ काज मे भुन-कण्ठ भ बहन अछि
झुदा ग जातिमे अनग एकठाँ ओव जाति अछि । जहिना
गाढमे अबहुन-गैदा -गुनारँ आकर्षित कलैत अछि ओहिना ग
जाति समाजक सरँ रक्षा के छुटकी मे अगल रँना लेत अछि ।
ग ओ जाति अछि जे सँ जँ लोकक रने छनत त कहियो
रौन ले छेत । ग जाति अछि "रौन जाति" । एहि
दुनियाँ हवाक रौन-मोमक एकठाँ अनगो दुनियाँ अछि । एत
ए सी रँना काव त ले झुदा घुबफला अछि, एत पखा -
पकराणसँ रँनी झादिछ, तिनकोव पातक पुवी, जलबक रुझी के
तबकावी आ रौनक टिमी अछि । एहि दुनियाँ मे खेमक अँदाज
अछुँरौ अछि, खेम रँनी अछि आ सरँसँ रँनी अछि आपसी
प्रेम ।

कोला खेम कोल गिन-
झुन क खेले छथि । कथला रौन जकाँ खेले छुनारँ छथि
त कथला मासुव जीक नकन कले छथि । कथला हँसत
कसैत छथि त कथला कसन मे हँस छथि ।
हिनकव हँसनाग, कषणाग, कसनग, खेमनाग सरँ नीक नाली
छे आ गधन काव छे जे लोक एहि दुनियाँ मे रँव-रँव आर
छहि छथि । आखिब किएक ले छेता, कहन छेली ये, "रँटा



मानवीय

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भगवान् कर्ण होग छथि । "

जहिना भगवान् महिमा अप्पार छै तहिना रौन मोन के कोला
सीमासँ ले रौन जा सकै यै ।

रौन मोन के मोह, ये रौनगाँ जतरेँ आमाँ छै ओतरेँ कठीन
सेहो छै । रौनक कलेज रौन कोमाँ होग छै तैए एहन रौन
निखरौक चाली जेसँ हुनक मोन प्रसन्न होग , जे ओ मरै दिन
अपन दैनिक ज़रिअ ये करै छथि । दोसर रौन हम कह
छाहँ जे रौन-रिधा के सदिखन आशिर्वादी हेरौक चाली ।

किएक त जौ लक्षण सँ आशिर्वादी बहते त ज़रिअक मरै
राधा के हँसत-खेलैत पाव कएन जा सकै यै । रौन रिधाक
मोह, सदिखन सबन हेरौक चाली । एहन पाँति जे सबन होग
आ ज़रिअ भार समन ये आरि जाग , रौन मोन के फ़ाँ ये
प्रसन्न क दै छथि । मरै जौ बाजस ये निखन गेन होग
त लनाक ज़िअ पव एहन छतत जे रयक भेलोपव ले
उतवत ।

ए के लेन गजन उगहाउ रिधा छथि किएक त गजन मुन
कपसँ बाजस के खेला छथि । काहिया , बद्रीफ़ मरै तुकाउ
के पावन करैत छथि । हरेक दोसर पाँति एहि नियम के
पावन करैत छथि ।

करिता ये पाँतिक सँख्या निश्चित ले छथि मरै गजन ये कपसँ
कम दस ठी पाँति हेरौक चाली आ एते पाँति के ग्याद कवरै
कठीन ले छथि । एकठौ रौन ओव मोन बाधु जे रौन-गजन
ये गजनक रयक ये कोला परिवर्तन ले होग छै । रौन-
गजन ये मतन , मकता , काहिया , बद्रीफ़ आ रौन ओवाहिते
बहते जेना रयक गजन ये बहैत छथि ।

रौन मोनक मठीक आखन निखरौक लेन , आशिर्वादी अपन
लक्षण ग्याद कर , ग्याद कर जौ अहाँ की मरै करै छथियै
लक्षण ये , आ जे दृष्ट देखाग पडैए ओकर गजनक कप ये



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

शेहराज क निश्चय, ले त अगल आस-गड मक लणक आटका
देखु हुनक दैनिक क्रिया देखु, ओ की करे छथि देखु आ
ओका शेहराज रीति निश्चय । रीत मोलक कोना सीमा ले अछि
तेँ जे मोल अछि से निश्चय छदा शेहराज सबन बाथु । अगल
बचना से गान-रिगानक तडका नगारेत बद्ध आ कोमल
कलेजक आथर बढेत बद्ध ।

२



गिरिब सा

रीत गजल

कसीदा केव एक हिस्सा होएत छैक "नसीर" । "नसीर" से
करि के केन्द्रबिंदु ओकर अदम्य चाह, ओकर अगल प्रेमिका सौ
अगाध प्रेम, अगल प्रेमिका सौ रिवह आ ओहि रिवह सौ उपेक्ष
अमल रिवह पीडा । एहि "नसीर" से जग भेल गजल के ।
गजल श्रुतकाल से आ रीत दिन धरि एहि रियससु (सृगाव,
प्रेम, रिवह आदि) पर आधारित छल । भौतिक कण से छोट
बहरीक काव्य आ मनुष्यक सँ सौ आकर्षक रियस रसु बहरीक
काव्य गजल सँ से लोकप्रिय भ गेल आ धीरे धीरे कसीदा
मृतप्राय भ गेल ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

गज्जन जखन रिकसित भेल, मृगाव, थैम आ बिबल के अनारा
अपना मे नर नर आयाम जेडित छल छेल । सामाजिक, भक्ति,
वाङ्मयिक, रांग्य एकव अंग रेलित छल छेल । एतरेति ल, अ
ह वसि, अबरी, उर्दु होगत अंग्रेजी आ आन पश्चिमी भाषाक
मंग हिन्दी, मराठी, गुजराती आ मैथिली मे अपन आयाम के
अच्छा बखल अपन कप परिवर्तित करैत छल छेल । गज्जन के
प्रभाव एतेक तीव्र बल जे भाषा कोला होडक, लोकक
कलेज मे अ सीधा स्थान रैना जनक ।

मैथिली गज्जन मे किछ मास पुरि गज्जनकाव लोकनि एक ठा नर
प्रयोग शुक केनहि - "रौन गज्जन" । हमरा ज्ञातरा मे एखन
धवी कोला भाषा मे रौन रियस रज्जु पब गज्जन नहि निखल
छेल अछि । शायद अ प्रयोग मात्र मैथिली गज्जन मे पहिल
रौन शुक भेल आ बिदेह पब रौन बस रौन गज्जन निखल आ
मवाहन छेल । अ रौन गज्जन सर सबन रासिक रौन आ अबरी
रौन दू मे समाज मात्रा मे निखल छेल । किछ रौन गज्जन
रौन लोकनि के एतेक प्रिय नगनहि जे ओ सर अपन धू मे
ओ गज्जन के घब पब गुणगुनारैय नगनहि ।

गज्जन के कोला भाषा मे प्रवेश कय अपन स्थान रैलगा अरि
रौन महर्गुणी घटना नहि बहि छेल । लेकिन गज्जन रिधा मे
नया आयाम देना अखन महर्गुणी घटना डेक आ मैथिली ओव
रिशेष कय बिदेह जेल अ समाज के रज्जु डेक जे अ गज्जन
मे अ नर आयाम अनक । सर रौन गज्जनकाव के हार्दिक



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मासिक *संस्कृत* ISSN 2229-547X **VIDEHA**

अभिर्दक्ष औ धनराद बिदेह के जे रौन गज्ज रीशेयक
निकाजनिधि ।

ई बचनार अणन मंतर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



श्री बाज

यात्री क करितामे गाय

स्वाभावतः सार्वभौमिकता तकक निवृत्त करिता-यात्री केनिहार,
लेखन औ देखनमे अति साधका नगनिहार अति निश्चित,
असाधारण औ अतिरिक्त करिक नाम-ए यात्री । श्रेष्ठतम
बचनारके ले श्रेष्ठ नरमानरतारदी हगक उल्लासक, उल्लाता औ
शिलाका प्रकय । यात्रीक करिता गन्तविक शील लेन करै जे
देखरौमे तँ सभसँ अग्रगण्योगी नकडी शिष्टाक समुत्तम नलै मगव
उपयोगितामे एके ठाम विरिष काठक गुण औ वैशिष्ट्य उगल्ल
कवा दैए । कोणा अतिरिक्त मानस मरिदलक रिना । हुनकव
करिता सभक लेन लेन करै । जत औ जतरौ जकव
ग्राहता आकि अतिकटि । जे तीमामे अणन स्याद गुण छै,



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

बिदेह **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मानवीय

७ गेमे रैमी गव-गमनाक कोष थाहिम । जे रासुनिक कपमे
रिना अतिवजनक 'सल' डै ७ अनावोपित 'सुन्दर' हेरै
कवते । उवाँ आ अश्वत्थक काशीमे लोक अम्मी रैबिस मोमे
रितागयो लेत तैयो कि दूनुमे सँ किछ रिना प्रयासक पोडरै
भेँ सकते । तै रूतुते भौतिक प्राप्तिक लक्ष्यमे तँ छेँ
लोकैत बहि जाग-ए । रैतज राँरा यात्रीयेक 'दान' रूमि
देहमे किदल लेपेत बहि जाग' आकि कथीदल गव फुल-घी
टढ़ १-७मि पुन्य नातक दूवाँ आ ज़मक गवसादी लेल घुमि-
हिबि अरैए । यात्री राँरा अगल कथारै कोला सँ १८मे गठि
क२ पाठकक आगु ले बाधि मोम-मोम रिना कोला वग-छीप
क उपस्थित क२ दै छथि, तै पाठक हकक करिनाक कथामँ
मोमे जूँ छै जाग छथि । आनकारिकता आकि कपनाशीलतामे
रौबिया पाठक राम-रूट ले जा सकैए । यात्री अगल करितासँ
सम्पूर्ण कपसँ मिथिलादेसक किसान आ गमैया मजदूर आ अथातः
उली नजैव सँ पूरा भारतीय समाज केँ ओकव प्रगतिता आ
दूरनता संग देखैत उजागर करै छथि । तै हक करितामे
रचित सामग्री मोमे समाजसँ ७२२ लेन बहै आ हमरे रात
कहै । अगल परिवर्तन आ अगल संरचना द्वारा यथार्थकै
छेहियेराक एगो चेष्टा यात्री कि करितामे सभतेब भेँछैए ।
जिन्गीक यथार्थ सँ सरोकार बखनिहार एगो थँ छी बचनकार
यात्री अन्तिक सुनवते केँ ले चित्रित करै अर्पित ७ जिन्गीक
हकपतारै सेहो अँ छैए । ओजह ७ डै जे जिन्गीमे सभ
किछ सुनवत-सुनवत ले डै । ७७ जय सुनवतक पीठ-पाहु
कठरै, टँ छिन आ पोखारियोक अतिह डै । यदि एक दिन
गामक अगाव आ असीमित सुनवता डै तँ दोसर दिन गाममे
रैसनिहार लोक छेना-परोसक उधेन- पुधेन, उजवन-अष्टन
जिन्गीक दर्दनाक हकपता सेहो । एतेक थाकन-हावन आ
थकन जिन्गी कि सुखक सभ रात गामक बहवहँ । लोकक लेन
कग कथे रूमागत बहै डै । जेव अष्टी-दू अष्टी भात आकि



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुसिंह कर्कत ISSN 2229-547X VIDEHA

किछु छुक्का-साबूत मोहारी आ दाहि कि तीमक मोव जूनि
गोनागव ओ दिगीक दवरौव आकि बैगमहनक सुध किऐ जेत ?
यएह तँ अछि ए जिनगीक असमिति बिलोवताम । याली अगन
करिताकेँ त्रापी परिवेशे आ अगन सँरेदना द्वारा यथार्थ केँ
देखैक प्रयास निवतव कलै छथि । सतसँ थाम रौत तँ
यात्रा नीक करिता मे ३ ए जे ओ करिकर्म केँ प्रतिश्रामुक ले,
अगन रिगिष्ठ सँरेदनीनताक दाहिनु पुरिक रारहाव कवर मालेत
बहन छथि । याली जेहन कारा हागक निर्माण केननि, ओकर
तकमे ले जा रौनी बचनकाव ओकर आनुतिकेँ स्वीकार आकि
थाविज कलैत बहनाह । ए हाँक बचनकाव नग गामक अति
झकबी दूदा उपेक्षित थीतिक थरौव तँ बँह छनि रँनु गोरौव
केँ गणेश आकि पाथव केँ भगवान रँलरौक दूदा आ देखाये ।
यात्रीक करितामे पाथव रँनि गेन लोकक सुधि आ संधान
तेथैए । गाम घूक (तुसपुतवा) आकि ठठरीक 'होथै' जेकेँ ।
हूकव करिता मे ले अलैए । जेत२ यथार्थ हाग-मए रँनि
जेरौक ओजह सँ रिक्तागनी मँडीमे थोक कपसँ उतलैए झकव,
रँनु ओगमे ले तँ गामक आस झनक थीते उजागव भ२ गरैए,
आल थाम लोकक चरित्रा उघावन-उपेसन जा सकैए । जहिना
रतिमान समयमे रैखिकता सुनरौमे तँ रसुप-र हर्षुयकम् अथवा
मार्क्सक दुनिया भविक मजदूरक एकताक आह्वान सन उदात्त बुनि
पडैए रँनु फिला आ असेव मे एकव रिगवीत एक छत्रा
सायोज्यवादिक सूत्र सौन्दर्यवादी सुफुमार करिक गाम सँ हवाक
यात्रीक गाम तथल ए जे मुन कप सँ किमान आ थेत-
मजदूरक पक्षधरता हिनक करिताक गामक प्रतिबद्धता ए,
कोला फैशन ले । आ अली ओजह सँ अगन जिनगीक सतसँ
कम, जर्जन आ आर्वातिके कान थड अगन जनमथान तरोनी मे
रितरितो हूक करि ओकर थकतवाकर्म सँ दूड ले भ२
गरैए । देशे-विदेशे सततवि सर्वाधिक बहनिहाव ३ यात्री करि
कोला मोहरी उद्यान; पार्किमे रौतन आ कवतरी, दिन कवाउन



मानवीय

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मोसमी फूल आकि पतारैहार, फाँटन क टाक-टिकपव आगुछ लै
होगे छथि रँगु ओती गामक छव-छाँचवमे अगवागत भेटै-
कहुँदिस, माहुँ-मथान, नीटी आ आम सभ कथुक लैसजिक
सुन्दरता केँ लै रिसवि पलै छथि- कत दीर नछैह हमरा अपन
ओ तलौनी गाम। मोन पडैए नीटी आ आम। मोन पडैए
कहुँदिसी आ तान मथान। गाम सँ दूर बहराक कछेछे स्पष्ट
कग सँ राख कलैत अपन रिरमेतारै हविडाक बथै छथि यात्री
अपन करितामे। थाहै तन सँ कतौ बहथु रँगु मोन मैथिल
जातीय भावतीयता सँ हेँछ लै भऽ पलैह। लोग कोनहुँ
ठाम। किछु तेँ जाग। बही रहूतो दूर रा नगीछ। रँगुगण
रैक दूरदुवारथु कित्त। जगनि बाथरै भार अँह जगनीक। एकवा
आव हविडारैत एक ठाम ओ कहे छथि- कित्तु की हम रिसव
पाएरै। तलौनी सन गाम? गडहरा सन आम? दीदिक
गनावक पाणि। अपन पोथरिक ओ छूँ पातव जाँटि। ... धनकव
रौध कोसक कोस। हनकव अगवाग सिन्दूर तिनकित तान पव
केदिते बँहै। आगुछ कलैए करि केँ लषाक पोथ हँसी,
जेकबामे महज सुनवते लै, सँजोरनी शैष्टिक सँटावक छेमाता ओ
पलै छथि। अहन तौले जाड मानमे गाममे ओरिगाओन डुबालै
तपैत, जिनगीक सुख-दुःख मादे निरुपष्ट रैतियैत, घुबाक
मोहगव गमैया गंधक पता ओल आर्येय भार सँ कोला
यात्रा गिये सन माँछ-पानिक करि केँ भऽ सकै छै। आँचलिक
रौलीक सिन्धुवक, सिन्धुवक अर्थात् सकीर्णता सँ हेँछ अगठ रौली
कोला करि यात्रा गियेक काण जूवा सकै छै। जूता-मोजाक
छीप-छीप पव लै छैना आ रँगुगण फाँटन गोव पव कोला करि
यात्रा गियेक नजैव जा सकै छै। दू-छा रँगु जे थँ छी
गमैया ए, आम लोकक आशि-आर्क छ्वाक प्रतीक ए- दुनिया
नीनि आकि रौलि ओ छेमाक हनहान मोनिस पाकन नीनि अधिक
ठाम छेमाक गायक ए करिक करिता मे अलैत बँहै-ए।



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

रतिमान रारसगक प्रतीक धूक (तुम्हा भवन मागना रिकुका)
क माधम सँ तँ करि पूवा रारसगक चरित्र ओ थीत केँ लेगद
करि छथि । चेतना हीन जनतंत्रक मानिक जनता साक्षात् ले
तः गहलैत ये गडन बहै आ ओकर ओगवरीक प्रतिनिधि
अगलामे छैवँ भाँजिछाँ पुरैत बहै-ए । उगवका जँ सबडमे
रिचलैत बहै तँ निचनका दिन-दिन पताले धँसन जा बहन-ए ।
दुनु हँ छै अगटक शिकाव । रैसी कदम सँ तँ कम अधिक
पौष्टिकता सँ । प्रतिनिधिक मगज आ कलेज ये तुम्हा भवन
बूझा गछै-ए जे गव खरुव, स्वदेशीक आउवकक खान छठन
ए । अकानक ओजह सँ स्वतंत्र गामक अस्सी प्रतिनिधित लोकक
त्रासदीक केहन मजरी छि यात्रा क करिताये मंतर भेन ए-
रिना गजावक मन्त्राएन छलि, कामलि जँ त-चकरी, अन्नदाताक
संग समाज जिनगी रँसव ते त- रँवतैत आश्रिता कनली गिरिया,
मातव-जीतव अहवा प्राणु केमिहाव गिवगिछै, मुसआ कौरा सतक
उदासी, हतासी आ हेलव आशिक जकलैत पुति सँ छैकछैकएन
ओकर सतक छेछाँ आ छुन केँ भना कोन खेछी करि एते
कामे एते रिवाछैतक संग प्रस्तुत कवरौक सामयथ बाथि
सकैए ।

भाथा केँ हम अतिरात्रिक माधम छी मालैत बहन जी तेँ यात्रा क
आ नागा जनमे अतव कवरौमे अमोकरजक अन्नतर कलैत जी ।
मुन रत्तु तँ छिँ कथा । जोन कः दियो तँ नानमोहन, नाम
तँ ग्वारैजाऊन । हनराग तँ एकैगो- यात्रा कहियो कि
नागार्जुन । गवीर-ग्वरी, किमान आ मजुवक आशेय समाड ।
कतौ गँ रैद्यनाथ मित्रि ले कनगगावक कप ये । मन्त्र तँ
रात्रुनिक कगमे अगरे मन्त्रेछाँ बहै छै । दोथी तँ भेन करि
छै कोला रारस माल सँदान उत । जँ ततक काज छिँ
पिसनाग । अथिगामरौक तँ एतरे छै कि ओगमे अवन की जा
बहन छै- कोदो-मकरा आकि चाँव-गहम । मन्त्रः रारसाले



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

थेजोडिया ह्नुदामे ब्रह्मरा देखेराये राँरा गाला १-नागार्जुन
हिन्दूक माधमसँ भार बरकत केनिहार किमान करि बिजोचन आ
केदावनाथ अग्रराजो सँ सहज आ पछु देखनामे अछै छथि ।

जनसंजन ठीसला पब करि गामेक अ थिख प्रयोग कलैत
देखन जाग छथि । ओग लोक बरक अगाव तीड़ामे लोक-मन
अर्थात् निम्नर्गीय ग्रामीणे परिशेषिक दुवगमनियँ । कमियँ १-रैवे
पब करिक अ थि जागए । पारंपरिक बढन-ठीगन रोकस पब
ओठनि घोष-मवद काठल नरकनियँ । आ ओकव बढिया जेन
रैहल लोकनियँ टानीक ठेकलीक हब पहिबल, माडुव माडु मन
काठी आ सिमवतागरानी आथिसँ गामेक अलगठ सुन्नवताक पावथी
कोला करिक अ थिछा देखि सकैए । तेज सरावीक रिवड । आ
घटाछेपक अछिओत तदराविक तीजन घोषा मन (मुष्का गमे
उपमा) मद समलैत थ्रामे पब करिक अ थि जाग छथि ।
गामक हलक मोर्चा पब गाला १क करि सार्कस ठाठ भेटैए ।
माष्टिक सभ संपदन हुनकब करितामे निरादित होगए । तकोलीन
सामाजिक, आर्थिक, बाजलैतिक सभ प्रकारक रिदुपताक थरैव
गाली लैत चलैत छथि, सगे गामक सम्पूर्ण जिनगीकेँ कपायित
सेहो कलै छथि । गामक लोकक सभ आशि-आकक्षा, दुःख
दलेग, हँसी-खुशी, सौन्दर्य-रुक्कता, जय-पवाजय, उथोष-गतन,
कमजोबी-गजगुती, समष्टि समभार सँ हुनकब करिता-गाला मे
सबीक बँध । करिकर्म हुनकब धर्म छथि, जिनगीक धर्म छथि ।
कतो जौन, सौथ आकि प्रदर्शनकायिता ले ।

यएह ओजह अ जे प्रगतिशीलताक प्रदर्शन मे ओ अपन मैथिल
समाजक ;स्थानीयताक सभसँ अन्त आ अगविहार्य समष्टि ऐराहिक
दुर्गम सभसँ सेहो अह ले मोडै छथि । यत्-यत् पिछ, तत्
ब्रह्मसु, स्थानीयता सँ सारिबैधिकता हुनक आदर्म रूमा पडैए ।
सबजमीन सँ कष्ट अकासक गप्प कथलौ ले । तेँ मिथिलाचनमे



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

राष्ट्र रैमेन रियाह, रैह रियाह आदि दुर्गम सारिभौतिकताक हूक
रिमेद दृष्टिक अङ्कितो उत ले भेल ए । तकोनीन मैथिल
समाजक थाहै रैमेन रियाहक स्पर्श छिना हो आकि छविहक
उद्घाटनक संग तहियाक पेशेवर घटकक सजीर आकनन जेना
यात्रीक करि क२ सकन ए, निम्नदेह मिथिला केन्द्रित आन कोला
करि सँ सँभर ले भ२ सकन । संस्कृतिक एहन सम्यक आ निर्य
राथाक संगम अंत२ कतो भेटैर दुर्लभ ।

गामक-घब, गाँ-गामि सँ केहन सँराकत हुना ओ एकव पविट्य
तँ स्वगमताक संग जेत२ तेत२ भेटैते ए, तैयो रौनगी सकन
किहु पतियाली उदघृत कवरौक गढा केँ ले रौकि सकरौक
रिमेताक संग एत२ बाख२ छिनी जे रौन-रिधराक दुःख
दैखैले सुझाताक संग उजागर करैए “तुम्हाक आनि जेकेँ ।
नष्ट-नष्ट । जले नी मल-मल हगष्ट । फटै नी कमिवाक
पौव जेकेँ ।। टैतक पडरौ मे ठौव जेकेँ ।। काते बँ नी
जग्न सैन डतहव..... ।”

यात्री अपना केँ कतो रिश्रु ले, अगन करिउर केँ सायाह
मालेत बहन छथि । जहनि कि सभ मतक मानिहाव सावन्नत
चेतनाक सरोपिनि मिछि मालेत बहन छथि, तेनाहितियो मे
यात्री अरुमवक अश्रुकुनते केँ आन सहनता जेकेँ । सरोपिनि
माले छथि । पवस मेधरी कते रौनक जेत२ । मूर्ध बहि
गायली छवैले छथि ।कानिदास कते । रिद्यागति कते ।
छथि हेबायन महिसरौवक हेडमे । यात्रीक शिपी गामक
‘कमर्शियल सौन्दर्य केँ प्रस्तुत कवरौ मात्र अगन अतिश्रु किनौ ल
बखल ए । ओ सथार्थक एहन समतन भूमि तैयाव करैत छलै
छथि कि ओ अनायास ‘सुन्दरम्’ भ२ करितामे प्रकट भ२ जाग्न,
रुग्णक महमली जेकेँ ।। जौँ एक दिस हूक फसिनक
मजबूक दुर्लभ महमली अतिभूत करै छथि तँ दोसव दिस



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जेष्ठक तिथि आतंग के सहित प्रथि कर्म मे साधनावत रीया
राँउग केनिहार हाथ ओ झूठक दूरीक स्वता मेहो मतलौत बहन
हुनि । ग्रामीण क्षेत्र दऽ बूझैतहैत तीव्रतकितक माना हुनका ले
मिहारै हुनि । थनहा प्रथि कर्मि नऽ जन-प्रयक मानाक
जिखगी तकक शैली ओ मऽ फुटिक चेतनाक सुझा त्रान रौराक
उतऽ जतराँ ए, आनराम एहन आ एते दूरत ए । एकव संगे
नदी सतक प्रनर्याकारी तालर आ ओगसँ उपजन ओर-धुनकी,
मवकी-होती मँ मेहो दुगागत हुनि रौरा याली ।

एकव रितीधिका मँ कोन फाँट पब कोन असब पड़े छै नीम
जगत रूमन हुनि करि याली केँ । एकैगो थीत केना ककरो
पोष्टी नान करैए, ककरो उहँ छिँ उँ ककरो परगनी नगरैए आ
ककरो खेले उँसबि दैए ।

सहज सगर्द भाषामे विवर्ध शैली, अतिरंजना जे याली कि उतऽ
भेठैए ओ कोना थँ छिँ ग्रामीण संकावक करि उतऽ मतल
छै । नर निर्मित झनकी राररुगक प्रति मोह- तंगक मादे
स्पष्ट आ संधान कमगव छेँ करितो हुनगेलो मँ प्रभावक झुदा
ए महान करिक अगल विशेषता बहन-ए । याली अगल
लोकदृष्टिकेँ गमैया संकावक ओजहमँ घोषठामे रौदविक चान सन
तँ पि, अगवाद थीतिकेँ जोडि, प्रस्तुत करैत बहन हुनि जे
निश्चित कर्म ग्राम्य संकावक असबि ए । स्रदेशी त्रुँ छिँपुर्ष आ
जंगनशैली रतमान राररुगक प्रति मोहतंग केँ याली मोम-
सहज हाड तक डुरैँ रँना शुभमे राकत कवरौक सामवथ बथै
हुनि तेँ पब थोड़के दीर्घ देन जाय - चान रूमि लम किदल
लेगन देह मे । राहले ! महान करिक शैली, अतिरंजना ।
आम लोक केँ उँमेद बहे चानक नीतनताक, रँनु भेठलै रएह
निर्धिन अरशिष्ट-नर राररुगक चवित केँ केहन मर्यादित गमग
संकावक संग उँधसरोमे सहन होग हुनि- पुँड उँठाकब लाट



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

बहे हे 'पार्लिया-मेल्थी' मोव । रिथिन-रिथिन रिथिक प्रयोगक
अनिरायताक अछि तो तावतीय ग्रामा सञ्चारक केहन निरहण ।
अथावा पब दम प्रदर्शन सँ रैसी दम पछेराक प्रक्रिया रैसी
अमेनताक मानन जाग छै । ए रौत भिन्न जे ए ग्रामा सहज
चेतना कै परिवेराक उद्देश सँ गमाव आकि भेदमी रिशेष सँ
अतिरिक्त कि ए ल कथन जाडक । यात्री नर मानरताकै आप्रतिक
आधार पब छोट-पेघ आधुनिक दुर्गाष्टि हाथकै सुकर रैलराक
दलीन देनिहाव मिथाकाव सतक फष्टिक लै भऽ सकै छथि, ओजह
जे हाथ अन्ति-अन्ति सत कथमे सकस आ मुन भेन करैए
जहनि कि सुकर अग्रप्रति गाव । ओ कोला प्राणीक संचालनक
सामर्थ लै बाधि चमटा चमन गाव कऽ सकैए । साम्यक अर्थ
सुगकरि यात्री सञ्जन जेकि तावतीय दर्शनाक मुनाधार ए,
सएल्लै नगरैत बहन छथि । कोला रासरीय अर्थक आधारपब
सएकै खाबिज कवरक अग्रगाम ओल महासमा करि भना कि ए
कवत ?

एतारता जनरादी चेतना आ प्राणी सौंदर्य-रौध महास करि
यात्री कि जिगीक सहज उद्धार आ उर्जा, कलेजक ध् कध् की
आ धमकी प्रवाहित वक्त बहन ए ।

ए बचसाव अण सत ggajendra@videha.com पब
पठाव ।



रमेशचन्द्र

बिहारी कथा संसार

अदो कालसँ छल आरि बहन अछि कहँक परिगणै। कहँक
जेन समाद होग छै। अदा ओ फलिक सुनो मात्रा होग छै।
कहँक रैगवताक मुनमे यदि कथा रा कथाक हूँ। कहँक
जेन समादक रिताव हूँ ओ कोना फलकगव रिताव न२ कह२
रैनाक पूर्ण रितावक सँधेयित कव, सएह कथाक नाम पड़ैछ।
कथा एक लोकसँ दोसवा लोक धरि एक पीढ़ीसँ दोसवा पीढ़ी धरि
मौखिक कर्पे हस्तानुवित होगत बहन। से तहिया जेन
जहिया लिखँक जनतरँ रा सर्वज्ञाक अंतरा छन।

कथा लेखक प्राबल्यमे कथारै सोसाँ-सोसाँ बाधि देन जागत
छन। ओकर मुन रातरै रैद १-८८ १ अस्तु कएन जागत छन,
अदा हूँ। जेना पहिल मौखिक हन तकले प्रतिकप। अ
प्रतिकप समायुक्त फलिक सुवगव परिवर्तित होगत बहन।
कथाक जेन अंग्रेजीमे स्थायी शैल अछि। आगु एकवा गठराक
प्रक्रिया आ गठराति गठराक प्रक्रिया शुरू भेल, जे शैलीक कर्पे
सोसाँ आएन। जेव विकासक क्रमे एकवा अगिला चरणमे एकठा
उंसत सीमायें रौहन जाए लागन, ओहो कथा बहन अदा अंग्रेजी
शैल, परिवर्तन क२ नाम फलितअन शैल स्थायी।



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मैथिली सहित अन्त्या भाषामे मोठे स्थावीक मोहक अर्थ नमूना
कहि प्रोबन्ध भेल छोट-छोट कथा बचन। आ ओ नमूना
छोट आकाशकेँ सेहो नमूनाक नामे निखन आ प्रकाशित कएन
जाए लागल। आरें लोककेँ रासुतामे ३ छोट-छोट कथा
मोहल लागल। आ पाठकीय उमोह बचनकाव मलारन रैठरैत
आमेरिगोसकेँ दुना केनक। परिणाम स्वरूप ध्वन्याव निखन
लागल अतिनमूना।

नमूना अछि हिन्दी भाषामे लेन गेल मोठे स्थावीक उपावी
मोहकोयीय अमराद। तकर काव्य बहन-पहिल, एकठा नर रिवा
देखिते मैथिली बचनकाव सरेँ देखाउँमे निखन लागल छोट
आकाशक कथा। दोसर, जेना हिन्दी सहित लेखन अग्रेजी
साहित्यमे प्रभावित हेराक सकलमे उरैलि ले परैए तहिना मैथिली
साहित्य बचन, विदेह मैथिली सहित आन्दोलनमे पहिल, रैठन नग
धरि (पुर्णतः ले) हिन्दी सहित लेखनमे आछादित भेल। तेँ
मैथिली बचनकावकेँ कथना एकव मैथिली मोह, जेना हिन्दीक
‘कहानी मैथिलीमे कथा’ अछि, (हिन्दीयोमे ठाम ठाम स्थावीकेँ
‘कथा’ मोह, प्रयास देखन जागए) से ले फुलएन हेतहि। तेँ
ओ अगल अतिनमूनाकेँ निथेत बहना नमूना। जेहो मोहन
आना सल अछि जे ३ नर रिवा जहन मैथिलीमे हस्तानुवित
भेल तखन मनातनीमे अतिनमूना आकाव-मात्राक कथा भेल।
एकव रिक्तित कग तेँ रीमम सदीक अग्रिम दशकमे देखाए
लागल। जहन कि तकनीकी शिक्षा वा व्यावसायिक शिक्षामे नगीट
एरें वैश्विक परिवर्तनमे प्रभावित नरका लोकक नर मोट
रिक्तित भेल।

अग रिवाक स्वरूप कगक हविछोट भेनाक पछाति रैगवता भेल
ए रिवा लेन अगल मोठे-पानिस जूडन, अप्पन भाषिक मोहक।
वर्य १९९३ मे ‘महात्री मोट मोहना, मधु रैनीक साहित्यिक रिमर्श



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

प्रस्तुत वार्ता । जकवा हूनैत सद्गुणये मैथिलीक करि, कथाकाव
ली राज द्वावा समर्थन कएल गेल । उगहित सम जन समरेते
स्त्रीकाव कएलनि । उगहित जन दुनार- श्री शैलेश आनन्द,
तबराथ तबरा, कमाव बाहुन, रिजयाणन्द लीवा, सटिदाणन्द सट्टु एर
अन्यान् ।

रिहनि कथा (मीड स्थावी), रीज कथा, स्वर्गमे कथाक पूर्ण कण
अडि रिहनि कथा । ए ल छोट अकावक कथा छी, आ ल कोला
कथाक छोट । सामान्यतया कथा कतेको बिन्दुकेँ छुटैत बिबड ।
जकाँ उगियागत पाठककेँ अगल उद्वेग कहरोमे सम्म भऽ
परैए । हूनैत रिहनि कथा माल रीज कथा स्वर्गमे संपूर्ण कथा
अडि । जे पाठककेँ एक मात्र अगल खूषणव खूषेमन मन बाधि
अगल उद्वेगक पूर्णताकेँ एक एगामे रिक्छा लेखकीय महत्त्वितकेँ
हबिछा दैए । आ पाठक उग मोटकेँ हूरह मगजमे मगा हिव
भऽ जागए ।

रिहनि कथा एकठा रीया मन छोट की पौघ संपूर्ण गाढ हेरौक
सामर्थ्य बनेए । तहिना रिहनि कथा आकारेँ नग्न होगतो कथाक
सब पक्ष, कथा, शिंपकेँ एक थाम बिन्दुगव समेटे कथाक
संपूर्णता प्रदर्शित कबरोमे सम्म अडि । जेना रीया पावरौक
पछाति अफवागए, हब दृष्टिया मन देखागत एकठा गाढक
कगमे अगल संपूर्णता परैए तहिना रिहनि कथा भुमिका, कथाक
स्पष्टीकवाक संग मोद्धत गठन आ मठन जागए आ लेखकक
समस्त रिचावकेँ छोट आकारमे मोद्धतपूर्ण रीया उजागव कबरोमे
सम्म होगए । जेना कोला रीया अफवा कऽ गाढक सब पक्ष
यथा भावि, पात आदि हब होगड एकठा छुटै गाढ मात्र ले ।
तहिना रिहनि कथा समस्त गर्भे भवन-गुवन कथा छी । एहेन
कथा ले जे दृष्टि मात्र भऽ ठमकि जाए । एहेन कथा ले
जकव कोला उव-डोड ले हब । रिहनि कथा एहेना कथा ले



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

अछि जकरा गुवा पठनाक पछाति लेखकक लेखन उद्देश्य सुमराक लेल कात-करोटे करियाबी देरै पडए । एकव उद्देश्य सोनाँ सोनाँ हरिछाएन होगछ ।

बिहनि कथा नव अकाले शुरू भेल । आग ३ नवकायमे ७३ नवकथाक एकठाँ बिकसित कए अछि जे सँततः मैथिलीमे रीसम सदीक अन्तिम दशकमे अपन स्रष्टा कएक रा बिधाक हरिछोटे कबरीमे सम्म भऽ सकन । बिहनि कथाक संपूर्णताकेँ ए तबहँ कहन जा सकैछ- बिहनि कथा कथाक संपूर्ण गुणक संग ७३ गुण गुणव गुण, अपन नवकायमे समेटेन एक निश्चित सिद्धांत ठाँ भेल लेखकक उद्देश्यक पूर्ति कबरीक संग पाठकक मगजक तबगुव खोराक अछि ।

बिहनि कथा २५म सदीमे बचनकाव, संपादक संग-संग पाठकक रीट सेहो हरिछाएन अछि । तकरे काव अछि जे आर बिहनि कथा छेँ गतमे अपन सभ संपूर्णता लेल कागजगुण उतरी सोनाँ अछि । आरक समयमे दृष्टि बिहनि ले, दृष्टि सम्म बचनकाव सभ अग बिधाक बिकासमे लागन छथि । तेँ ३ आर नहिये छुट्का कलाग ३ नहिये कथाक छेँ रा दृष्टि । हम गुणः ३ संपन्न करैत करै जे- बिहनि कथा ठोस कथा, माँजल शिष्यमे कोना बिषयगुण बर्णित ७ रौतु थिक जे पाठकक मन-मस्तिष्कगुण छेँ कऽ ओकरा समुचित कऽ चिकित्सिक भाग छोडि सकरीमे सामर्थ्यगुण होग ३ । बिहनि कथा, मात्र गुदगुदी करैना रा छुट्का काँटि रिसरिसा देरैना रौतु ले बहि लेन आर । ३ बचनकाव आ पाठकक योगमे समा ह्वि तऽ जाग रैना कथा थिक ।

आजुक रातु जीरन मग जोकरेँ कथला ओतेक पत्राति ले तऽ परै छेँ जे ७ आर घंटा-घंटा भवि रिसकी मगा एके बचन पति योगकेँ साँझा देत । अग-अग रँदलेत परिस्थिति,



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

बिदेह

बिदेहमे छै-छै आ तब हेतु अहिकसँ अहिक अर्थक जोगाव
मया कष्ट जागहु लोकक जिणगी। आहुक लोककेँ मीडियासँ
झण-झण भर आ बोलचाल कबएवना थोराक भेटै जागत अछि
तै साहित्यक प्रति रहूत कटि ले रीटर स्यात्रिक अछि। ओना
आगयो उपायसकेँ खुबै पठन जागहु। हृदय ओकरा आम पाठक
मात्रक थोराक ले कहि सके छी। तै बचनकावकेँ सेहो आर
सम्पन्न क२ सशक्त आ अप्प पत्राधिक रीट सागज्य रैमारेर रैना
बचन कवरै आरम्भक अछि। बचनकाव, विशेष क२ बिहनि
कथाकावक अ पहिन दाखि रहैए जे ओ समयक संग छनि
पाठकक समय संग भेल रासुताकेँ देखि ओज आ सबन भाषिक
बचनसँ बिहनि कथा समावेशे योगदान सामर्थ्य हामिन कबथु।

पाठकक आहुक झण-झण बिदेहमे पबिहिति मया बिहनि
कथाकावो जिरैत छथि। तँ ओ यदि आहुक रैमारेर अर्थ तै,
मशीन हागक मया लोकक मशीन सन हएर पबिहितिकेँ पमिया
क२ पकडथु। आ अही पबिहितिकेँ पाठकक मोना पबनि क२
पाठककेँ मजगुती देरौमे अप्पनकेँ सम्पन्न कवरैक शक्ति अर्जित
क२ बचनावत बहथु। तहन बिहनि कथा, बिहनि कथाकाव आ
पाठकक मया सागज्य रैमारेर पाओत। पाठकक प्रत्येक झणक
रासुता, किछु नर कवरैक सनक, अर्थोपार्जनक पाछाँ भेलैत
बहनासँ उपाजन तनारसँ हृदिक साधन सेहो अछि बिहनि कथा।
पाठक जखन सतसँ निरग अप्पारधिक जेन खानी भेटैत समयक
उपायोग कब२ छनि तँ ओकर संग देरौमे सम्पन्न अछि बिहनि
कथा। ए सत रैगवता पुति कवरौमे सम्पन्न बिहनि कथा अप्पन
हवाक जगह छेकरौमे सम्पन्न भेल अछि।

आर बिहनि कथाकाव जखन समय संग छनि पाठकक साहित्यिक
अनुकूल बचन देरौमे सामर्थ्यराज छथि। ओ अप्पन पहिन दाखि
पाठकक मोनकेँ भाँषि तदनुकूल बचनसँ पाठककेँ रैमारेर सम्पन्न
भेल छथि। तहन रैगवता उठै छै एकव मुनाकिनक।



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

बर्तमानमे एहेन कोना दृष्टि हबिछ सगीसक बा सगलोटक
देखाव भऽ ई गिन्यापव काज कबरौमे सक्षम ले भऽ पौवाह
अछि । तकव ठोस काबा अछि रैदलैत सगल आ परिवर्तित मया
ओहल मोचक सागजस्य । जे स्थापित सगीसक छथि से दु तीन
दमिक पढातिक नजबिये बढाकेँ देखौक प्रयास कबताह ।
हूणका ई ये भऽ सकैए किछ ले देखौग । काबन जे ओ सभ
कथाक जग मुनकेँ देखेत भोलैत एनाह अछि बिहनि कथा
ओगँ डुगवक मोच आ हवाक शैलीमे अछि । एकव सर आ पूर्ण
गात तहिया हबिछएन जहिया गठायीने सगीसक सरहक मोच
ओग कथा, ओकव प्राप्ति चरित्र मया सहिया रैनि जेन ।
सगाजक एकठा सगला गँगाग उदाहरण सकग सगातनी आ टिवाह
अछि । ए कहियो थमे होगरेना प्रेज ले अछि । रुदा तैयो
एकव चरित्र आ चेहवा सीटी दब सीटी रैदलैत बहैए । आ ओग
सग ओग गँगागक प्रतिफल सेहो ओहना रैदलैत नजबि
अरैए । यथा यात्रीजीक करिबामे रफित गँगाग सहिये चर्चित
अछि । आग ओहल कोना नर ठोस बढा गँगागव ले
अछि । तहिया लोक भूथे मरेत डन, पेट काँटि कऽ जिरैत
डन । गदेली ओटि सदी कटै डन । आजुक गँगाग मया कियो
भूथे ले मरेए । आ सागाया रसक लोक कयन ओटि आ लैठव
जवा सदी रितरैए । की ए हक सगातनी सगीसक हबिछेरामे
सफल भऽ सकताह ? किमहूँ ले । किएक तँ अग रैदलन
हितिगव ध्यान देरौक गनथति कहँ छनि । ओ तँ प्रतिष्ठा करै
छथि बढाकावकेँ जूएरौक, बढा चाहि थिछ्छा बहि जाऊन ।

कथामँ जूडन लोक बिहनि कथा मादे गिटाव कऽ सकैत डनाह ।
रुदा हूणक सभक दृष्टि बिहनि कथाक प्रति हबिछ ले छनि,
उदाहरणतः बैगकर्म फ़ान, जे नष्टकक मञ्जुषा, गविगक त्वाता
छथि ओहो कथागव लिखरौ कान बिहनि कथाकेँ अतिशय कहि
रैवा दै छथि । सगलस्य मिथि मैथिली कथा धावाक मजगुत



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

थारु डुधि, ओ नघुकथा (रिहनि कथा)केँ छुट्काक सङ्का देननि ।
माया रौरुक मोट समीपन अछि किएक तँ ओ जग दशिकक
मोचक लोक डुधि तगमे नघुकथा (रिहनि कथा) रिहना हवीछ ले
डुन । तै हूको ए प्रति दृष्टि हवीछ ले हएँ स्वाभाविक । ओ
कथा विकासक आलोचनमे नघुकथा (रिहनि कथा)क छटे केनहि
सएह रहूत अछि । [मैथिली कथाक विकास नामक आलोचन, साहित्य
अकादमी दिल्ली सँ प्रकाशित पोथी - 'मैथिली कथाक विकास'- स.
रासुकी नाथ सा, २००३]।

रिहनि कथा रा कथाकावक मुलाकष हेतु रिहनि कथाकाव स्रय ए
दिनामे काह उठारैथि तँ सही मुलाकष सँभर भऽ पाउत ।
मैथिली समीकाक एकठा कमजोब तह्र अहो बहन जे ओ
बचामेक दृष्टियेँ सडक भाग होगत डुधि । हविडेराक अ जे
ओ अपन प्राणाल माहा स्मर छै डुधि । आलोचनामे कमी ले
राह रानी हेराक छली । जँ समीकक द्वावा हूकब बचामेक
दोय रा कमीकेँ उयावि सभक मोमाँ कऽ देन गेल तँ समीकक
भऽ गेल हूक कष्टव दुष्म । आ तकब पछाति हूका,
बचकाकावक झूठे, अडानी, उदस, स्राथी आदि सङ्कासँ जाल
नागर । अहो मोनह आना सए अछि जे मैथिली समीकामे किछ
छोठे प्रतिस्पर्ध पल्ल राडिहकेँ प्राथमिकता दऽ समीका निथि
बगल डुधि । तँ जा धरि बचकाकावमे आलोचनामेक रिचाव रा
कमी सहराक सामर्थ ले हएत, स्रथा आलोचना कतऽ सँ छँ । ग
पमावि सकत रा अपन रैसकीपव रैसि अवाम कऽ सकत ?
ओहले किछ बचकाकाव सभ द्वावा समीकाकेँ ओनि सपेराक सुत्रक
कग सेहो ठाम-ठाम प्रयाङ्क होगत देखागत बहन अछि ।

आजुक रिहनि कथा पहिल हिन्दी भाषासँ उधावी जेन शेट,
नघुकथा नामे लिखागत बगल । अथन धरिक मोथिक जलतरी
अनुसारे नघुकथा शेट, प्रयोगे डुगल पहिल कथा १९७५ मे



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

मिथिला मिहिव मे कानी क्काव दस मिथित 'बुडिरैक रव' डन ।
अगसँ पहिल डेठै कथा, कठपुस कथा, मिनी कथा, हिनव
कथा.....आदि नामे ३३ डेठैत बहन डन । एकव पछाति जे
बचनकाव रिहसि कथामे सफिय भेना ७ नाम अछि- डा ठमबाज,
ए. सी. दीपक, तकर पछाति मिनी ले, बाजमोहन सा, एम
मनिकान्त, अमरनाथ, बामनाथ ठाकुर आदि । अग नामे सँ
रेखी गोठै रिहसि कथा लिखीक प्रयोगधर्मिता मात्रक निरह
केनसि । हँ एम मनिकान्त मिथिला मिहिवक माध्यमे कतेको रर्य
धरि रिहसि कथा लेखक नियमितता रेलोल बहना । अदु दुधद
रा हान्सापद रौत ३ जे रतमानमे हुनक एको ठी बचन उगन
ले अछि । डा. ठमबाज जी क मैथिलीक पहिल रिहसि कथा
संग्रह 'जे की ल मे (प्रकाशित १९१२ ३) मैथिली रिहसि कथा
पेठैवक पहिल सलस कगन जा सकेए । एमे हान्सा रंगम
तवन नयुकायक कन ३३ गोठै रिहसि कथा संग्रहित अछि ।
पल्लापव अकित रर्यक अवाल एकव सत बचन १९७३ सँ १९१२
मर्य लिखन बचन अछि । एकव कथा सत तकनीक राजलेतिक
मासाजिक करारसुपव छेठै कतेक लिखन गेन अछि । किड
बचन आगयो प्रामगिक अछि । ठमबाज निश्चित कपसँ रिहसि
कथा आनदलक रीया रौडग केनसि आ तेँ आग रिहसि कथाक
गाड समष्टगव लोगत देखागए ।

किडए रर्य पछाति लिखक अगिला पीठिक श्री अमरनाथ अपन
अकिका रिहसि कथा संग्रह प्रस्तुत केनसि (रर्य १९७३ ३
प्रप्रकाशित २०११ ३) आ एकवा एक सीटी आउव डुगव न२
जेरौक ठोस प्राम केनसि । ए संग्रहक कथा सत खनीन
जिज्ञासक कथाक नगीट रूमागए आ सत रिहसि डेठैत बचन
कएन गेन रूमागए । एकव अधिकसि बचन आगयोक समसँ
मेन खागत रूमागए । अदु लेखकसँ दुवभाषिक रार्तागक



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यविमल

अनुसूचक बाजुस जकाँ हिनको कोला बचना तकौनीन पत्रिकामे
प्रकाशित ले भऽ सोमे संगहित अछि ।

रय १९१३. रिहसि कथाक सुर्गमि शुक्रात रयक कपमे देखाव
तेन सुसागल जखन 'मिथिला मिहिर' (पत्रिका) अपन रिहसि कथा
रिहसिक (मधु कथा रिहसिक नामसँ) निकालि योकाम तँ ले दूदा
रौष्ट अरुष्ट देखाव केनक । अ साहसिक काज तेन करिक द्वा
ए नर रिहसिक केन । मिथिला मिहिरक अग रिहसिकक समय
सम्पादक दुनाह आदरणीय तीमनाथ सा । उना तँ 'अरुष्टीक गा
रियेले तँ सब डरौ नऽ कऽ दोडन रौना कहरत चवितार्थ
होत देखिएन । हऽ २३ रय रीति गेल । खऽ ! रौन
गाँ गाँबि तँ तेरै कएन..... ।

कथाकक नट्टक सुखन पकडि बखनिहार श्री रिभुति आनन्द जी
जेरौ पत्रिका 'रुने' क नरम अक रय-१९१५ मे पत्रिकाक गातक
अनुसूचक दुओ रौष्ट रिहसि कथाक संगरेने कऽ निकालन रिहसि
कथा रिहसिक (मधुकथाक रिहसिक नामसँ) । अरु रय १९१५
जुनागमे साहिब अकादमी, दिल्ली द्वावा कथाकव आयोजित
सम्मेलनमे परिचित कथाकाव श्री बासुदेव सा, कथाकव प्रसंगे
रिहसि (मधु) कथाकेँ शोभित कऽ एक अरुष्टद मिथि एकव
रिहसि जेतोले दुनाह । जगमे रिहसि (मधु) कथाक ऐहिक
पठनकव खनीन जिज्ञासक चर्चा आ तुलना एर मैथिली रिहसि
(मधु) कथाकाव मे सँ अमरनाथ जीक योगदानक चर्चा कएल
हुनाह ।

आठम दशक रिहसि कथाक संगोवसँ रचित बहन । दूदा अ
रिहसि कथा निखनिहारक एक ठा पौघ हँज तेनाब केनक,
जगमे प्रदूख नाम अछि- रिभुति आनन्द, शैलेंद्र आनन्द,
श्रीबाज, प्रेमकांत सा, ऐरुष्ट सा, देवशेकव नरीन, प्रदीप



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

बिहारी, तावाचन्द्र बियोगी, चन्द्रशेखर थाँ आदि । ३ समूह बचनक
दृष्टिये नर थाँ थि पाँथरिना डन । सामारानी रिचावसँ प्रभावित
रूढ़ा आपत कानक दूदमाँ प्रेरित आ पीडित । बिहनि कथाक
पहिल संग्रह १९१२ मे रँहबाएन दोसर १९१३ । ३ मे थाँ तक
पढाति अकान । किअक ? २२ बरक एहेन खालीपन बिहनि
कथाक गतिहमकेँ ठामकि जेरौक जेन रौंध केनक । एक
रौंधक डूनाह तकोनीन संपादक, सबकारी आ निजी समिति-संस्था
आ प्रकाशक । रूढ़ा तहँसँ रेशी जिन्याव ए पीठिक बचनकाव
डूना जे अगलकेँ दुनु बिबाध कनम टना भवना जेननि रा
गन्यक ए प्रकावक उमर खेत देखि डरि क२ अगलकेँ कतिया
जेननि । अग पीठिक कतिपय बचनकाव ए बिहनि कथा बिधाक
बाशि नरका बचनकाव सबकेँ पकड़ । निश्चित ३२ स्वप्ना
नगनाह । काँवा डन जे एक बरिष्ठजन कग मर्या अगल
अस्तित्व रा कोना नाभक जोगाव रा प्रतिष्ठा ले नज्जि एननि ।
अली रीट आन तन्त्राथ ना संग्र, ७०मे मेहो किड बिहनि
कथा संकलित अछि ।

मैथिली साहित्यक जिवान मर्या बिहनिकथाक प्रसङ्गत बीया नर
कपे रौंडन केननि अग पीठिक नरतुबिया । जगमे नाम डन
ज्याति सुनीत टोषरी, दुर्गाबिन्द माँडन, कपिलेश्वर बाँडन, धीरेन्द्र
कमाव, बाजुदेव माँडन, रौचन ठाँकव, बाम प्रवेश माँडन, भावत
तुषा मा, मालेश्वर मल्ल, उमेश माँडन, जगदीश प्रसाद माँडन
(रौचन बिहनि कथा संग किड सुन्दर बिहनि कथा जेना थन-कमान/
घबडीह/ खाता-थेमबा/ सरुत/ कौशिक मेलजन), बामछाया
माँडन 'छोट', पबमेश्वर कापडि, बघुनाथ दूथिया, भूषि रशिष्ट,
शिर कमाव मा "छोट", मिथिलेश कमाव मा, सल्लु कमाव मा,
नरनीत कमाव मा, कौशिक कमाव, अमोन मा, कमाव मल्ल
कस्तुर, रीनीत उमेश, धनाक ठाँकव, आशीष अमिताभ, सतीश
चन्द्र मा, गजेन्द्र ठाँकव, भरण भरण, बाम बिनास मा,



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रुक्मणी कामत, गीत रुक्मणी मिह, रजय रुक्मणी मिह, मिथिलेश
मिह, नरेश दाम, अमित मिह, जगदाश्वर ना मन्त्र, चन्द्र ना,
उग्रनाम ना, सन्दीप रुक्मणी साहनी, जगदाश्वर ना कश्यप, मिह
ना, बागदर प्रसाद मिह नाकदाव, प्रेमचन्द पंकज, अमितेश
मिह, अमरेश्वर मिह पाठक, मन्त्र नाकदाव, श्रीधर,
देवेश्वर ना, सन्दीप मिह, मिथिलेश रुक्मणी ना, रुक्मणी बाह्य,
दीप रुक्मणी ना “नृप”, रुक्मणी आदिक। ए पीठिक समूह
द्वारा रिहन्तिना पत्र ध्वनिना काज भेल। अग ठामसँ अमरी
हमिन्ते भेल रिहन्तिना कथाक। आ हिन्दीक उदासी मिह, नम्रुका
सँ रिहन्तिना आँधी मिह- रिहन्तिना स्थापित भेल।

रीसम सदीक अन्तिम दशकक पहिल काज भेल स. ए. सी. दीपक
जी द्वारा रिहन्तिना रिहन्तिना (नम्रु) कथा रिहन्तिना (मार्च-१९९५ मे)।
तकवा पढाति नरका पीठि सैहो कान्हाव रीवा उठैतक आ नम्रु
भेल रिहन्तिना रीहन्तिना सामाजिक परिदृष्टि, तकनीकीय भेल नर-नर
आन्तिक रंग जगन्ति नर अरधन्ताक रंग रिहन्तिना कथा जेल नर-
नर काज।

१९९३. अमे आन “रुक्मणी” क दु दशक रीह १९९३. अ कै
रिहन्तिना कथाक सृतिरिह कहि सकैत छी। २० फरवरी १९९३. कै
रुक्मणी एर मनननाथक रीहजगमे ल्हाठ कपोली, मन्त्र रीहमे
आयोजित भेल रिहन्तिना कथा गोष्ठी, जकव अरधन्ता केलनि प
नम्रुनाथ मिह आ एकव मिह सन्दीप रुक्मणी बाह्य द्वारा भेल।
ए अरधन्ता उगहित रिहन्तिना कथा पाठ केलिहो दुनाह- नम्रुनाथ
नर, मनननाथ मिह, प्रेमचन्द पंकज, रुक्मणी, मिहेश्वर आनन्द,
प्रसाद रुक्मणी मिह, मतिनाथ मिह, उग्रनाम पाठक, प्रेमचन्द
ठाकुर, रुक्मणी बाह्य, रीवा कर्ष, नम्रु प्रसाद, नम्रु कर्ष,
सन्दीप मिह सन्दीप एर कवन्ती। पठन गेल वचना सन्दीप समीक्षी
रिहन्तिनाका दुनाह- मिहेश्वर आनन्द, रुक्मणी, नम्रुनाथ नर एर



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

माधुमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रेमचन्द पंकज । हमरा जगतरे विहसि कथाक ३ पहिल गोष्ठी
हुन । ३. मार्च १९९३. ले सहकारी मीट लोहना, मधुबनी द्वारा
झुलझुलीक विहसि कथा 'सागरद' क एकन पाठ आ अग पव 'रैहम'
क आयोजन कएल गेल । अगमे प्रमुख रिदावक हुनाह-
श्रीवाज, मोहन आनन्द, रिजयानन्द हीवा, तरनाथ तरन एर
प्रेमचन्द पंकज । हमरा जगतरे विहसि कथा आ कथाकावपव
एहेन 'रैहम' केव ३ पहिल आयोजन हुन । जुनाग १९९३. मे
काशपुर म रैहवागत शरतुविगा त्रैमासिक पत्रिकाक विहसि कथा
रिशेयार्क आन, संपादक हुनाह- प्रेमकांतु मा एर रैफुर्न मा ।
अगमे १९ गोष्ठेक फन १९ गोष्ठे विहसि कथाक समायोजन हुन,
आ अग विहसि कथा रिदाक हविठेठे क२ एकवा नर दिना
देखेरौक प्रयास कलेत झुलझुलीक आलेख अछि, जे कि कोना
विहसि कथा रिशेयार्कमे ए तबहक पहिल आलेख थिक । अली
दमेकमे आवनु भेल कथा गोष्ठी सेना विहसि कथाक रौठ रैहवा
रा हविठेरौमे उ३. प्रेवकक काज कलेत बहन । कथा गोष्ठीक
जुनाग १९९१ क महिनीक आयोजनमे एके सग दु गोष्ठे पोथीक
लोकार्गि भेल, 'खंड-खंड जिहगी' (प्रदीप रिहारी) आ 'मिनालेख'
(तावानन्द रिहारी), अगमे फन ३३. गोष्ठे वचना संकलित भेल
अछि ।

२५म सदीमे समय आ परिस्थितिके अकालीत सभ वचनाकाव खुनि
क२ विहसिकथा दिस जुमल छथि । पत्रिकाक संपादक सभ किछ
कोना अग लेन समर्पित कब२ नगनाह । अग नर सदीक नर
सोदक पहिल विहसि कथा संग्रह आयन- 'सुसुनुक' (२००२ अ),
एकव वचनाकाव श्री रैफुर्न मा जी अगन ३३ गोष्ठे वचना न२ ए
रिदाके रौठ देखेरौक ठोस प्रयास केनहि । एकव रौद उ
संग्रहक सती नागि गेल सुनु । अगिना संगोव हिन्दी मैथिलीक
सहाय वचनाकाव विहसिक कथाक दिमोवाहक श्री देवेश्वर नरीन
जी अगना कथा संग्रह-हाथी चनय रैजाव (२००४ अ. मे ३५



मानवीय

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

गोष्ट रिहसि कथाक संगोव) संग उगहिति दर्ज करौनसि । तँ
२००३. ३। ये प्रवास मोटक ठोस कथाकाव श्री मणमोहन मा जी
अगस रिहसि कथाक संगोव, मिथिलाक निशोप्रव ये आनि एकवा
एक डेग आउव आगाँ रँदरौक प्रयास कएनसि । एकव आइथमे
श्री रिजय मिश्री जी एकवा गद्य कारक सँज्ञा देनसि अछि ।
रातुनित कएँ तँ गद्य कार, कारक गद्यामेक नीली थिक ।
झातो मए अछि जे रिहसि कथा गद्य बहि करिताक पूर्णतः नगीट
माणन जागए । ह्मदा अगमे संकलित २४ गोष्ट बचना रिहसि
कथे थिक, आन किछ ले । रर्य २००१ ये “अहीकेँ कहे जी”
(महेन्द्र ह्माव माक ३.१ गोष्ट रिहसि कथाक संग्रह) आएन । ३।
संग्रह रिहसि कथाक प्रति पूर्ण मोमवएन आ दृष्टि हवीड बचना
संरहक संगोव थिक । ह्मरा पीछीक रँहुरिध, प्रतिभा संगम लेखक
० संगोदक श्री गजेन्द्र ठाकुर अगस बचना संग्रह- हकफेदएम्
अर्तुमक- ये नयुक्थाक संग १७ गोष्ट ठोस आ कथा ०
शिंपगते हविडाएन रिहसि कथा आनि रिहसिकथा संभावमे श्रीरूछि
केनसि अछि । अथन धरि एक मिथे छलैत रिहसि कथाक मिथ
मँ हँष्ट २०१० ३। ये श्री जगदीश मंडन जी सभसँ गतव रौन
मलारेड्मिक रिहसि कथा संग्रह ‘तरेगस क संग आन बचनाकाव
केँ सन्नाहित केनसि । २१ म सदीक पहिन दमेकक अग्रिम
टवणमे मैथिली ३। पत्रिका ‘बिदेह’ अग रिहसि कथाक नर
गतिहाम मिथरा रा रँलरामे अग्रणी माणन जाएत । अगस ७गम
अक रिहसि कथा समायोजनमे देशी आ बिदेशी ठोस बचनाक
संगोव, एरँ अग रिहसि कथाक मोमवीय रिरेचन क२ अएना न्नकप
मनका एकव रौठकेँ मोकामक नगीट अलरामे ३। पूर्णतः सहन
भेन अछि । अग अकमे हन ३२ बचनाकावक १७ गोष्ट बचना
अग रिधकेँ पूर्णतः हविडा, सभक मोमाँ अलरामे मो प्रतिशेत
सकम भ२ देखाव भेन अछि । संगोदकक अगरेँ एकव
सहनताक श्रेय छहि अग अकक अतिथि संगोदक-ह्मराजीकेँ ।
ह्मराजी जी रँड गम्वीवता पूर्क सभक समायोजन एरँ अगस



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संकेत ISSN 2229-547X VIDEHA

आजैथे दोसरौ बचनमेक प्रसतिके हबिदेहक सफल प्रगम
लेखनि अछि ।

नगभग दु दशकसँ अग बिदेहमे बचनमेक उपस्थिति दर्ज कबलैत
बहनाह, आ परिणाम “समय साक्षी थिक” २०११ मे आएन, अ
संग्रह श्री अणमोन मा जिक अन् १३.० बचनक अण जिनगीक
भोगन सार्थक अएना थिक । २०१२ मे “ठैकनजी” (अणमोन
मा) एर “ठीस” (मिथिलेमे मा) संग्रह सेहो लिहनि कथाक रखावी
भवनामे समर्थ बुझना जागछ । अणमोन जिक १६९ बचनक
संग्रह सनातनी सार्थक पबसैए । तैमे मिथिलेमे मा जिक “ठीस” क
४३. गोष्ट बचन पाठकक मानसिकताके संप्रत करैए । जे कि
लिहनि कथाक खाती रा धवाँ सदृश अस्तित्व करैए ।

१० दिसम्बर २०११के अगव बाति दीप ज्वलक १३.५ कथा
गोष्ठीक आयोजन पठनामे कएन गेल, अ अरसवगव द्वाजा
द्वारा मैथिलीक पहिल लिहनि कथा पोस्टर प्रदर्शनी कएन गेल
हुन ।

अ तबहले लिहनि कथा समावक परिदृष्टि पूर्णतः भवन पुनर् २
गेल अछि । अग सत दिन कियो ल कियो स्वातंत्रिक कर्पे
जुडि अण योगदान दैत एकरा मोकामक डाढिगव आनि पठ
खुनराक प्रतिभाके ठाठ देखागत छथि । मोकाम भेटि गेलै त
घब पैसैमे समय ले नगते ।

अ बचनमेक अण सतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



१० जुलाई २०१२ के

आशीय अर्चनाव द्वावा



श्री जगदीश प्रसाद मण्डनजीसँ लेल साझाकोव

श्री. अर्चनाव- काहि चेतना सन्धानसँ सन्धानित भेलौ,
तग लेल बिदेह परिवार दिससँ रखाग ।

ज.प्र. मण्डन-

आशीयजी, एकवा अहाँ ब्यक्तिगत ले
बिदेह परिवारक चेतनताक प्रतीक
बुझियौ । जे चेतना सघितिक पत्रिका
(घब-रौहव) दोसले पन्नामे जूरित-
मृत्यक मुटी प्रकाशित करैत अछि, ओ ग
मुटीसँ बिदेह परिवार (ज-पत्रिका)
अथला धरि काते बहन अछि, भनहि
गाम-घबक संस्कृतिमे किअए ल लोहोक
गज्ज दुरि-धान, सिन्धव-पीठावसँ
सुशोभित होगत हुअ । बिदेह
परिवार दिससँ आग्रह (चेतना सघितिके)



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कलेत डुबहि जे समाजक रैदलेत
सुरकण (सांजिक, आर्थिक, रौपिक,
रौटाविकण) नज्जि दधि तग जेन
सुमार अछि जे यै खनी साहित्यक
जते सम्पादक डुबि, ओ अपना हाथसँ
अपन पत्रिकाक गतिहास निथि अपन-
अपन परिचय दधि । एक दिन मिथिनाक
डुझावक रिटाव वये छिँ दोसर दिन
पत्रिका सभ पाछु झूँहै घुस्रकि बहन
अछि । ए जेन के कबताह ? आग
कोला समारोहमे धोती-कतर्सि न२ क२
टुम्रत प्छै धरि आगमन भ२ बहन
अछि, धोतीरना तबेतेव ग्रन्थले डुबि जे
देखु ल किवदानी । तँ दोसर दिन
टुम्रत प्छैरना अथिया-अथिया सुसकारी
दग डुबि जे शुभ काजमे गीछ ।
धोती पहिबिये क२ ले आगमन डुबि ।
थेव जे होड, हमरा सभकेँ रिटाव क२
एकठा वास्ता रँगरेण पड़त जे रसत्रक
रैदनार समायोहन होगत बहन अछि ।
प्रकरोतम वाम रैनकन धावी डुगार ।
आरँ ओ हाग बहले ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

श्री. अमरेश्वर-

अहाँकेँ छेतना सगिति सन्धान सृति छन्द
गद्गद् भ२ गेन । आबो बूनेक जितना
जगन । सूचना केना भेटैत ?

ज.प्र. माडन-

छेतना सगितिक स्थापना दिस १+
जुनाग डी । १९३४ अंक १+ जुनागकेँ
किछु सगीक संग गालीजी छेतना
सगितिक स्थापना केननि । उना आला-
आन समारोह सगितिक रीट होएते
बहेए हूदा स्थायी रूपे १+ जुनाग
स्थापना दिसक अरसवगव सभ मान
किछु विशेष रूपे होएते अछि ।
आठ-दस दिन पहिल बिरका रौर
(बिरकाणन्द ठाकुर) जे सगितिक सटि
डिगि, होन केननि जे १+ जुनागकेँ
छेतना सगितिक स्थापना दिस डी जाहि
अरसवगव सगिति किछु गोठेकेँ
सन्धानित करैक निर्णय केननि अछि ।
अहाँक आँखँ अनियार्य अछि । उना डक
द्वारा लिखित सूचना सेहो पाठा देल डी,
हूदा पोस्ट-ऑफिसक जे फिया-कनाप
छे तारिये समेगव नहियो पहुँचए ।
बिरकाणन्द जीसँ ग्रन्थार्थीमे डह मास
पुर दिसमँबसे धमिलामे भेटैत भेल
डन । किछु प्रमगव गप्पो-सग भेल
बहेए । मगतजी (श्रीमती मगत ठाकुर)
दूठा मोहरो गोननि । श्री राम भरोस



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

कागर्डा भ्रम, बाजाराय मिह बाठौव
एरै लगानक आरो कतेक लोक सभ
बहयि हुनको सभसँ पहिन बैठै भेल
हुन ।

जखन बिरेश्वरनाथ जी हेलनगव
जाणकारी देवनि तखन हम गुआलठीक
धमिनामे पहुँच गेल बही । जरैर
देवनि जे जकब आधर । दूदा दु-
तीन दिनक पडाति संगी सभ हेलन
केवनि जे रिना लिखित सूचनाक जखर
उँचि ले । ओ सभ चेतना समितिक
फिया-कनापसँ नाखुनि छथि । प्रम उँठल
जे आरै हम कि कवरै ? एके रात
करिता आ कथामे दु-रि रधामे रँष्ट
जाग । एक तँ बौदियाह समग्र भेल
किमानक मन ओहिना तरैधन अछि तगव
सँ आरो तरैनि गेल । जाग कि ले
जाग, रिचित ओसरी नागि गेल । मनमे
हुअए जे बिरेश्वर राँव किछ कबए छै
छथि तगठाम सहयोग ले कवरै उँचि
ले हएत ? दूदा जखन संगी सरैहक
दोहवा-दोहवा हेलन आरैए नगन तखन
ओरो मन दुखिये पड़ए नगन । १+
जुनागत ७ रँजे सरैह । हम
बिरेश्वरनाथ जीकेँ हेलन केवनि जे
अपलक कार्यक्रममे कोना ब्यवधान तँ



ले भेल अछि ? ओ भविसक
उछागलपव बहनि । आँखि मीछि ते
कहनि जे ले, अ तँ सब मानक
कार्यक्रम छी हेरै कबत । ओना ए
रीटमे दिवनी छन गेल बही तँए दोहरा
क२ सम्पर्क ले भ२ सकन । पबस्य
एहो आ काजमे लागन छी ।

पुछनि- सम्र केहेन अछि ? एँठाम
(गाम) पानि भ२ बहन अछि ।

ओ कहनि- मेघोष तँ एतौ अछि ह्दा
बुल्ल ले पडैए । ह्णकव जराँर सुनि
मन मानि गेल एहेन खुशियाँ योसममे
भोज-भात ले ह्णए तँ केहेन सम्रमे
ह्णए । ह्णपव बिरका छी अहो कहि
देनि जे न्यायमूर्ति किशोर ह्णव
माँडन बिरिष्ट अतिथि बहताह । तग
मग न्यायमूर्ति बाजेलुद प्रसाद छी,
डाँकठव सहैर, रिजय राँव, सब बहने
कबताह । ह्णके मरहक काजो
छिनि । एक तँ बौद्धिह सम्र दोसब
भिस्रवका सम्र बहल सुनारन योसम
बहने कब, तैयारीक रिटाव केहो ।
सम्रपव पबिराव बहल मगी भेँठये
जागए । ह्णव कहि देनि जे आँठ-
नख रोजेक रँम पकडि जेर ।



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आ. अर्चना-
नलीए ?

कते समय गामसँ गठना जागमे

ज.प्र. माडन-

आशीयजी, की कहरे । एरैव हराग
सहबक योका भेटेन । एते-एते
दुवीक रीट एको मिष्टक लेव-लेव ले
देखनि । ह्रदा अगना मरैक त
भगवान ले मानिक छथि । जेना क
बखरैत भोगा तल्लि ले हम बहरैत ।
गाड़ ीक (ट्रेन) वास्ता एहेन रैनि गोन
अछि जे डेठ दु दिन तक नागि
जागए । ह्रदा एगएट भेनासँ पौड
सुरिवा रैत अछि ह्रदा तैयो पाँट-डह
घँठी तँ नगिये जागए ।

आ. अर्चना-
मण्डे जागमे तँ दिकत भेल हएत ?

जखन पाणि लोगत बहए तखन रैस

ज.प्र. माडन-

दिकत कि दिकत भेल । ओना
गाड़ ीक (दु गहिया) सुरिवा अछि, ह्रदा
पीछड्डमे तँ चारि पएवरैना हाथी
पिछड्डा खसि गइए आ दु गहियाक
कोन ठेकास । एहेन तीस किनो मीठव



जागत रिटाव क२ जेलों। तथन म
भेन जे डुता न२ जेर। द्वा कते
रैव डुता रिसविये जेलों आ कते रैव
हवागये जेन। तै डुता ले न२
जेरोंक रिटाव भेन पानियो कमले।
रूँदा-रूँदीपव आरि जेन बहए।

आ. अलटिहाव-

कते रैजे पठना पडूँटजै ?

ज.प्र. माडन-

सरा चारि रैजे पडूँटजै। जनथेये
कए क२ चमन बही। बुखो नगि जेन
बहए। पुने (गाँधी पुन) नग उतरि
पहिले खेलों। खेलाक पडाति ठैमपु
पकडि एकठा क्रियाथी डेवापव
पडूँटजै। ओ निबसनिसेक डुधि
बलिदजै। ओगठाम देह-हाथ पोडि
ह्रेशे भेलों। पोले डुह रैजे
बाजेलद नगव क्रियापति भरण नग
पडूँट जेलों। जेठपव पडूँटजै आकि
आनन्दजै (आनन्द कमार मा) सेहो
भेठ जेनाह। नीक भरण नीक
रैरमथा। जेना बाजधानीक हेरोंक चाली
तगमे कमी ले। पंथा तकि रैसजै।
पाँट मिष्टक पडाति दूधुजै (कमन
मोहन दूध, घब-रौहव पत्रिकाक



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक चर्चा ISSN 2229-547X VIDEHA

सहयोगी सम्पादक) देखननि । देखिने
दोसब ठाम लेना पुछननि जे किछ
थेरो-पीरो कबरौ । कहनिनि जे
बस्तेमे था लल छी । गानि पीलो ।

समय छहसँ आगु रैठि गेल । छह
रैजे शुक लोगक समय बहक, गग-सग
करैले आनन्दजी नगमे बहनि, आदा
बूमि पड़ल जेना छुज्जी आ बिरका रौर
काजमे जमि क२ जूठल छथि ।
पुछनिनि- छुज्जी, बगज्जी (डा.
बगबन्दा सा बग) कै ले देखे
छनि ? कहनि ओ कथा गोष्ठीमे
गेल छथि । कहि अपन हेमजेट, रैगक
जिम्मा स्वयम्मा कहनि जे कल एकठा
काज केल अरौ छी । छुज्जीक काज
बान्हित करैक अर्थ हेमजेट जे काजमे
(समावेश) रौधा उपस्थित करै ।
कहनिनि, हम कतौ पड़ एन जाग छी,
अखन जे काज नवन अछि पहिल
ओका सम्भवक । छुज्जी तँ उठि क२
छनि गेनाह, आदा मसमे एकठा नर प्रश्न
आरि गेल । ओ जे 'घब-रौह'
पत्रिकाक सम्पादक बगज्जी छथि, तखन
अपन जुरौदेहक काज छोटि मस
छनि गेनाह, आ गोष्ठी तँ १४-१५
जुनागक बातिमे बह, १५ तारीखकै



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रिदा भेल ११ धरि तँ आरिसे तेल
हेता । खएव ! एना किअ तेल ?
जखन कि चेतना समितिक स्थापना
दिस १+ जुनाङ्ग डी, भविसक गालीयो
जी (ठीकसँ मोल ले अछि दूदा अन्वमान
करै डी) जखन माँ मिथिलाकेँ प्रणाम कए
पड़ । क२ अकाममे उड़ित ओग टिड़
जकाँ जे उड़ि ते-उड़ि ते अडो दैत
अछि तल्ला केनमि । प्रम घुबिअए
नगन जे अगला रैठोक मुड़न रा रिआन
बहए आ माठू ओ रैठोक एक्क दिन होग
तखन कि कएन ज्ञात ? कियो अगन
घब सम्वत आकि भोज खाएने
ज्ञात । दूदा एठाम तँ अँरेमक
संभारना छन । चेतना समितिक तिथि
अँरेम रयसँ मलकेँ पकड़ल अछि, कथा
गोष्ठीक तिथि निर्धारित कएन ज्ञात
अछि, तगठाम समए आ दूरीक गिटाव
केल रिना, जँ तिथि निर्धारित कएन
ज्ञात तँ कि कहलै ? एक तँ उल्ला
हम सब मिथिलाचनक काजक दोड़मे
पड़िअएन डी तगएव जँ काजे काजक
रौधा रैनत तँ कते दूर जा सकब, से
तँ सब रूमिमे डी । तग रीट
रिरेकाजी तीन-चारि गोठेक संग आरि
किड-किड काजक रात पड़नमि ।



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कहलियनि । तग रीट अध्याप्ता प्रगना
सा सेहो एनीह ।

टुझुजी धड़कड़ एन आरि हेनसेष्ट
हाथमे लेत टिहा देननि । उना
चेतना सगितिक सदस्य सरहक ज्ञानकारी
अडि, ह्रदा चेहरासँ टिहावए ले डन ।
तँए अणतआव जकाँ बही । ह्रदा
कार्यकर्ताक अडार जकब रूमि पडन
रिगरोसँ शुक भेल रहुत रहुत या
कार्यक्रम भेल ।

आ. अणटिहाव-
भेल ?

रिगिरत कते रजे कार्यक्रम शुक

ज.प्र. माडन-

ए प्रश्नक उत्तर गीक-गीक ले द२
सकरै । किएक तँ ले अणल घड़ी
बथे छी आ ले मोरौगन । ह्रदा
रैसकसँ रूमि पडन जे एक-डेढ़ घंटा
रिगरोसँ कार्यक्रम शुक भेल । हँ तग
रीट दुष्टी रात आलो भेल ।
गण्डकान्त राँवू (डा. गण्डकान्त मा)
दोसब कतावक हसीपव आगुमे रैसन
बहथि, ओ अणल टिहावए देननि ।
मसमे बहरो कब ह्रदा ओल रीट बहल
गम बही । ह्रकासँ पहिल परिचय ओग



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

दिस भेल छल जे दिस मिथिला दर्शनमे
छगल कथा छलरानी पढ़ि पहिने रखा
देवनि । गप्पो-सगक रीट अखिले
रौखल जे नानकका (उमेश मांडन)
होष केवनि जे साइ दस रोजेक
रसक छिकछ कछा लेलो । तेबह-टोदह
नम्रैव सीधे अछि ।

श्री. अमरिन्दा-

कार्यक्रम केवने भेल ?

ज.प्र. मांडन-

पहिल समान कार्यक्रम भेल । यात्री
जीक स्थापित चेतना सभितिक समान
पारि रहल खुशी भेल । उछ
न्यायानयक न्यायमूर्ति किशोर कुमार
मांडनक हाथसँ सँकड़ । गायमान्य
लोकनिक रीट, जेगमे रिलाव सबकावक
पूरि अख्यमूर्ति रिवाज परिवदक पूरि
अध्यक्ष, उछ न्यायानयक पूरि अख्य
न्यायमूर्तिक संग माननीय पूरि समिद,
माननीय रिवाज पारिद, अधिरक्ता,
अध्ययक, डाक्टर गत्यादि चेतना
सभितिक सब छलाह ।



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

श्री. अर्चना-

साहित्यिक माहौलमे कार्यक्रम भेल
हएत ?

ज.प्र. मंडल-

आशीषजी, ३ रक्त गतीव प्रश्न
अछि । ओना साहित्यिक माहौल अरुण
भन अदा बाजगीतिक रैनी रूमि
पडल । अध्यात्म ज्ञान (चेतना समितिक
अध्यात्म) रक्त रक्त विभिन्न भननि, नीक
भननि । अदा मटक रक्ता लोकनि
साहित्यकेँ मोर्चा बाजगीति दिस घुसका
देनथि । जे गोष्ठीक अङ्कन ले
बहन । अर्थ रक्ता भनाह पडित
तावाकान्त माली (विवाह परिवर्द्धक पुर
अध्यात्म) जे तेना क२ रिटार मोर्चा
देनथि जे रौदक रङ्गकेँ रैकारु भ२
गेननि । ओना पुर अर्थमाली डा.
जगन्नाथ मिश्र, विवाह पार्यद आ चेतना
समितिक संवर्द्धक रिजय रारु (श्री रिजय
अभाव मिश्र) विभिन्न अण रिटार
बननि । यानी ज्ञान स्थापित चेतना
समितिक रिटार रिटार गौण पडि
गेन । तहुँसे मैथिली साहित्यक रीट,
टैगोर साहित्य सम्मान पल्लि-पल्लि
भैरव, जेकर चवटो ले भेल ।
माननीय न्यायमूर्ति बाबुलाल प्रसादजी,
अण रक्त रक्त किछ हद-तक
मोड़नि । ओ यानी ज्ञान रिटारकेँ



पकड़ि चेतनाक रियद ब्याख्या
केननि । भाषा महारंजक दुननि ।
महारंजक ए जेन जे मैथिली-मगहीक
सीमापव बहल कथला मैथिली कथला
मगही आ कथला मैथिली-मगही गिला
क२ रंजनाह । दूदा अंग्रेजी मालेनमे
बहलनाव एको शेरद अंग्रेजीक प्रयोग
ले केननि, ए सभसँ आश्चर्य नागन ।
समय सेहो रेंगी भ२ जेन दुनैक ।
तद्वमे रंसक ठकठक नाँ सुनि आबो
मन दोसब दिस जाए नगन । हूँए जे
रंस ल डूँष्ट जाए ।

आ. अमरिंहार-

अहाँ कि सभ रंजनि ?

ज.प्र. मांडन-

आभावो ब्यक्त करैक अरसब ले
भेँन ।

आ. अमरिंहार-

भोजन भात केहेन बहलै ?

ज.प्र. मांडन-

नीक बहलै । सग्यष्ट शेरदमे
बिरेकाजी कहि देनथि जे अंग्राहावक
रेंसथा अडि । दूदा थीब-गुड १
थूँअर ।



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

श्री. अमरचन्द्र- कते रैजे सता भरणसँ निकलौ ?

ज.प्र. मांडन-

दससँ डुगव रैजि गेल । मल
छुटैपछाए नगन जे एक तँ गली-कच्छी
बस्ता, दोसव थान-कीट सेहो, बिक्रमो-
छेम्पु भेटैत ले । हवि-थाकि रैस
मछेपुड रिदा भेलौ । सबकारी रैसक
छिकछ, तँए हूअ जे रैस नहिये
पकड़ एत । फूदा किछ दुव गेलापव
बिक्रमो भेटै गेल । ओ कहनक जे
हमरा बुझल अछि, रैस निश्चित
पकड़ एत । संगमे आनन्द फूलाव
माझी सेहो बहयि, हूका छिकछ ले
भेलनि । भोव होगत घबराव पछूट
गेलौ ।

श्री. अमरचन्द्र-

छुटैत-रैजि जे भेल होग, तग
सँभये किछ कहियौ ?

ज.प्र. मांडन-

उना चेतना समितिक निर्णयानुसार
छावि गोष्ठेकेँ सम्मानित करैक रिटार
हुननि । पहिल, छेपेगोव साहित्य
सम्मानसँ सम्मानित हम (जगदीश प्रसाद
मांडन), दोसव, साहित्य अकादेमीसँ
सम्मानित करि रिताद जीक (श्री उदय



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

छन्द सा रिताद), तेसब, हरा
साहित्यकाव आनन्द जीक आ टाकि,
अनुरादक खुशीनाम राबूके (श्री खुशी नाम
सा) । ह्रदा ओ दुनु गोठे (रितादजी
आ खुशीनाम राबू) ले पहुँच सकन
हुनाह ।

चेतना समितिक सभ ले, ह्रदा किछ
गोठे एहेन सक्रिय हुनाह जिनका
विषयमे किछ कहल गिना ले बहि सके
छी । ओ हुनाह रिजय राबू (श्री रिजय
अमाव गिरी), जे खेरा कान घुमि-घुमि
देखैत बहनाह । दोसब हुनाह श्रीमती
प्रतीमा सा । जे एते उमेर बेलागब,
तहुमे जेहेन परिवारक छथि, फियाशीन
जिन्गी रीना जीरि बहनी अछि । जे
अनुरादक पात्र छथि । रिताका राबू आ
दुनुजी छदैनँ चाहितो, नीक जकाँ ले
क२ पाँरि बहन हुनाह, तेकर कावण हुन
दुनु गोठे नर छथि (कार्यक्रमक भावक
थियानमँ) ह्रदा जे जित्नामा करैक
ननक आ उत्साह छन्हि, जँ मही
दिनामे रँठ रँथि तँ जकर किछ क२
देखौता । तग जेन दुनु गोठेकेँ
अनुराद दैत छथि । रिताका राबूक
अ ग्रन्थ संग्रह देखाएन जे संग्रहरादी
छथि । असाधारणक अल्लो कावामे



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सुगहै रौजरी सेहो एकठा काका
होगत ठेक। सभसँ अंतिम दृष्ट आबो
लोचक अछि। दस रैजैत बहए।
कतावरौदी भोजन शुक भेल।
धड़फड़ एत बहरौ कबी, जा क२
पाँतिमे नगि गेलौ। पाँति नमहब,
तैयो पाष-सात मिष्ट घुसुकि क२ किड
आगु रैठलौ। तीनु गोठे (हम
आनन्दजी आ अखिलेश) एके ठाम
बली। तही रीच धड़फड़ाएन घुमेत
छुल्लुजी पहुँचल। देखिते पाँतिसँ
निकानि कमीगब रैसा देननि आ कहननि
जे लल अरौ डी। गेना तँ
धड़फड़ एते दूदा गले ल अछिनि।
दोसब ठाम गले ल भेटेनि। हमब मल
डनगन जख जे रैस दुष्ट जखत।
नहिये थाएरौ तँ कि हेतै, पाड़ १-
रैसमे अपेक्षे चनरौ नीक होग छै।
हुँख जे दुप्पे-चाप उठि क२ रिदा भ२
जाग। हेब हुँख जे नहिक हंगाम
ठाठ भ२ जेतैक जे दू गोठे
रीचेमे सँ हेबा गेना। रिदाव ठमकि
गेन। मल पछि गेल, रैबिआती।
अपेक्षित रैठोक रिआहमे रैबिआती गेल
बली। ओल रैबिआती जिगगीक पहिन
डन। थागले रैसलौ, नीक-नीक
रिग्यास रैगन बहै। शुकहेमे भवि प्छै



छट्ट । देनिई । छट्ट लोक रौद टाक
कात चकोना हूँ नगलौं जे कियो
एकौ छोटे उठतह तखन ल उठै ।
मे किम्वना देखै ल कविई । गव-
होवि-होवि रैमए नगलौं । आसन
नमहव उँ गव नगा सुतियो सके
डी । हूँ जखन सुतरै कि अलले
हमना हेतै जे एक छोटे खागते-
खागते ठुगवा गेलाह । अगलगव थोस
उठै जे अलले एते किअ थेलौं ।
हूँ करिबौं की । चारि घण्टा खागमे
रविआती नगोननि । अधमोगति भउ
गेन । हूँ जे एँसी नीक जहने जे
तखनो तँ लोक आँ 'घवा-ठुगवा'
सुतेए । एतरे ली एँसी आगु भेल जे
खागकान तेहेन गप-सगक ठाँका छलै
जे हूँ कही पेटक गदगदीक संग
थेलहो ल निकनए नगए । कहूँ-कहूँ
कउ अगलकै दारि-दुरि पाव नगेलौं ।
हाथे धोवकान ठुली बिजनाहा हाथे
काष पकड़ि सप्पत थेलौं जे एहेन
रविआती ली जाएँ ।

हुन गिना कउ समारोह प्रसिन्गीय
बहन । अगिला मान आवो रैसी नीक
होए ३ शुभकामना । देखैक हकाव
भेँए, तेकव प्रतीक्षा बहत ।



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ई बाबागब अगब मतिर ggajendra@videha.com गब
गठिड ।



१. बाबादेर मण्डन- जगदीश प्रसाद मण्डनक करिता



मंगल बाति-दलक मण्डनक २ डा. धनकर ठाकुर-
मण्डनक - मूल तितनी आ तुलना (लेखक -श्री सिंगाराम सा
मरम)

१



बाबादेर मण्डन

जगदीश प्रसाद मण्डनक करिता मंगल



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

बाति-दिन

:: समीक्षक बाजुदेव मांडन

मैथिलीक नर करिताक निवर्तव विकास भऽ बहन अछि । श्री
जगदीश प्रसाद मांडन पूर्ण नियंता आ तन्वीरताक संग अ विकास
कर्ममे संलग्न छथि । आ तेकर प्रतिफल समुद्र अछि- करिता
सोथी- बाति-दिन । ए सोथीमे 52 गोष्ट करिता संकलित
अछि ।

करिता भार, बुद्धि कल्पा आब शैलीक समन्वित परिणाम थीक ।

ए गुण आदिम अर्द्धशत मानस सृजनक गम्भीर, सचेत प्रक्रियासँ
संचालित भऽ सकैत अछि । तग कावशे करि अत्यधिक
संवेदनशील होगत अछि । हरेक कानाबधिये मनुष्यक अन्तर्गत
अज्ञानता पालित-पोषित होगत बढै छै आ ओकर जखन
तुलनागत होग छै तँ जन मानस आन्तरिक संवेदनसँ भवि
जागत छै । मोह भंग भऽ जागत छै । ऐकतीक अन्तर्गत
उपजे छै । रिदाह, कूठा, आकाश, सवास, स्फूर्ति, आत्मा
ब्रह्माक सरोवरी । अही सरोवर अतिरिक्त मैथिलीक नर
करिता थीक ।



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

माउलजी सन सरेदनीन करि जे ए यथार्थकें भोगल छथि से
केना छुप बहि सकैत छथि । हुनका लेखनसँ तँ सघर्यक सब
निकलै कबैक ।

“ जिनगीक होगत सघर्य ।

सीमा रीट जखन अरैत

मटरै नलैत दुब-घर्य ।

घर्य-दुबघर्य रीट जखन

जिनगी कबै बस्मा-कस्मी ।

रीट सङ्ग सिबजि यथान

पकड़ै नलैत अगन-अगन बस्मी । ”

(सघर्य)

करि अखंड बाज भोगी सतगुर रंगल प्रभाव करैत कहैत
छथि-

“ ससक खुनन रीन पकड़ि

नाग-नागिन कहैत नलैत ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बागे त धवती ठेकल दे

अथर्ष बाज भोली दे ।”

(माणर गुण)

किड लोक रूकगिया रंगन अछि । हलक म्हा गिवगिष्ट जका
बग रदलैत बहैत अछि । सगाजकेँ दिना भ्रमिात कलैत अछि ।
ए समरन्धमे करिक उक्ति अछि-

“ गिवगिष्टिया मन्त्रकथो तलिा

दिन-राति रदलैत चलैए

गीवगिष्टैक जलब सिबजि-सिबजि

रीथ उगलैत चलैए ।

भेद-हभेद मर्ग रिषु रूमल

देखा-देखी उठैत चलैए

उठि -उठि ओमवा-सोमवा

डुरैकगिया काष्टि मलैए ।”



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

(सोड म, भाग-२)

मनुष्यक बीत-गीत आ रैरहावमे कतेक परिवर्तन भऽ गेलैक
अछि । रैदलैत जूग-जमानापर हिनकर कहबै छलै-

“जूग रैदलन जमाना रैदलन

रैदलन गेल सभ बीत-रैरहाव ।

छानि-छानि सेहो रैदलन गेल

रैदलन गेल सभ आचाव-बिचाव ।

झुदा, बाति-दिन एको ल रैदलन

ले रैदलन छल, मुर्झ, अकाम ।

पुवरा-पडरा सेहो ल रैदलन

ले रैदलन जिनगीक बिसराम ।”

(जूग रैदलन जमाना रैदलन)

अथेज्जी बायापर शेरदक ग्रहाव करैत कहैत छलै-



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

“ अथेज्जी पठ्ठि अथेज्जिया रैमि-रैमि

पपप्पा-मन्नी आनत घब ।

रौप-दादाक कि भेद ओ रूमत

अछि -अछि रौजत निडव । ”

(घबक लोष्टिया रूचल अछि)

समाजक कप रूषि ए पाँतिम नकित भऽ वल अछि-

“ अगम-अथाह कप समाजक

असथिब भऽ मागव कहलै ।

रैथी रूम्मी रौच-रौच

ओला-पाथव रैविसा दग ।

परिते पाँरि पृथरी पमवि

धविसा-छानि धडै नलै ।

ऊँधी-रौमी खेन खेलेत



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

मोक्षण-बाब रैखैए नछैए ।

धुक सुगामी मगाज कछै-कछै

धुकछी जाति रैखन छै ।”

(अपमगव)

नर किम्वद प्रयोग मरदनशीलता आ मरिक्तिकै मंगे लेखैरक
छाली । आ मे मरिदन जीक करितामे विषयक अश्वकप किम्वद
प्रयोग भेल अछि ।

“मिनहोबि मीन खेलागत बगैछि

आकर्षित-आकर्षण करैए ।

प्रेमान्गद पसिंते पारि

प्रेम-प्रेमी कहैए नछैए ।

पारि प्रेमी प्रेमी जखन

मागव गंगा मिनए छैए ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रौमक पुन रौमा समुद्र

गंगा-सागर स्नान करे।”

(गीत)

“अजस्र धाव तरसाव सजन छै ।

नाछ एक खाली पाछ छै ।”

(संघर्ष)

संघर्षिक अश्रुकुन रिमर, नर उगम, प्रतीक नर करिताक लेन
साधन मानन गेन अछि । आ मे ए संग्रहक सब करितामे
परिणामित भऽ बहन अछि ।

“जहना धवती अकाम रीट

गाछ-रिवीछ नहनह करैत ।

तहना रिरैक रिटाव संग

सदि हँसि-गारि कहैत ।”



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

(धिया)

मण्डनजी धिया करितामे शैली आ भाषाक सम्पूर्णमे कहल
छथि-

“सम्पूर्ण शैली, शैली सम्पूर्ण

शैली कोय निबद्ध नली छै ।

जड़ा -जीप गकड़ा भाषाक

समाव-साहित्य गढ़ नली छै ।”

वातिक अरमाण भेनापव दिक आगमन निश्चित होगत अछि ।
जे कष्टमय अछि । वाति-दिन सखन परिवर्तित शैली अछि ।
शैलीमे व्यापकता सेहो अछि । वाति-दिन करिता संग्रहक
शीर्षक अग्रक अछि । करिता संग्रहक भार, विषय, उद्देश्य
गत्यादि ए शीर्षकमे छिपल अछि ।

साम-भाव करितामे करिक कथन उजागर भेल अछि-

“केकरो साम केकरो भावे छी

केकरो उदय केकरो अस्त छी ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

दिलक अस्त सँ अगव डी

बागतिक तँ उदये डी ।

रौबहे घँ दिला चले डे

ततरेँ पी ल बागतियो लोग डे । ”

पुवाण ठाँ आ खुँ रिडिन्न भ२ बहन डे । नरका-नरका
जिन्नगीक खुँ आ घब ठाँ कबए पड़ते । तँ करि “चेतन
चाँ” करितक मायामे कहल छथि जे ए कान चेतनक
थिक-

“चेत-चेत चनु चेतन चाँ

सबसँ गत सम्य समरे ।

सम्य जोड़ि कतरौहि जखल

ठहकि-ठहकि नखल कहै ।

आगु डेग उठैसँ पहिल

चाँ दिशा देखेत चनु ।

चाँ को ठेकना-ठेकना



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुसिंह सन्कल्प **ISSN 2229-547X VIDEHA**

आगु देग रैठरैत चू ।”

तँए जिनगीमे सीखरौक उगफम होएरौक चली । रिस सीखल
किड ले भ२ सकैत छि ।

“जिनगीमे किड कवरै सीखू

जिनगीमे किड बडरै सीखू ।

सभ जलै छी, सभ देखै छी

अठ्ठान-अठ्ठान रैन-रैन अरै छी ।

सठ्ठान-सठ्ठान तखल रैनरै

सघर्यक रौठ जिनगी बडरै ।”

(किड सीखू किड कक)

“झूठक मालि” करितामे करि ननकावि क२ कहि बहन छथि-

“झूठक मालि रैजौल कि छैत,

काजक मालि रैजरै पड़त ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

होमकला-थोथ अल्ल की

सुभव दला उंगजरेण पछत ।”

कहराक तातपर्यं ए अडि जे सिबिह गान रँजोले किड ले
हेधत । कर्म करे पछत । जगसँ देस-दुनियाँक कल्याण सँभर
भऽ सकत । तँ कशीन हेधरँ पवमारम्यक अडि । तखन
अगल गतिहास लिखि सकैत छी ।

“ कर्मक स्रबनहरी सीखू

अगल गतिहास अगल हाथसँ

सुराक्षितमे लिखनाग सीखू ।”

अगल गतिहास अगलसँ सृजन कवरँ रँहूत कर्षण कर्म अडि । ए
लेन सतत कर्म आ रमिरास छली तखनहि सँभर भऽ सकैत
अडि ।

हम अडि छी तथापि एतरी धरि जकब कहँ जे प्रसन्न
“ वाति-दिन” पोथीमे रौधक अल्लकन नर रीमरँ, प्रतीक, नर
उपमान गत्यादिक प्रयोग लेन अडि । भाषा-शैलीमे



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक ISSN 2229-547X VIDEHA

आधिकारिकता अछि । मिथिलादेशक गंध संग्रहित अछि । स्वामी
पाठकगण संग्रहित कबतह । आ संग्रहित बरकरारक लेन पाठक
रहित ।

२



डा. धनकब ठाकुर

समीक्षा - हुन तितनी आ तुनरून (लेखक - श्री सिंगाराम सा
'सबस')

समीक्षक - - डा. धनकब ठाकुर

३.७.२०१२क श्री सिंगाराम सा 'सबसक पोथी' हुन तितनी आ
तुनरून क लोकार्पण बाटिमे भेलहि जाहिमे श्रीमताजी, पठना
द्वारा अतिथि भुगत ।

पोथी लेखी आ ह पि ना ना -१ यानी सतवंगी अक्षरव्ययक
वंगक जकाँ आरंभरना सात कडिमे आ प्रथम अछि तकब विशेष
संकेत पृष्ठ ४५मे (बौरा दिनकबमे पनिरौडा गीतके तीतव
सातो वंग हविष्ठा देरौक भुन).

पोथीक अलक पन्ना वंगीन अछि , राजागयोगी अछि आ
संस्कारवर्धक (पृ. २०मे अष्टी-रैष्टी नहि कह), आ उल्लेखवर्धक प्रायः



गान्धर्व

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X, VIDEHA

सर्व पन्ना अछि जेना दिसक नाम(पृ. ३+), गाडीक प्रकाश(पृ. ३६-
४०), बाँपुक चबखा, सटिन, धोनी, रिज्जापति, मडेना, आरंभकता
आ आरंभकवमे मेथी लेनसँ मिमोगन कपूठर तक, ठाकाक नाथे
(पृ.४२-४३मे) कपाक नर निशान, खेन-खेनमे(पृ.४४-४५.)
कस्तुरीम ओम्पिक तक.

रिज्जापति लेखकक प्रिय विषय अछि (पृ.५५-५६), रिज्जापति बाणीमे परन
रिज्जापति तकके चर्चा अछि सगरी मिथिला-मैथिलीमे प्रेमार्थक
(लेनाक मायस पृ. ७-१ मे नीक रीत कहन गेल अछि जे
मैथिली रीज्जापति पठनरना सेहो नीक पद पब पहुँचैत अछि),
मिथिलाकबहुँ अछि अतमे. मिथिलाक एक नक्शा कतहुँ बहिनस से
नीक (अनिना कड़िमे देन जाय), खेन -खेनमे सेहो बास,
प्रश्नक चर्चा(पृ. ४४-४५.), जगदीशचन्द्र रैसुक हँसत-कलित गाढक
कपमे भुत रर्षि(पृ.४६), मागवक रैरिष रर्षि(पृ.५३-५४), रिज्जापति
प्रश्नातरी(पृ. ७+), आरंभक माय आरंभकता(पृ. १२) मे
भावतक अक- श्रुतक अरदान आदि.

म स मिथिला आव लेखक क माय सेहोसँ आव की की ले (
पृ.५३.)- एक कड़ि एहिना अ, आ सँ उ तक रैनायन जा
सकैत छैक रैनाके अण सँकृतिक उल्लेख दैत.

सर्व पन्ना सटिन अछि ताकि लेना रूमि सकय

अधिकारी गीत गेल अछि

मल्लोत अछि रीज्जापतिगो ज्ञानि रहुत ठाम राकवक नियम पानन
ले लेन - जेना शोथीक नाममे हुनक रीद अपरिवार (कोमा)

रैना दुनरुनक नामके लेना त्रैकाक उँचाक हुनरुन



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक *संस्कृत* ISSN 2229-547X **VIDEHA**

औ एहेन अंकक ठाम (पृ.१४,.....)

बानक -बानिकक जे छि द्रुथपूछा पब देखारन जेन अछि
ओहिमे कोला गायक बहि, गेहबीआ रिक्कामकक पविद्याक (पृ.२४)
जखन की गायक छिज पब रूतु चर्चा अछि -चेत
करछी(पृ.३०), मोट्ट, मोट्ट(पृ.३१)मे किमलक महिया) आ
पर्यारका(पृ.२२,२२,२३),आ वंगीन आर्ट पेपल पार्क फुलआ तितनी,
छुन मल ले क जंतु मसार डगल छैयक पनिरौडाक वंग, गाढ
बोपिह फलदाव, दादा-दादीक बोपल गुनारक फुल(?) आ आन
फुल पब रूतु चर्चा अछि, मोकडन , दूतियाक टास, (पृ.२३)क
टुगुनी, २३, २१, २९ क आन, पृ.३३क रंगना, पृ.३३क फुलरती,
बौरा दिनकव, ३ धवती, मागवक संगदा, धवतीक सिगाव छिडी-
टुगुनी, गीध जका दुर्लभ छिडी ले रैटरयके आग्रह, जाडक
बोद, भूत रंगमे गाढ (पृ.४९), गाढ बोपिह (पृ.३१), मागवक
सैव (पृ.३३),छिता कछु म रैटर जल-नल-सुनके(पृ.३३),
कछुमछी(पृ.३१). एही लेन आ सुतवता हेतु, बौरा पौता गीत(पृ.
१५) मे अछि पर्यारका, जल जीरन अछि (पृ.१३-११)मे जल
मलय आ जल डाजक रीत अछि,बौरा मावक बिराध(पृ. १९-२०)
आदि.

झुदा हेंपी रैथे डे(पृ.१४)आआर्ट पेपल पब पब मेहो शुभ
जगदिन आ तहिना दु-दु रैव हेंपी दिरानी आ हूरा
जोनी(पृ.३४)मे झुदा तबदुतिया आ जोनी बहि भेठन जे सरस
अधिक प्रिय रैचाके

स्नासु सरंधी नीक जानकारी(पृ.१३) संतुनित आहार (पृ.३३) नीक
अछि जे नुन आ छीनी कम खेराक अछि आ फल फुल माग
खेराक आ पौष्टिक आहारक (पृ.१३) झुदा छैयली चर्चा ले
बहिन त नीक (पृ.२+), आमा मागक पौष्टीयमे (पृ.३२) ग्रामीण



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बुद्धि मे तुलसी, लखौ आदि ठीक कदा धारी हर्ष मदा पथ्या
ले देखल .

संकाव लेन अलक रौत अछि ((पृ.१३,३४) नरै जठा - जठाँष,
रिप्याथीक पथ लक्ष्मीक सचि रिबका(पृ.३६), सब-कट्टम (पृ.४+),
सीथक लेन तीथ(पृ.५२), रौनत्रेयक रिबका(पृ.५३) अ ठीक रौत
ले .

समाजक विविध भागक जानकारी लेन कृष्ण लेन अनीथान
(पृ.३०), कावीगव (पृ. ३१-३२),

बाहुनक माता यशोधराम प्रेम मार्गिक अछि (पृ.३६) पिताजी कत
जोनाह ? आथव यागक धृष्टी मे शिक्षाक महत्ता अछि (पृ. १०),
मुनमि(पृ. १३-१४मे) सस्मिता, समर्पण गरी, सचि, कलाय रौनक
गाथा टिबङ्गछ्छी, मुसक सतत कर्म जका.

भावत भक्ति रंग संगीतक रूपा (पृ.११), प्रगति चित्र अछि(पृ.
१५) आरी लेन अलेदाले लेव आ अलक रौनसुनत गीत यथा
(पृ.५१),

अलक सुधाव अलिना संकलमे संतर अछि-

ले नी आ ह पि ना ना क मैथिली पुवा कग देनाअ नीक जे
करल पीअ व लेन लिथी देनाई भयजागत (पि नहि)

पृ.६- माता के यात्रा नहि मात्रक यात्रामे (आ तहिना रौराक
अंगुली (पृ. ५१) 'रौरा के अंगुली' क जगह), दीर्घे कीस दादीजी
नीक बहेत -(कुनमे आर मिस पढ़ैत छथि दीदी कहाँ ?)

पृ.१० एम् एन अ क उद्गाता सटीक ले



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुसिंह सक्सेना ISSN 2229-547X VIDEHA

पृ.११- छठापछा मोह ?

पृ.११- 'रैछे - रैछे' सपनामे, पृ.७३ मागवक 'सैब' मे हिन्दीक
छाप अछि ('सै' आन अलक आला ठाम अछि)

पृ.१२- 'कुनमे' जाग्रत रैछा जेन हाती आ एहिना सँ मोह,
कियेक- या त नर्सरीक रैछा जेन केरन अनग अध्यास हो
(बौद्धक रैछा जेन आ अनुपयोगी गनत उँटाक सीखसँ जेना
रिक्छति(पृ. ३५) ?

पृ. ३५- ७० अक्षरालक गतिहास छनि त हुनक पिताजी ले
अबैके आरैक छन आ मागके ले अबैके आ तपक हुनका
प्रयोजन ?

एहिना रैहूत ठाम

ध्यान बाथी जे कोना कितारक पाठकबन्धक आह यदि तय अछि
तखन ओकर विशेष आह रक्षा जेन टीज रैछि होयबैक छानि

गुरुद्वयक सात वंग ले सात रय तकके रैछा जेन पोथी छव
रय जेन अनग अध्यासमे बहक छन आ जालीमे पहिन माय जेन
दोसब तुनरुन जेन आ एहिना होगत पाछे छठम जेन निथेत
कान शैकक 'अपूर्ण' पाछे रयै. जकब याद बाथक छानि -

कार्यक्रममे गीतके प्रस्तुत कबसँ जे रौनक-रौनिका छनयि
ओहिमे अधिकशि शुद्ध उँटाक कय सकसँ आहुरक छनयि (पृ.
३०, ३१, ३२) आ ध्यान बथेत अध्यासभाजन अगिला कड़ीमे
जकब हो.



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मल्लोत अछि एतेक परिवर्तनसँ तैयार कितारैक ठीक सम्पादन बहि
कयल जेन आ जे कियो सबसक गीतक प्रशंसक हुनह ओ सब
एकव गीत रैव-रैव सुनि-सुनिकय सेहो केरल नीक-नीक रौत
रैजगरेना हृदा सगाजमे सुन आनोचक सेहो करी ले

पौथी लेखक सबस भवनी दादा बहि भेनाह अछि (जे रौदमे
रौत केना पब मानुम भेन) हमरा नागी बहन हुन जे अ सबस
कका(पृ.३) बहि सबस दादाक उपहार अछि लेना त्रुष्टका लेन
जे अलक ठाम आयल अछि - रौरी, पौता संवाद(पृ. १९),
रौरीक अंगुरी (पृ. ५९) (रौरी के अंगुरी बहि).

+४ पृष्ठ + २४ आर्ट पृष्ठ पौथीक मूल्य ९०९ कपा अधिक ले अछि
(जे कियो २०० कपा बाधि सकैत हुन)- सबसजीक संपर्क -
9931346334, 0651-2560786

(NOTE-ठाकाक जगह रैगुसबायक कपा लिखै हमरा नीक मल्लोत
अछि जे बाणी रिक्ठावियाक टादीक/ सिक्का/ कपा टाल जालिस एक
ठाका रैगल अछि)

ए बचसापब अपन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**



१. जराहब नान काष्ठग- बिरुनि कथा- जमाना रैदनि



गोले २. जगदानन्द ना मन्त्र- बिरुनि कथा- मसोयात/



बल्लभ ३. स्वजीत कमाव ना- मिथिला पेशिञ्चक



बिदेहमे मांग रैठव -डुतामे मिथिला पेशिञ्चक
जगदीश प्रसाद मन्त्र- मधुकरा-सुदि बल्लभ

१



जराहब नान काष्ठग

बिरुनि कथा

जमाना रैदनि गोले

बमेशि रौरा दनाश पब रैमन बहूत आ बामना गारैत डुताह ।
रौरा दु छै रैठा खेन बहन डन । ओ दुख रैहूत ह्यो क२
बहन डन जग जेन रौरा कै रैहूत दिकत भ२ बहन डन ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानवीय

उपकरण, ISSN 2229-547X VIDEHA

उ रैव- रैव रैचा कै टुप बहय जेन कहैत डुनाह रुदा रैचा
टुप नहि भ२ बहय डुन । अ देखि हमरा सेहो तामस आरि
गेन । हम दुव रैचा कै दू थापव नगा देनियो । रैचा
कालैत आंगन टलि गेन । आंगन मे रैचा कै माय पुडनथिन्ह
"कै मावनको" ?

रौरा हमरा कहनथि रौरा जमाणा रैदनि गेलै । पहिने जे
रैचा आंगन मे कालैत पहुँटेत डुन तँ माय पुडैत डुन किएक
मावनथून्ह ? अर्थात् कि गनती केनही, आरि पुडैत अछि कै
मावनको ? मतनर ककब अतैक हिनात भेलै जे तैवा
मावनको ।

२



जगदाश्वर ना मन्त्र

ग्राम पोस्ट- हविश्वर डित्ठन, मधुबनी

दुष्टी बिरुति कथा

१. मसोयात



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

टाँचि रैबथक रौद, गामक गाँठि-गामि जेँ देह मेँ रैहि बहन
अडि हिनकोव मावक तँ सब काज-राज जोहि लाकरी सँ
सात दिनक डुष्टी नय कय गाम रिदा भेलहूँ । जेना-जेना
गामक दूरी कम भेल जेना-तेना हृदयक रँग आँव
गामक गाँठि पथ दूनु तेज भेल जेना । देखि आँ रैसक यात्रा
फेसँ खमे तेना रौद गामक टोक सँ पथले गाम हेतु रिदा
भेलहूँ जेकव दूरी कबीरँ एक किनोसीठव बहे । उनाहितो
असगव, समाजक नाम पव कला पव एकठाँ रँग आँ दोसर गाम
देखक जोनसा, बिद्या जोहि पथले चलैक जन धेवित कथक ।

अगल ठेन मेँ प्रवेशि करिते सभसँ पहिले जोठकी काकी पव
नजैव पवन । उना गामक सँघर मेँ उ हमार रौरी नलोत
हुनथि ह्रदा गाम मेँ सब कियो ह्रका जोठकी काकी कहि
सँघासित करैत हुनथि तर्ग हमार ह्रका जोठकी काकी कहैत
हुनथियेन । उँज्जव पठिया सारी पलीबल आँटव सँ साथ आँ एकठाँ
थूँट सँ नाक तक ह्रक सगल । वस्तु सँ आँगल जागत घबक
कोन्ठा पव ओहो हमार देखनथि, जा ह्रका गोव नागि आशीर्वाद
जेनहूँ ।

"कै... रैदू" जोठकी काकी कै ह्रक सँ खडखवागत अरौज
निकलन

"हाँ काकी "

"कलीया एनअ"

"एथन आरिअ बहन डी काकी "

"एसगले एनअ है "



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हो "

"आ दिखी मै कनियाँ, मिया-पुता मरै ठीक"

"अहाँक आशीर्वाद सँ सब क्रमेण-मरण, अहाँक की समाचार नीके
डी ? "

अ प्रेम स्मृति हूँका आँखि सँ लाव सहवचन नगननि लाव
लोकैक अमरुत प्रवास करैत -" कि रौआ, एहि समोसात कै
की नीक आ की रोज़ए, रोज़ए तँ ओहि दिन तय गेनहुँ, जहिया
अहाँक काका बरौडिये मै छेवि ब्रह्मा छनि गेना, आरँ तँ एहि
बूँठ ाबी मै कियोक पुँउ नहि देखै छहिए, देखना सँ सब कै
अमरण छैत छैक । नहि जानि बिधाता एहि अभागनि कै
आँउव कतेक उवदा देल छथि । आँउ महीना कै रौद ककरो
सँ दुःख गप्पा केनहुँ आ कियो हमरो द पढ़नक"

अ कहत काकी अपन लाव कै ब्रकलैत कोन्हा सँ अंगना दीस
छनि गेली आ हमहुँ गामक जिनगीक, बिधवा, समोसात, बूँठ ाबी
मोटेत आग बँढि गेनहुँ ।

२. बहाना

बौरा-बौराक विवाहक टानीसम बँधगच्छ । दुनु गोठे अपन सम्पूर्ण
परिवार कै रिट घेरएन रैसन । टाककात एकठा खुशीक
रातारका रँगन । सब कै द्रव पव हँसी, खुशी आ प्रशिक्षा
मनकि बहन छन । बौराक पंद्रह रँवचक पोती, बौराक गवदनि
पव पाछु सँ लटक कए स्मृति पढ़नक -"बौरा एकठा गप्पा पढ़
। "



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

रात्री - " हाँ गुँठे "

प्योती - "रात्री-रात्री हम अहाँ दुनू केँ कहियो संगडा कबति नहि देखनहूँ, एकव की बहनु छैक । "

रात्री नज्जागत अपन प्योती केँ कह्या सँ उतारैत - "छन पगनी, एकवाँ गी की हूँवा गेलै । "

रात्रीक छोटका रौंठा - "नहि मए गी तँ हमरो बूनेक अछि, गनाहितो हमर नर-नर विराह भेलए गी मए तँ चाहलै कबि । "

रात्री - " छन निर्मल, सरै एक्क वंग भए गेलै, अपन राबू सँ गुँठे हूँका सरै बूँसन छनि । "

छोटका रौंठा राबू सँ - "हाँ राबू अली कहूँ न अपन सफल विराहिक जीरणक बहनु । हमहूँ अहाँ दुनू मेँ कहियो संगडा नहि देखनहूँ, गी मए हमरो दिय न ' (अपन कमियाँ दिय देखे क) देखूँ न निर्मल तँ सदिखन हमरा सँ नडिते बहैत अछि । "

रात्री, एकठाँ नमहर सँस लेत जेना अतीत केँ देखेक प्रयास कए बहनु छथि । छोटका केँ माथ पव मर सँ हाथ सहनारैत रँजना - "एकवाँ कियो संगडा कहैत छैक ? अहाँ दुनू मेँ जे मर अछि ओहि मेँ किछ लोकर-मोकर भेलाँगे सेहो आरंभक छैक । जेना भोजन मेँ छैनी, जीरण मेँ सरै पक्ष केँ अपन-अपन महन छैक अरु हाँ गी मात्र लोकर-मोकर तक बहरा चाहि संगडा नहि, नहि तँ एहि सँ आगु जीरण नक भए जागत छैक । पती पत्नीक रिचक आपसी समझ नीक अछि तँ स्वयंको कोला जकबी नहि आ यदि समझ नीक नहि



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अछि तँ नर्कक कोला आरम्भकता नहि ओहि अरम्भ मेँ ङ
जीरल नर्क अछि । "

सत कियो एकदम टुग एकाग्रता सँ हुनक गप्प सुनैत । टुप्पी
केँ तोडैत राँरा आगु रँजनाह - "बहन हमर आ तोहब म
केँ रिटक मरैछ तँ ङ रँहूत थवान गप्प डैक, जखन हमर
दुनु केँ रिवाह भेल आ हम दुनु एक दोसब केँ पहिने रँव
देखनहुँ तखन हम तोहब म सँ रचन जेनहुँ जे जखन हमर
मोण तामे ' तँ ओ नहि तामेती आ जखन हुनकर मोण
तामेतनि तखन हम नहि तामेएँ । रँस ओ दिन आ आङ
तक हमरा दुनु केँ रिट लोक-लोक भेल मगडा कहियो नहि
। "

२



सज्जीत कुमार झा



मिथिला पेंटिङ्गक बिदेहमे माँग रैठव -डुतामे मिथिला पेंटिङ्ग



मिथिला पेंटिङ्गकेँ देगे बिदेहमे माँग भऽ बहल समयमे
पेंटिङ्ग रारमागीमभ नयाँ नयाँ टीजमे पेंटिङ्ग रैना कऽ
रैजावमे आबऽ लागल अछि ।
एहि क्रममे जनकपुरक नारी कला केन्द्र कऽ डुतामे मिथिला
पेंटिङ्ग पाँच रैजावमे आबऽकेँ तैयारी कऽ बहल अछि ।
केन्द्रक प्रमुख सतोष मिश्रक अग्रसार जल्दीअ अनुवाहिये
रैजावमे मात्र नहि जनकपुर सहित सभ ठाम एहन डुता भेटैत
। साठे तीन सय कपैया सँ साठे चारि सय कपैयामे ओ डुता
उपलब्ध रहैत । नारी कला केन्द्रक मञ्जुषा ठाकुरक सहयोग
कऽकाव मिथिला पेंटिङ्ग रैना डुताकेँ आयति देल जाय ।
केन्द्रक प्रमुख मिश्रक अग्रसार डुतामे मिथिला पेंटिङ्ग बाखऽकेँ
सम्राट अष्ट्रेलियन नागरिक ऐनी मेन्डिस देल जऽयि । हुनकर
सम्राट अग्रसार डुतामे मिथिला पेंटिङ्गक रंग देल गेल ओ



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

करनहि ।

मिथिला पेरिस्टिअ रैना छुता अमेरिकाक सभ्राह्मणे होरैरैना
सांस्कृतिक प्रदर्शनीमे सेहो बाखन जाएत । १९+९ अ. मे
जनकपुर बगवगानिका १२ क्रामे स्थापित नाबी कना केन्द्रमे
मिथिला पेरिस्टिअ सँ जुडन रिभिन्न आधुनिक रैनाउन जागत
अछि ।

जनकपुरमे रैना मिथिला पेरिस्टिअकेँ अनुवांशिकीय सुबमे रहूत
सांग बहन अछि । एहि ठाम लगानी कागजमे मिथिला पेरिस्टिअ,
अना, कग, मिनाअ कठाअ, सेवासिद्धिक सामानसभ रैनाउन जागत
अछि ।

अमेरिकी नागरिक तिनय बर्कटद्वारा शुरु कएन गेल नाबी कना
केन्द्रकेँ एखन अष्ट्रेलियन दूताराम सहयोग क२ बहन अछि ।

४



श्री जगदीश प्रसाद मंडल

नम्रकथा

सुनि भवना



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक चर्चा ISSN 2229-547X VIDEHA

रौनगमे लागल छै जिला अधरेने रा बूठ १५ १५ मे उगल
जागत तल्ला डोमीकाकारै रैथी रिखाहक छै मान दिक
पढाति उपकननि । रोगाएन अरमथामे जखन कियो जिनगी-
मृत्युक मटकीपव नून नून तखन जिला धर्मजाक दरबार
नून तल्ला हूँ नून नूननि । निष्पक्ष समीक्षक जिला
साहित्यक कोष-कोषक समीक्षा करैत तल्ला डोमीकाका सेहो
कवए नूननि । अन्तो-अन्त अली निष्पक्षक पढैत जे
गाममे बहल जिरन-यापन ले क२ पाएरै तै रीष पवदेने गेल
जिरै अन्तर्गत अछि । केषा ले अन्तर्गत होएत ? पाँच रीया
जमीनरौना डोमीकाकारै दु रीया घर-घराइ म२ क२ गाडी-
रिबडी, खबरोबिमे रौनदएन रौकी तीन रीया जोतमीन ।
समाजोक देखा-देखी आ फर्दुमो-परिवारक मतबक अन्तर्गत तै
कवए पढतनि । जिला धर्मोक मरकप समागमनार रौदनि
जाग छै तल्ला ले समाजोमे जे रौमी नाम-नामसँ रैथीक
रिखाह आ माए-रौपक सबाध करैत ओ समाजमे ओते उँगव
होगत । ततरै ले जग समाजमे दोससँ रौमी दुहेन बहेत
तग समाजमे ओहो धर्मोनाग तै जकमिये होगत जे अन्तर्गत
कि मोब डी ।

दनाशक ओसबक दन्तिरौविया टोकीपव छित भेन पडन, दल्ला
हाथ मोवि दुनु आँखिपव लेन डोमीकाका परिवारक रौदलेत
मरकपक आँखि पड । मोटि बहना अछि । मनमे उँगननि
गनती अगला भेन । ओ तै नजबिपव आएन जे समाज आ
फर्दुम-परिवारक देखोम कवरै जकवी अछि दूदा ओ ले आँखि
मकन जे ओहमे पतिआनी नून अछि । एकठाम मत समष्टन



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

कहाँ छथि । बैयाबियोमे तँ होगते अछि जे सगे-सग
जिखगी रँहोमिहोमि पितिगत रँहिक रीट एककेँ गँजोमिहोमि,
डाँकठेव सगी तेठैत तँ दोसबकेँ अँहिसक किवाणी रा सुकुनक
मिस्सक तेठैत अछि । तूत तेन, आगु दिस तकलौं हूदा
पजबराँहि आ पाछु दिस ले तकलौं । एकबा केँ उँटित कहत
जे एक-उदक रँहो-रँहोरीक रीट गोमल-रँहोमल रँमि जाँड ।
पाँट रीया जमीन अछि टाक भाँ-रँहिस हिस्साक सग पाँटम
अगला दुनु पवाणीक हेरें कवत । जँ से ले हएत तँ अगल
जिखगी अणका हाथमे जेरें कवत । हूदा गनती तेन,
धड़धड़ कील । तहमे पनी आरो मल घोव कऽ देमनि ।
अ कहु जे अछूँमिनी भऽ केहेन रिटाव देमनि जे एँ गाममे
कर्ज ले तेठैत तँ हम लेहबसँ आनि देर । एकठा हूगी जँ
दसठाम हगल हूँ तँ ओकबा की कहलै ?

एक तँ ओलिया परिवार महजानमे ओमबाएन अछि तगपव हमरा
किबतरें समाजक ँगव आन समाजक कर्ज आरि जाँ, एहेन
काज जीता-जिखगी ले कवर । हूदा तगमे कनी ओगताग
तेन । ओगताग अ तेन जे पछुमि-तीस हजाव कपेये
कष्टीक टिख पाँटे हजाव कपेये भवना नगा देनि । हूदा
रीतनकेँ रिसवरें नीक । जँ से ले कवर तँ तूतनगु जकाँ
अगल देह-हाथ अगल लाटए पड़त । हएव मल भवना
जमीनपव घुमनि । केना लोक पारनि-तिहावमे सेव-पामेरी
नऽ खेतो भवना नगरैए आ रँहोरौ करैए । मलमे थोम
उँठनि, कानुल रँहल कि सुथनी हएत जे आठ रँथक पछाति
भवना जमीन घुमि जाएत, हूदा होग कि अछि । ततरें किअए,
जहिया महाजनीक मुदिकेँ सीमामे रँहल देन गेल जे दोरबसँ
रँसी कहियो ल हएत, तहिया रँहिक कर्जकेँ किअए ल रँहल



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

जाओ, जे ग्रामीण-दश (गामक लोकक जिनगी) आगु झूठे ले
समय पाओ झूठे समय बहन छि। जगतम एते महग
पठ १७ भ२ गेन छि, नाथक गमाज (शिवीबक) भ२ गेन
छि, नाथक घब रनि बहन छि तगतम कि उपा छि। ह
एते जकब हेरौक छी जे जखन सभ अपन छी तखन रीछमे
गमान-रैगमान ले रनि। जहिना रवमातक माममे एक दिसका
पानिके दैसब दिसका लोक तेसब दिसक वास्ता पकड़त
तहिना घीछा-तीवीमे डोमीकाक मल अमथिब भेलनि। पड़ल-
पड़ल पानीके मोब पाड़नथि।

आगमक उमावक शीतल पाठीपब रैनि दायबानी रिखाहक उमठा
गिनगी कबैत बहथि। हग्निक कबौड हवा गेनग, ओकवा त
कहर जकबी छि। जू मे ले कहलै त अलले ओ दम ठाम
राजत जे हग्नौ कबौड बाथि लेनक। कोन छिज छी जखन
एते छि भेलै कएन तखन एकठा कबौडै कि छी। जहिना
जिनगी रैगलैमे जिनका जेहेन कठिन मेहनति भेल बहै
तहिना ल तिनकब जिनगीयो ठाढ़ होओ। जू मे ले त
नाथक जिनगी केना पाँच-दममे हारि मानत। हब दायबानीक
माममे खुशी एननि, अपना जू रौको डाँड़ नागन तैयो रैहबी
दादीके नह भेलनि।

छूँछन टंगेवा लेनियनि, नरका कीनि क२ देनियनि। केना ले
दैतियनि ओ थोछे रूमनथि जे हमरा टंगेवामे केरा-आम
छोड़ि दैसब छिज जागरैना ले छि। ओना हमरो त काज
छिज गेन भेल पुवना गेन नर अएन मे नीके भेल। पतिक



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अराज सुनि उमालेगव सँ एते जोवसँ रँजनीह जे डोमीकाकारै
रूमि पड़नि जे नगमे ले कनी हठन छथि ।

डोमीकाका नग तँ दायवाणी काकी पहुँचि जोगी दूदा मसमे अगल
घिवनी नटेत बहनि । एक छानि छनि जहिला घिवनी निशाय लेत
तहिला काकीकै सेहो भेननि । आँथि उठा तकरनि तँ
देखनि जे ग्रीफ़कारीन घास-पात जकाँ फ़मलनएन दूह,
जेठूआ गलेक मेघ जकाँ चिन्तासँ नादन आँथि, निबजन रणमे
हेबएन रँठेली जकाँ देखि मल सहनि गेननि । अपन कर्तव्यक
एहसास भेननि । शिंयासन जेन जहिला पानि, तर्रहन जेन पंथाक
हराक जकबति होगत तहिला चिन्ताएन मलक जेन सेहो मीठ
रौनक जकबत होगत अछि । आँचसँ ठरठरएन पतिक दूनु
आँथि पोछेत रँजनीह-

“एहेन सकन-सुबत किअए रँजनीह छी ?”

मिकीक राश सदृश पलीक रौन डोमीकाकाक छन्देमे रँधि
देनकनि । छठपठागत रँजनीह-

“उपाये कि अछि जे..... ?”

दायवाणी- “तखन ?”

डोमीकाका- “पबदेमि जाएँ । दूनु रँठेकै लल जाएँ, बहियो
कमा क२ देत प्छै तँ पानत ल । जू दमो हज्जब मलीन



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

कमाएँ ते एक रैबथे ले दु रैबथे, पाँछे रैबथे ते थेत
छोड़ गये जेई । ”

दासवाणी- “तग रीट ? ”

डोमीकाका- “अहाँकेँ जारें धरि रैबदास हएत तारें धरि बहरें
ले तँ भाँकेँ लेहब समाद पठा देरैनि । ”

लेहबक नाँउ सुनिते दासवाणी रैजनीह-

“अहाँ सत जखन छनिँ जाएँ तखन घबसे कोठिये-भवनी नर
क२ की कवरें । समोसातक छूँ जकाँ किअए ले ओकरो
सतकेँ फोड़ि-फोड़ि क२ फेकिये देरैग । ”

पत्नीक रीतकेँ डोमीकाका तारि गेलाह । कहनथि-

“हँसी-छठा छोड़ एहेन गकगब समए केना छपर, से रिटाव
दिअ । आथिब अछूँ तँ अछूँगिनिये डी किल ? ”

पतिक रिटाव सुनि रिटावराण पत्नी जकाँ दासवाणी कहनथि-

“पट्टेस-तीस हजार कपेये कष्टाक जमीन अछि । दम-राबह
कष्टा रैटि जेर, भवना छुटि जाएत । रूमरें जे तीन रीया
जोतनीय ले अठ गये रीया अछि । ”



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अथाठक पहिने रवथाक पहिने हुँ गड़नाई जे जमीनक स्वर्ग
निकलैत ठुल स्वर्ग डोमीकाकाकेँ पलौक रिठावये लगननि ।
रूसकी दैत आँखि-पव-आँखि गड़ । धन्यवाद देनखि ।

ई बचनपत्र अगल मतिर ggaj_endra@videha.com पव
पठाऊ ।

३. पद्य



३.१.१.

रुखी कागत-साठै करिता २.



करौ सा-

रौन गजन ३.



श्रीमती गवा मल्लिक-- रौन गजन



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानसिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



३.२.१. कुशा जी २. प्रशान्त मैथिल-रौन गजल



३. गंकुज टोडवी (नरनशी)४. जरातव



नान काष्टेप३. प्रति कमाव सुदर्शन



३.३.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर अमिन- १.रौन गजल/ २.की



भैरव श्री की लेवा गेल (श्रीमे गीत)(श्रीगाँ...) २. काशिनी
कायागली- टिप्पिक अलिवाष



३.४.१. अति मिश्र-रौन गजल २. उमप्रकाश
मा- रौन गजल



३.३.१

शिर अगाव गादर- रौत गज्जल २



शिर



अगाव सा- करिता/ गज्जल ३
करिता

किशोर कावीगव- हाग



३.३

छंद अगाव सा- रौत गज्जल



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



३.१.१. जगदीश चन्द्र साहू - रौन गजल २ बाजेमे



रुमाव सा- दूटा करिता ३. जगदीश प्रसाद माडनक
किछु गीत/ करिता



३.१.१. बाजोर वंजुन शि- रौन गजल २



मिहिर सा- रौन गजल ३. गजेन्द्र ठाकुर-
रौन गजल



१. रुमी कागत-माउठा करिता २. करी सा- रौन



गजल ३. शीमती अवा मलिक-- रौन गजल



१



रुक्मी कागत

१

छिंदगीक मरीटिका

नष्टैक बहन भन

गुडा गाढमे

बसन्तवन गीठ आगक

मेवावती मल

ननटागत जी

कहनक तेडि थाग अकवा

रुदा कि कवी



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुसिंह सस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भय डम परबेदावेक ।

मम ले मानवक

पागल झूहमे भवि गेल

होव मोछरू

रैम एगो तोक

तक डब केहन

यएह तँ निश्रम अछि समावक ।

सब थागत अछि

डुपि क२

कथला घबमे

तँ कथला रौहबमे

डूँट,लीट सँ रैले य२

अत२ सब अपन

यएह पथ पव तँ छैत अछि

सबक सब ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

पव सट जे अक्षतिग अछि

सतसँ अ अछि

अ गीठ फल ले

जहव अछि कोला

जे रैदनि बहन अछि

हमर नियत आ

हमर संकाव

जे द२ क२ अगल गिठासक नामट

मोकि बहन अछि

धधकैत भुष्टीमे ।

जिन्दगीक बाहमे

एत निर कतेक मरीटिका

पव मिथरै हम अकलेसँ

संघर्षक रोज नया मरीका ।



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२

ताकैत खिगगी कुड़ । दवेमे ।

देह नुखल

तेष्ट हाडी

आथि दूनु नाग डन ।

देखव, देखव

ताकैत डन हमरा दिस ओ

ओकवा झुथमे

अर्गत सराग डन ।

पठेनाक लेनले नागल पव

ठाव एगो मान्दग रौटा

फष्टल ग्वान नष्टेकोल

ठैगल डन एगो रौवा

अगल गीठ पव

देथि क२ ओकवा एना नागल जेना



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

ताकि बहल अछि अपन जिवनगी

गन्धगीक ढूँढे बसे ।

पब ले ज्ञानि कतेक मान्दग

कहिना पनपेत अछि अहि समावसे ।

नित तार्कित अछि अपन मज्जिन,

अपन भुरिया

अहिना कुड़ ाक ढूँढे बसे ।

३

संक्षेप

जोडि ज्ञानत मान्नी पतराव

उहलैत जिवनगीक बाहसे

अछि हसवत हुनकब कि,

थामेस पतराव हुनके अशि अहि मज्जबावसे ।

डी गब अहाँ प्रति हुनकब

तँ बानी रँषु अहि बाहक



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

उठाऊ पतराव आ मासी रैणू

जिन्दगीक अगण बाहक ।

एन छी अहाँ जतऽ तक

उगमँ आशुक कण्ठा कक

देख बहन अछि बाह गजिन अहाँक

झुंझुवागत उग पावये ।

छोडि कऽ मोह रठ वृष्क

सगला कक हरा आ पानिक

तरे रैणत राझिह अहाँक

अहाँक नामसँ अहि संसारमे ।

अहाँ अगव अगि छी हुनकव

तँ रूमाग ले कहियो आ दीप

जे छोडि गेल अगण सरँ हठ

रैस एगो अहीक रिश्वेतमे ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

ठमकव शिद्ध

ककि जागत

१ हरा

१ नज्जावा

१ रैहाव, दुनियाक

हम

त२ जाएँ निमीष कतेर

ककि जागत १ कनम

आव

हवा जागत शिद्ध कतेर ।

ले उठत

लेदना मसमे

ले उमडत भारणा कोला ।

जएँ जाएँ

थामेनि अत२ सँ



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

तै मेषी जएत

सरै हमबत दिनक

ल अएरै हम

याद ककबो

ल कबरै हम याद किनको

उग अकृत सफलमे

लै मिनत हमबाली कोला

रैबसैत मेघ, टिमिनागत धुग

सरैरुक रीचमे

बहरै हम असगब ठाव

ल न२ जएरै, ल डोडि जएरै किञ्चो

रैस एगो दिया जे जवत

अहि ठाम सदखन, सरैरुक मलमे

हएत ओ हमब प्रति,

हमब कबमक जगत ।



दहेजक रिहाति ।

कहिया तक बहलौ हम

समाण यौ भगया

कहिया छिठै अ अतिशाय यौ

हमरो तँ पबमतमे भेजवक

झुदा अरौत ए सभावमे सरै हेय सँ देखवक

कोय फनछनि तँ कोय कर्कशी कहवक ।

भगयारै दूबाव केवक

हमरा धूतकागव क२ माय भगौवक

दिन-रागत हम मायक हाथ रैठै छी

रौनु-दायक सेरा करै छी

तगयो किअ अ हठकाव खुलै छी

खुनि बहव छी सरैवक झु 'हम'

दहेज रिगु लै हएत हमर ब्याह



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जे थामत हाथ हमार

बाँरुँ भवत पहिले जेरै ओकब ।

हम रैछी छी आ कि समाज

जे गाम-गाम सँ आउँत लोग

करै नर हमार दाम डाम ।

आरै सज्जरै गडत सब रैछीकै

अगल आमोदाहक साज

आब कहिया तक पिमागत बहते

रैछीक समाज ।

७

हरेन हमार कप

जरै एलौ तँ कग छेलौ

कोमलताक मागबमे डुरैन छेलौ

प्याब सँ छुरै छन सब हमार

हम सगलामे मृतन छेलौ ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अज्ञात क्षेत्रों में दुनिया का हकीकत मैं

ए शीत शीत, ए धक्केत भूमी

छिन्न जल ओ स्रवण

देवक दुनिया हमरा नया कप ।

देख क२ दुनिया का वंग

कांग वरुन अछि हमरा अंग

डन, कण्ठ, पोखाधरी

सरै अछि सरैलक संग ।

कतेक अवरो बायक एमे पडत

कले जल अतः मैं गागक अत

देखक२ जल हम भू दंग

आग सरैलक मसमे रसन अछि

हजारो बायक अंग ।

१

विदा



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जो लो रैथी,

आरँ कि निहवि बहन डी

लावागन आँथिसँ ककवा ताकि बहन डी ।

अते तक निखन छेलै साथ

अते तक छेलियौ हम तोहब राँग ।

एक जन्म तूँ अतः गमेनः

हमवा संगे सब सुख दुख हँसि कः रितेनः

अहिना तूँ ओतौ बहिन

धूम्रिक दीप जवागनहँ

केलियौ आग हम तोवा पवाग

मन लोलैत अछि

छोव हँसैत अछि

कः बहन डी आग तोहब रिदाग ।

२



करौ नम

1

रौन गज्ज

निम सँ मातन अछि रौखा आरि कऽ सुताडँ ये

कतय गेलि रौखा माए ओठेल तँ ओछाडँ ये

खेलके ले ओ दिल सँ केहेन कठोर माग छी

भेल ले भासत तँ छड़ै दुध लेना बुझाडँ ये



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

थन रौरौ थन हमरा कोरा मुक्ति थमय छी

अहाँ सँट मँ जा किछ तँ रौआकेँ खुआँड यै

कते मरग गए किनारौ दूनवा पौता जेन

लगा काया मे दूध रूँल ले सँट मँ पिआँड यै

आरू यौ रौआ हमरी दे छी अहाँकेँ दूध पिआ

कनी 'करी' आरि लगाकेँ जोड़ियो तँ खुआँड यै

आख -९१

2

रौल गजल

दाग कल दे तँ हमरा तेन गमकौआ नगेरौ

माँथ गवमे हमहूँ छिक्की मनकौआ नगेरौ

तेन नगा हम गुररौ जूझी नान रौलर हित्ता

जूझी मे हुन हित्ता केव हम मनकौआ नगेरौ



ভৈব ভৈব হাথ হমরো দাগ লৌ চুড়ী গহিবা দে

আগু পাড় দুষ কাত কঁগল খলকৌখা নগেরে

মোশবা সঁ দলহিহ এহল সল পাগল কিম দে

ওগমে হম সৌমে স্মৃকী তঁ সলকৌখা নগেরে

একেঠা টিজ আব টৈ নলকা সাড়ী ওহো কিম দে

সাড়ীমে হম ঢাল আ সিতাবা চাকৌখা নগেরে

আখব~১+

3

রৌল গজল

আ বৌ ভৌবা রাহি দিয়ৌ তোহব হম মোষ্টা বৌ

ঐল লিখ মোহিব গোলৌ আর হেতৌ জষ্টা বৌ

হে বৌ কল ভৌবা ক২ গকডি ক২ আন ভগতৌ



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

देख तँ कमि क२ पकड जा ओकव गष्टा रौ

दनास पव सँ रँजा आसलौ खैव भगलौ

आरँ जौँ पकवरौ तँ तौवा मावरौ मष्टा रौ

ए रँव दुर्गा मे कष्टरौ देरँ तौहव नापेष्ट

डागरो तँ दाग करूगल डथूँ जेष्टा रौ

छोव ले डुरौ तौहव केने खल कल आ

बाथल छी आ ले छुड । दही भ२ जेतौ खष्टा रौ

आखब १३

4

रौन गज्जन

छनहिन आग तूँ गाम पव खूँरौ हम तौवा मारि लौ



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

छोरी क२ के हाथ ब्रका क२ रौं रौं रौं तौ लोशियागव लौ

पहिले खेत मँ मष्टेव छोलेलौ गाढक तौ रौं रौं मष्टेवेलौ

हम जौ माँगी तौवा मँ तँ रौं रौं रौं पटे छै गागव लौ

बाबाक देवता हवाको तौ हवावनी मँ क२ ज्ञा कहलौ हम

अगला तौवा कँठ गवलो रौं रौं तौ रौं रौं रौं रौं रौं रौं रौं

मोश छौ की उमरु मँ क रौं रौं रौं रौं रौं रौं रौं रौं

सौंसे देह तँ छुट्टा रौं रौं रौं रौं रौं रौं रौं रौं

पठ लिखमे लौ मोश नगे छौ उच्छा रौं रौं रौं रौं रौं रौं रौं

के तौवा मंग रौं रौं रौं रौं रौं रौं रौं रौं

आख -२२

३.

रौं रौं रौं



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हे लो लोखो तौ एना कमन छै किए

दुब-बाट जेन तौ लेसन छै किए

ले तोबा तँ खुँरौ कोबामे सुतेरौ

माएके दुब जेन अबन छै किए

कीनि देरौ नान गेन आ घुबफला

छोड़ ल ज़िदगन छैन छै किए

आरौ दहूँ रौरौ के देखूँ पोवा

पोवा मन नीक की नठन छै किए



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धीनिर

करौ नाना के देखू नैन लीया

आरौ रँड वीगव छन छै किए

रर्ष-१३

रौन गज्ज

७

छनय भूमिकि रौशना कते मोहलन नागय छै

राजय रौशना तोतन माँ मनभारन नागय छै

दानी केव आँचव तब ज्ञान ब्रकाय जेन रौशना



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मासिक संस्करण) **ISSN 2229-547X VIDEHA**
थेले छेबीया ब्रह्मेया मोष ब्रह्मरक्ष भाग्य छै

दाने केव पनरसन मँ रौन्ना थाय जेन पाष

छेव नान पिक दान्नी पव ब्रह्मरक्ष भाग्य छै

उल्लेखे खवाय रौन्ना केव एना पहिब जेन रौन्ना

खमय खन उठ्य जिया ब्रह्मरक्ष भाग्य छै

जिन्द ठानलेन रौन्ना जेरे देरी आग्रक मिसरी

उल्लेखे माँ ब्रह्मेया लोव ब्रह्मरक्ष भाग्य छै

रर्ष १+-



१

कमिये गेल रौशनी मनाएरै कोणा कए

निर्धन माय रौशनी बुझाएरै कोणा कए

ठाठ भेल कछेरी भवि माँग्य छै दुध

टिक्म के मोव ले रँजएरै कोणा कए

एहन किए निर्धन रँगाउन रिधाता

दुखो नहि झुडय झुड गिरै कोणा कए



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

देवक जे जग प्रवात मेह बिधाता

नाज हू अलका रैताएँ कोना कए

गामि जाड राबू अहाँ जी रहुँ बूधियाव

डुड माय जिद के प्रवाएँ कोना कए

(रर्ष १३.)

करौ सा

+



रौन -गजन

कैठीवरौ आ कैठीवरौ माँ रौपक जेन दुनु आँथिक पतनी

एकठा अछि लीबा त दोसब मोती जेन दुनु आँथिक पतनी

रौआ खेनय जेन जेद कबूँडी रूँटी खेनय कनिआ-पतवा

डाँव मै घुघक पौव पाजेरै रौजि जेन दुनु आँथिक पतनी

रूँमेक छलै अछि रौआ ननष डूँमेक छलै रूँटीया नानपवी

जुँडलै डोती माँ के रौपक ओ मोन जेन दुनु आँथिक पतनी

रौआ खेनक खोआ चिरी रूँटी खेनक कबकब कटवी माड



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

समृद्धि रोजे रूचि रीखा त तौतना जेन दुनु आधिक प्रतनी

करौ जेन दुनु जौवर डै रीखा बाजारारू रूचि डै नानगवी

रैले कोला हाकिम रैच ओ माँ राग जेन दुनु आधिक प्रतनी

रर्षि-२३

९

हे लो प्रलेष्टेनमा स्वर्ण लो दुर्लभेनमा एले डुष्टी गर्मी क

छन गयुन क कहिये हम ठाँठा आरि भेलै डुष्टी गर्मी क

अह्व रौतानि मै थुरै हम द्युमरै गाडी जा आयो द्युमरै

पाकन आमक बस निदोवरै आग चढलै डुष्टी गर्मी क



मेघ बूझी मै खुरै नहायेरै माझ क हम रातो ले मानरै
हता-खता मै छन मान्छ जा क मावरै रैछले डुष्टी गर्मी क

हठ रैजाव मै त राई संग जेले लेगाट्स रिक्छ थेलै
मेना मै जा क हम मूना मूनरै कम रैछले डुष्टी गर्मी क

गकून क गृहकार्य राँचन अछि बतियो ले त रउ डैक
अछि मोष रिबुआयेन किये खतम त गेलै डुष्टी गर्मी क

सबन राफिक रैहव री -२२



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मान्यविह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१०

दुश्चर ठागव रँहिन कऽ दुश्चले एकठां भागऽ ठेक

मझक कात मे रँस कऽ कोना सिम्ली ऋवली थागऽ ठेक

माँथ मे ले तेन ठेक एको रूँष छिष्टा जकाँ केने ठेक

मउ कियो क बहतो उ केहन दुश्चर रूँसागऽ ठेक

तन ले छिखो देल पठेता निथेता की माउर रौंगम

देशेक भरिया देखियो किये एहन कऽ घिसागऽ ठेक

दर्जन पुरार मे निर्मल कऽ नागये ठे मोष कतेक

डी तऽ ह्य रँडक । एको रँव कहितो ले वजागऽ ठेक



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

कतरौ कवता रौप- रौप लोकन जाग जन्मथाँ

पठन निखन गदना एता रैड रैशी देखाग ठेक

कटे कवर रैखान मातरैवी मे नुकेन गरीरी कऽ

लगा सतक दशा देखि करी कऽ किछु ले हूवाग ठेक

आखव --२०

११

मए ले आकनि सौं ओ चला मंगा दे

हनुमान जी ध्वजा केव फला मंगा दे

१



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बोझ ज्ञान् ज्ञा क भ गेनह् हवान

सब सौ आङ्ग डुष्टी क रैहवा मंगा दे

दाङ्ग केलेन अलाना माँ क एकसन्ना

दाङ्ग आग्र सौ आनु केव सन्ना मंगा दे

दिदनी तेनक रैर्य ननका धान रैरि ट

हमरा कलक दाङ्ग सौ मवधवा मंगा दे

ले निनखरि निमलेष्टे गव ले टोक माठी

बाँरु सौ कनम एकोठी पन्ना मंगा दे



आखब १४

१२

कक्का के अगला मे नीटी केव गाढ फबन रोजेव ले
गेन खेमन गेन दुनकखा गेन खेमन रोजेव ले

काकी रोजखि कोठा चढ़ी सुन उं पवाग रोजा माय
अहाँ केव रोजा नङीकरा नीटी क तौवन रोजेव ले

आखि मे लाव तेव क रोजे रोजा सुन ले माग हमर
माँ हम किछु ले जानि नीटी कतए डन रोजेव ले



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

माथ धर लेसनी रौशनी माग कोष कर हम उपाए

मट रोजे छै काकी ललाक छै लाव रहन रोजेव छै

असमजस पबले करी रौशनी बिहूँसे मूथ दरौग

पाछ हाथ ब्रुकल मोवा अछि नीटी भवन रोजेव छै

मवन राफिक रहव आथव -- २०

१३

रौन गजन

जए दे हमरो दिदी केव मानव छै माँ

194



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हमारे थे माँ भ्राता आ काहूँ ली माँ

जिजा भए क संग हम थोरै करैछी

रहिन संग मे पकवैले दादू ली माँ

दिदी देनले दुःख छी देलै जा जिजा क

भेटै करै न दिदी भेल छै आतुर ली माँ

रहना हुँसना मना जिजा के न आनर

ध विमिया क आनर ली त पाखू ली माँ

एना ली डाँठै हमरु आरै रवका भेलौ

रह हुँसना रैस ली हो पित माहू ली माँ



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

आथर्व १३.

करी सा

३



श्रीमती गवा मल्लिक

1

डेग हमर डोष्ट एखन नञ्च रहूत दुब अछि
बापि जेहँ सफलताक राई मेहनतिनँ बुनै छी



केतरी रीधा एतय रीधे ठकेलि आगु रीठरी
ममे जू ठानि जेठो हव पाड ऋडि बहि सके डी

मिथिनाक गोबरगाथाम कहौ कियो अलजान डै
डले कहियो दिय मिथिना एखन तँ माँठि हके डी

खुर पठा आगु रीठरी देमेक हित काज कवरी
सुर्गि मिथिनाके सगना अगल आँखिमे तके डी

मिथिना अडि सुँदर ठोप भावतक नगठ केव
रिमे सन्मानित हो मे भगीवथ प्रयास करे डी



(वर्ष -19)

2

सौमे गाम तू गावस फिबैडै भविके खुरै ठहला रौ
जै गटे निथे जेन करौ तै रैहूत करै डै हला रौ

जौवा सँ सँग थेलै छे भवि दिन करैछी थनी उँडा
नहि पबलौ एखन धवि तौवा रैगहियसँ पला रौ

आरैय दहिन गाम हुनका देखथुन तौहव निमा
दैरौ नहि रैछेथुन जखन तौवथुन तौव कला रौ



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हमारे रीतक योजव ले केला खूँई कहि रीदमाती

एके रीवक मरुकाणि सँ खुनि जेतो ग्याणके तम्रा रौ

आख 20

ए बचसापव अपन मतिर ggajendra@videha.com पव
पठाउ ।



१.

अमिता जी २.



प्रशान्ति मैथिल-रौन गज्जन



३.

पंकज टोडवी (भरनशी)४



जराहव



नाम कांष्टप ३.

कान्ति अमाव सुदर्शन



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

१



श्रीमान जी

बौल गजल

1

शुभ भेल स्रष्टा क बाथु

अपन संकाव जोगा क बाथु

अछि सुठ-सुठ शिफासे लागु

मोहकेँ मैथिल रँगा क बाथु

कपूठव गेम अछि अमर

मगज छँका रँगा क बाथु

200



लगा नम्रहीन नहि हूँ

तकव जोगाव धवा क बाथू

केकरो रौनि बह केहना

हृदयै अगल रौना क बाथू

रर्ष-11

2

अ सँ अनाव अडि छि कमगव

आ सँ आम नालीए रहु बसगव

पिछा रँझव तँ घुमि गेल मोनमे

केखला कतौ दरौ दैड अमगव

शिक्षा माधामे अथेजि तेन हारी



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संख्या **ISSN 2229-547X VIDEHA**

हैमेश अग्रजिया डै बतसंगव

पीढ़ी नरकारै नर कर्पे सजाड

अगम संकृति भ गेम अजगव

तकनीकी ज्ञानमे लना रैठए आगु

पितोक मोन होगछ तूतसंगव

रर्ष-----13

3

"ए"सँ एप्पल मेर कहागए

"री"सँ रूक ज्ञान दए जागए

अग्रजिये नील भ लना सभ



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मागक रौली रिसवि जागए

मिज खगता जामि क पठ १७

रिक्कामक सलमे द जागए

रूठ लोक अछि धवती गव

लगाक रौस टास भ जागए

रागसँ रंग छै किछु दिस

जरेडसँ सत जीवो भ जागए

रर्षी----11

२



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**



प्रशान्त चौधरी

रौत गङ्गा

शेखर मूर्ती गठक चाली

धुरी मोन म गठक चाली

हमरी आयादीक शैकव

गतिहास के बचक चाली

बैशा डेगा डेगी नखले नखले

धमि उर्दक रैठक चाली



बप्रिः रौँटन हूँगगी डारि

आ टाष गव टठक टाली

कमिअग प्तववा माय टको

नाम भावती मठक टाली

रर्प-१०

३.



पंकज टोषरी (बरनशी), राँचुजी-
श्री भागेयिव टोषरी (लोक सान्ध अतिरिक्ता रिभाग, रिहाव
सबकाव (जमुङ्ग) मे कार्यवत), माताश्री- श्रीमती रीदना
देरी (गृहणी), जन्मतिथि : ११.०९.१९५०, स्थायी पता: ग्राम+पोस्ट-
सुगौणा, प्रखंड- राजनगव, जिला- मधुबनी, मिथिला, रतिमाण
निराम : बङ्ग दिग्री, शैक्षिक योग्यता : बाम प्रष्ट महारिद्यालय,
मधुबनी (मिथिला) सँ राणिज्य रिषयक र्गग सनातक रतिमाण मे



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

अध्यक्ष (I CAI , नञ्ज दिव्ती सँ C.A.(मणजमन) एरँ I .C.S.I .नञ्ज
दिव्ती सँ C.S.(मणजमन) क सङ्गे एकठाँ मणजमन कम्पनी मे
महायक प्रबंधक (रिजु एरँ कव) क पदमव कार्यवत ।

1

बौन गज्ज

मर्याद भऽ बहरो मदिखन आरँ ले कबरो हुनहुन हो

मोष नगा कऽ पठरो देखिहहि जेरो मभ दिन मसहन हो

मगी मङ्गे हिन - हिन बहरो पौष के मभथा कहन कबरो

काष पकड़ो आरँ ले कबरो रँदमाशी हम रिमहन हो

थाय-कान नकबूनी केनहुँ तेँ नष्टि कऽ हम एहन भेनहुँ

डाँड सँ पौष्टे सब-सब मसवन अङ्गो लोङ्ग डै म्मम्मन हो



माछा खेरैय सझा जेरैय आरै ले कथला झूठ रिचकेरैय

पबसल दे२ तीसल - तबकावी दलल दे आलो दू कबडल लो

दूध पीरैय हल सुबकरैय दली खुरै खेरैय थाला-पलतोआ

तल पल सँ हल आलो खेरैय पीयल-पालल गुनगुन लो

देसल-दमेल सगी-तुरिया हल आंगल देथारै जे

कसल कवरै देल रैलरै कबले डल ओ डलडल लो

आशीरिल तोलल अमृत सल आँचल आँगल मलता के

बाला रैथी 'बलल' तोलल माँ छलकत रैल क२ रूँलरूँल लो



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुषिह वर्तमान ISSN 2229-547X VIDEHA

*** आख-२३

2

रौल गजल-+

आमक गाढगब सूना लगाएरै ना

अगला सूनरै सबके सूनाएरै ना

केवा डम्बलवि आ नती मोठका आनरै

सङ्ग रौंष्टि क२ जडुड रौनाएरै ना

कथनहूँ डुँटागब निटा कथनहूँ

सूने संग हमहूँ आएरै-जाएरै ना

खसतग गोपी धरंगव -धरंगव- धग

208



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

सुना के रहल ठाँठ डोनाएँ ना

कियो रीछय गोपी हेतै नहि सगड ।

हम सत संगी गिन-झूनि थाएँ ना

कमि-कमि कर आव सुनारिय हमरा

डूँचगव जा हम टाँ के पाएँ ना

ठाढ़ी ओदवतय सुना जौ छूँतय

“नरन” छै सत दोड़ पड़ एँ ना

***आख-१४



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानकसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बीर गजरा

असफल के रस्ता डेे तावी हम नमिः छगलौ छलौ तू

पागलक थकाम हमरा छली माँ द२ दे ले माली तू

मोबक छि रैना क२ आन२ देनथि हमरा मोडम जी

छांछे तोछ पाछ पछतउं स्रन लेकिन ले बाली तू

डिष्टी तब जे बैन सका क२ भसमा घब गमकलौ माँ

मंग मोहारी पाकन कोथा खेरैय कछरव बाली तू

उमती के काते-काते हम छानि गुनारैक बोपल जी

उमिया क२ धन पसावय माँ फुनक गाढ ले बाली तू



“बरण” छेठै नम्रिः औरि ओते काज अठा किछ हमरो
हमरा हाथ पयबिया द२ दे माँ जावनि नम्रिः पालि तू

***आख-२०

4

बौल गजल

काँटे खँहा सबही पड़ मे यावय मुस हँका यो
नहुँ नम्रिः था हेतय ओकवा दाँत कोतेते पका यो

बाति दिरालिक दीप जड़रै खैरै हम रँताशि नहुँ
हँकाजोनी गेली भँजरैय हँगाड़रैय खुर हँका यो



टिप्प-टिप्पि चूड । भूजन आगत कक तगयो थोरै
रीड-रीड मिचय दीगड भूजा हमरो दु हक्का यो

रावी मे जा कोना छोरै अप्पन छोरै कठली गाड़ ।
माष्टिक नगर ठेगा तब हँसते गाड़ । के चक्का यो

पत्नी तारु गेन रैनाक २ अंगल मे किवकेठ थोरै
गेन दियो गड़कोरा हमरा हमरै मावर डक्का यो

रैनी मैं नम्र गीत नगेरै सी नगर के डै रैदमा
अंगल मारि रैनारै सत मैं हमरा कहै उटक्का यो



अकुन के रैस्ता ये बाखन झबली ले मन्त्राङ्ग कही
"नरन" हष्ट के रैष्ट तके डे कटवी आनरै कक्का यौ

***आख-२०

३.

अहि रैष्टी ये अगलै रैष्टी टिली मंग-मंग दूधो कम
ए रैष्टी डुङ्ग तोहव तङ्गा ए रैष्टी नहि लेरौ हय

देवा-देवा क टिली हँनलै माँ के जा कहि देरौ हय
नप्रि त एकठा हाँक अटावक दे उँताङ्ग क थेरौ हय

खुबबूटी रैनि बूट-बूट कवरै नानी मोन पाझरौ हय



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुसिंह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

आरं जौ बिदुआ कछेले डेया दाते केछे कलरौ हम

सुन गे रहिना तोरो अहिना कहियो मजा छथेनौ हम

ककरो म जौ मगड़ । तेरो आरं बसि तोरो रैछेनौ हम

हामिन पड़का जोड़ ल कहियो तोरो आरं रैतेनौ हम

छनहिन गयून मैडम जी मँ पक्का माँगव थूनेनौ हम

बरनशी "पंकज"

७



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मिथुन-मिर्गन कोमल रौप्य

मिया-प्रता केव अलगहि जीव

छलित बहति सभके अतर्ग

तारक अजरहि कुष्ठ - पीम

छे देह लेखन योन ३ कट

कमल-हून सन लाली अमल

अन ठिठिये अन काले अनठ

छे सनाह आ सठ द अनर

रस छे सौहारी रसिया तीम



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

उठि भोवबरो सभ सँ गीत

अबुन सँ रँचरौ जेन धवडन

नीक नगड़ा डङ्गा मकआ मीन

कितकित पाड़न सगरो अँगन

छात-करँझी झूह मे सदिखन

हो मेघ-स्रबज या टास-तरेगन

झरि पव हाथ धेनक मे अप्पन

"नरन"कथी हूँ जेतय कबखन

रौन-मनक ले किड पबिसीमन



(सबन रर्षिक रैहव)

१

मोष पाड़न अ किये अलारे रात प्वनगव रैटपन
के

आथि लारेले मोष जड़नेक याद वमनगव रैटपन के

रैटपन दूरन - पाड़न - रिसवन यौरन के मादकता मे

थोनि बहन डी खाली मोठवी रैसन अमनगव रैटपन के

रौरूक-कनहा मायक-कोवा अमनगव नुना मन दूआ-दूआ

ता-ता-ता बैया आव ठेहूनिमा थोन डमनगव रैटपन के



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

ठकि-हूँसना क कते खुँयेनगल दूध-भात श्री गुड़क गुँथा
टंदा-माया आव योमी-रिनाय लह हिनसगव रँटगल ले

रँस हूँसक थोती दूयक दोयी 'नरन' जूँथानी निर्मोतोयी
धाह जूँथानिक जड । गोलो ओ गाढ समष्टगव रँटगल ले

--- रर्षी - २३ ---

(सबल रर्षिक रँहव)

+

कील दे कचवी-मिग्री-रँ२वी नरगटूस श्री कठ-कठ माँवी
लोठि रँधमँ धाण जे अललो भुजि दे कबली तठ-तठ माँ



धाष अगोथ्र के२ जे२ उंसवगन तकव कीष दे यगीता-रौना
काकी जे देनथिन्ह रौना से हाथमे होइ छै छै माँ

ननका यगीता गुरुन जूझी तेन सँ मथा गमले गम-गम
थकले केशे जरुष ककरौ न२ तीन के२ माले पृष्ठ - पृष्ठ माँ

देथि भूथ सँ लोहडन लग्ना दूःख-सुख सभला लाग भेलै
तँसा घर मे घाम सँ तीजन काज करै सभ छूट-छूट माँ

होय कलँ अषका देखैले "नरन" जे मायक माया-हुज्जा
भेड़ निन्न तगयो कहि थिम्स दूष शिगारैय घूट-घूट माँ



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

--- वर्ष- २२ ---

(सबल वार्षिक रेलव)

४



जबराह वान काशेग

थमले गव नहि कनले लौशा

थमले गव हव उठले लौशा



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हाथ पकडि जनले रौश्रा

हाथ छोडि क जनले रौश्रा

अगल पेरि पब दोडले रौश्रा

टास के डू जेनके रौश्रा

३.



एनाति कमाव सुदर्शन

एथल देख'मे छोष्ट नलो डी

तेयो कडुआ टालि चले डी



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

पएव हमर डगमग करै

तेयो हम नभ-टास देथे छी

लौली हमर क क छे छे ग ग

तेयो महान रँगरँ मे नृपण देथे छी

रँत दूव अछि दिनी

अमेरिकाक नाम मेहो नृप छी

छठरँ हम टास आ मंगल पव

आरँ कछु की हम अँहामँ कम नछे छी



ई बचसपव अणव मतिर ggaj_endr_a@videha.com पव
पठाड ।



१. जगदीशे चन्द्र ठाकुर अमिन- १. रौन गजल/ २. की



भैरव आ की हेवा गेन (आमे गीत)(आगाँ...) २. कामिनी
कामागली- चिडेक अविवाह

१



जगदीशे चन्द्र ठाकुर अमिन

१

रौन गजल

बोज उठैडी भोले-भोले
घुमि अरैडी भोले-भोले ।

दुब-दुब धरि हरियर धवती



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

देखि अरेछी भोले-भोले ।

धवती मैया सभहक मैया
निहूँ कहि भोले-भोले ।

आम-डाँचि पब गौरय कोगनी
गीत सुनेछी भोले-भोले ।

माए-रौंरूँ भगवान हमर छुथि
चपन छुनेछी भोले-भोले ।

माछि-पानि जे तन-मन-जीवन
प्राण अ कहेछी भोले-भोले ।

२

की भेटैत आ की हेवा गेल (आमे गीत) - (आगाँ...)

हुन सुथु हिमानय रैबकि उठैत
अतबमे धरवा धरकि उठैत
सय सय कोसी-कमाना-गंडक
कत घर मोनमे ठहकि उठैत
हम देखनहुँ दूनु हाथ अगल
झुंझी हुन अगलहि कसा गेल
हम मोटि बहन छी जीवनेमे
की भेटैत आ की हेवा गेल ।

२



गद्यविधि

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हम थाकि गोनहुं चमगत-चमगत
हम कामि गोनहुं हमगत-हमगत
अगरवत अतारक दुर्दिनस
हम हावि गोनहुं नडगत-नडगत
बहि जामि कथन के सुतनमे
करिताकेव अमृत छी गोन
हम मोटि बहन डी ज़ीरनमे
की भेठन आ की हेवा गोन ।

चमते-चमते भेठनाह बमा
आ भेठ गोन शी सोमदेर
कोगतथ रिद्यापति पारमिमे
भेठन आयाशि मधुग किवाक
सम्वर दु बचना केव पाठ
डन पीठ हमर थगथगा गोन
हम मोटि बहन डी ज़ीरनमे
की भेठन आ की हेवा गोन ।

२
करिता अगनी जहिया मंगमे
भ गोन पेय परिवार हमर
यात्री, हरिमोहन, ज़ीरकांत
शेखर, बरीन्द्र, मणिगढ़, अमर
राँरु कका आ तिया मग
डन नाम कतेको जोडा गोन
हम मोटि बहन डी ज़ीरनमे
की भेठन आ की हेवा गोन ।

करिता मंग हम ज़ीरन नगनहुं
रूनय नगनहुं मूनय नगनहुं



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

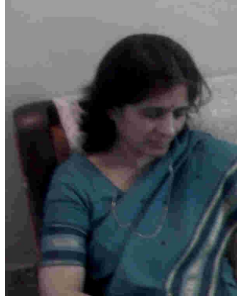
मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

झीरनकेँ उमेर मासि सतत
बाछ नगनहूँ नमन नगनहूँ
करितासँ धेयक रौत हमर
हुन गाम-गाम गनगना गेन
हम मोटि बहन डी झीरनमे
की जेठन आ की हेवा गेन ।

‘ गारो’ पठिक’ हुन कना गेन
‘ थुंर कक्का’ म ठमा गेन
‘ रौरी’ उडोत रौटा जय मियाबाग
टितित मसकेँ थुदथुदा गेन
‘ रहु’ केव पिहानी ‘ नानी’ पठि
नहि जासि कते की मोटा गेन
हम मोटि बहन डी झीरनमे
की जेठन आ की हेवा गेन ।

(अन्तरिते...)

२



कामिली कामायनी

टिप्पणी अभिवाद्य

226



एक पाथी गीत म
किड कहि बहन डन
डावि कठक हम देखन
अहि जलम मै
भेष्ट नहि पाउन हमरा
कतौ रसैवा
आम के एक खड लल
ठाठ एत ।
कखला त कता कोला
रिबीड भेष्ट
घब के एक
नीर बाथि
थोता म रौलव
हमज
तवि पोथ लेबर
हमरो अडा
हमरो टिका
हमरो संगी
हमज कतौ टैन म
किड बाग ठेवर
गीत घुवन
देव धरि
निःछेष्ट त क
भेष्ट एतेक
स्वप्न कतेक
अ किटन
तपि क ओकव
एहेन मल्लोतारणा के



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

उडि टनन

घरैडा क ओ

कगजोव पथी ।

ई बचनपत्र अपन मंतर ggajendra@videha.com पत्र
पठाउ ।



१. अमित मिश्र-रौन गज्ज २.



उमेशकाशे

सा- रौन गज्ज

१



अमित मिश्र

रौन गज्ज

1

भनसा धर दिने दोड़ननि लौआ



रीट आँगन मे डूँट पिठि नगोना

डुवगना , डोनन खमननि रौआ

देखननि माँ के ठाठ हाथ लेलेल

छोटे हिसरि कोवा लेसननि रौआ

दादी एनखिन जेल रौंठी रौआ के

दूब देख क रौंठी हफकननि रौआ

रौंरू खेनखिन गिबटाग मोहारी

हूँनको चाली मे जीद खेननि रौआ



जौन गच्छा हाथी , देरै मोठैव काव
रैहते गल्लौ लै गानननि रौआ

संग मे जाएरै घुमे नए सकस
अमित सँ चावि नहु लेननि रौआ

रैह-13

2

सखी सरै गोन नागन छैक लेना छन
230



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

छलै लो माग घुमे जेन मेना छन

कहे छन सबरतीया मज्जन छै सकस

अरुण रौनवक देखे जेन तेना छन

कते छै तीड छोट लो पकड आँडूव

उठा जे अगल गोदी तखन मेना छन

म सौ गु पौ कबत रौड पीगली झुका

गडिया कील दे सरै भवन ठेना छन

कल छै भूख मिनी देख नागन लो

गवम कचरी कल झवली न केना छन



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

महाभारत [U-I -I -I तीसरे सरे पाँच]

रहेले हज्ज

3

रुख उगरेले पड़न आवे पव

रिंदगी रैमले आवे पव

मुस दोहो गहूँ भवन घर

कोशली तन दे आवे पव

नादि पव गाय दे दूरे ठे

232



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बखब देल श्रवण ठाव पव

स्वागत जन रौश्री कए

हुन हूँ ग्रथन हाव पव

भोव भेलै उठन बाजा यौ

अमित रौश्री छठन काव पव

दीर्घ- हर्ष -दीर्घ 3 रौव

रौहले -हृतदायिक

4

श्रीग तावा केव नगरीसँ एथिन माँ

अपन कोवा सँ द हमरा उठैथिन माँ



थेनरै माँ संग आ कमरै हमरै

पकड़ि आँठुव गम-घब मे बूतेथि माँ

थाकि जेरै जखन भोजन करा हमरा

गारि लोड़ ी आँटवक तब सुतेथि माँ

बाम करी के पक डैक मबथहिया

सुबज के रँकवी मँ हमरा रँचेथि माँ

हमर संगी संग माँ के घुँघै सकस

आरि घब हमरो सिलमा न जेथि माँ



कत मँ एले मेघ काबी ग अरैव मे

अमित मल डेवाग यो कथन एथिन माँ

हागनातुन-हागनातुन-महागान

रैहले-कनीर

5

लोअनी कहनके मुगामँ

हम रैड पौघ डी तौवामँ

मुगा कहनके जूनि रौज



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानकसंख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

तोड़ि ये देरौ लोव लोड़ सँ

गाडी-बिबडी तू घुमे डली

कावी कग देख जे एनासँ

कोशनी तुनकि क राजन

मीठ राजे डी हम तोवासँ

हम घुमे डी अप्पन मोलँ

रान्हन बहेँ तूँ शिजवासँ

उठम-रैजड़ । , धक्का - झक्की

खल-खुनाम भेल पौनासँ



मोव ज़ी तखन कहनि

ले नड तू अगल बैगाम

सुगा अमित बाम गारै डै

सीथ ले कोगनी गरैगाम

रूप- 10

6

माँष्टिक चाँडव पानिक दुष पातक खावी रलरै

माँष्टिक छुलि पव खीव बागल तबकावी रलरै



बौद्धक टिणी कादो के दली लोना मुनक दूबा लेते
बौनक चक्रना सगरी के लेनना सँ पूरी रैलैरै

मैया के हठाँ आनि मुठ-मुठ के पूजा-पाठ कवरै
बौरी सँ एकवैगा माँनि रुमावि लेन साड़ ी रैलैरै

होव कवरै गृह्ठा के बियाह गृह्ठा या खुर मजेरै
साजि एते बरियाती बौरी के नाठी के गाड़ ी रैलैरै

ले डब मांष्टव के आग डङ्गी डै चन मीता खेनरै
आग अमिात बाटरै-गेरै रैडका खेनाड़ ी रैलैरै



रर्षी -१६

7

संग छल ल गिल क सरै खेन खेलेलै

एक दोसर के पकड़ि लेन देछलै

कोशली के गीत रँदव नछेलै हम

छान तावा धरि पहुँचि आग देथेलै

कागजक लेया रँना हुन कमलक छन



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

छन रैछी पोखरि तमा नार लहेरै

दीप माछिक गढ़ि क सरै देरैता पूजै

लोपि अबहुन खेत मे छन पछी एरै

माछि लोछैएरै आ साँस धरि खेनरै

अगित गढ़रै मल मँ रैछका त रैनि जेरै

हा गनातुन-हा गनातुन-महा गबुन

रैहले-करीरै

8

लौखा एहिठाम काले छै

240



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

माँ जनथग रैगलै छै

रौरा आनननि छैकना

रौरा छैनी रैगलै छै

कक्का नगलै छैथि मानी

काकीयो अंगना नीपे छै

रैनना रौनी पानि भले

जुगोनबो चेवा फावे छै

पागा छैथि पवदेमे मे

ट्रिन-ट्रिन हगल रौजे छै



दीदी गठ गेल अकुन
मोनु बैया खेत जोते छै

सर नागल छै काज मे
तै अघित लौखा काले छै

रर्ग-९

९

भोल-भोल रूर्ग रौजे छै
मोना लौखा के उठारै छै

बरकी रौजी दूध देते



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

तीयो कक्का दूध दूहे छै

माँ देवनि दूधनि भवि

गर्द्व-गर्द्व गिरे छै

दूधे दाँत के हँसि रौआ

आ हगफनियाँ काँटे छै

भवन कछौत पानि मे

रौआ बहाग छै कुँदे छै

पाँडव काजब ठोप्पा

बर कपड़ । चमके छै



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानकसंख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

हाथी घोड़ा । श्री मूलमूल

अमित रौशनी रोज़े डे

रूप-९

10

डबकडोबि मे मूलमूल रौड मीठ रौजे डे

जुता मे नागन पिगछ गौ गौ बाग मूलमे डे

तीन छंगा गुरवकला देवे रौशनी घुमे अंगना

244



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रकबी के रचा देखिते कुदि कुदि क नाटे छै

भानु रना नाट देखारै रौन्ना के दनाष पव

दू ठाँग पव नाटन भानु रौन्ना नाटि हँस छै

भवि कठैवी दुध पिरै जेए ठंग ध काले छै

जखन पुछौ नाम त माएक नाम रँतारै छै

नाटैत बहैए सरँ ननषा एहि संसार मे

रौन्ना के हँसी देख अमित कनम चनारै छै

रर्ष-17



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

11

आग लौना* मे माडु चन मावरै कल

जान मडुवदानी रना हफकरै कल

रैहूत छैरना डै खमन गाडी भवन डै

उकला मोरी भवि क चन आगरै कल

माडु छैनी खाएरै लोटी बात लो

जोनगाती चन संग मे खनरै कल

246



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

छैछै लौआ छी लौआ सभ छै मोछ लौ

आरौ कथला संसार ले रौछैर कल

एक छी हम सरे एक थावी मे बहरै

अमित नरका मिथिला अपन माँगरे कल

यागनातन-कृत्य गव्वन-कृत्य गव्वन

रौहले-हमीम

*लौआ लौआ ले नाम



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

सुगाले आग बियाह लेते

मैला बानी कनियाँ रैलौ

पोड़ । रहीं ओव बसग्रामा

पुवी सङ्गी गवाड़ रैलौ

लोगानी रैलौ गीत गोते

जुगनु मंगी रैलौ जलेते

रैदव मामा ठोल रैजेते

मोव टाटी सुनि क बाटते



हाथी दादा नङ्का न जेते

खबरा खुरै रँग फोड़ते

जंगल के सरै रँवियाती

भाबू भैया सरै के रँसेते

शेव देते आशीष अमित

गीदव सरै मंत्रि पछै ते

सबन रार्फिक रँहव

रर्ष-10



13

सखी सरै छन तोड़रै आगले ली
सखेदा गाड़गव लेकरी सागले ली

रैहै छै परन केरन मीठगव छै मग
भगवक लोद जड़रै छै चागले ली

कल जे रैवक रौतन से गानि भवि जे
कवरै रगभोज छै रैडका जगले ली

मरुछै मावते छेला जखन कोश
छै छै छै छै छै छै छै छै छै छै



अपन मोची भवन हेते सँममे ली
अमित कतवा कते हेते दमले ली

महागुरु-महागुरु-महागुरु

रहने-कबीर

14

पीठ पर छै रँग रौशनी चमक गयल
मान पियर छै चमकै भवन गयल



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

माथ ठेगी छै मे छै नच नचकन
दाग मंगो छन मोल बगल गयुन

थेन मेहो नीक थेलो छै रौन्ना
रञ्ज छै मेदान थेनक रैनन गयुन

द्वि पाडो मे नलो छै मोन ओकब
मीठ सगडो । पब त खुरे हसन गयुन

ले गहाडो । गठोर ले सीखर ककरवा
आर छै कण्ठव सीखा बहन गयुन



भेन डुष्टी मंग हया घब चनन ओ

नाम जहिया अमित अगला निखन अकुन

हागनातुन

I -U-I -I तीन रैव

रैहले-कान

15

माँ धवा माँ चान डै

सूर्य दादा ले आन डै



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

ढै बिनाञ मोनी छत्र

लैत मुना के जान डै

अरुव खेनाले छेव के

डंडल छेवक त' प्राण डै

आम मरै रैषवा खेमले

डाठि तौडे मोतान डै

बि एन ए बिदेह *Videha बिदेह* www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* अथवा मैथिली पक्षिक अ पत्रिका बिदेह'



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

चमन हाथी जी प्रेषण छठि

मूठ रैडका छै काण छै

बाँध छै हय मरै छी तथय

मेव जंगल के मोन छै

यागनातन-कृतयागव्रण



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

दोव कक्का दोव काकी

देखू लोखा डोलै राठी

दाँतो काटै केशो शीटे

गाले छै जल ओ नाठी

टिनी जठे दूवा जठे

डाली जेए गँलो छाडी

दीदी डी ताल लो लोखा

ताल जेए कीले बाथी

लोवा मे तूँ शोभे छै लो



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

माली तेली मंगे लोपी

आठ ठा दीर्घ सर पौति मे

अगित शि

17

रौल गजल

लौशा पानि रौवने कथन

माली जखन मेघक रमन

माली मोव रौजले ठोन



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संख्या **ISSN 2229-547X VIDEHA**

गारि कोशी नर भजन

हरियार गाढ हुनएत

देता रौद दिनकर जखन

खबल तखन जीतत दोड

आनस छोडाँ काजे मगल

ढे एबोपल्लेखक आनि

पठ्ठा निथ निथ त चाला अपन

धवती के रँमेननि बाग

भोले भोव करियौ नमन



अँडुव पकड्ाँ रैठ्ाँरै डेग

बाथु "अगित" खूजले नम

महङुनातु{2221} दु रैव सरै पाँतिमे

अगित शि

18

रौन गज्ज



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक संख्या **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मुमन कटोरी डै मीठगव डै खीव

सुखदगव डै जोना डौक मे डन जीव

कमन किए मोना और थेले संग

जन्दी टनु खा जाएत कोखा खीव

छाँडी न गफुलो टवरै थेनरै पठरै

ओतो अहाँ मन लषाक नागन भीड़

डै नान कक्राके नान पाकन आस

जाह्मन खसन कारी , भेन कारी टीव

दिलकव अहाँ चला बास आ नफरमा



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११),

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जीतरे अहाँ माँक आँखि माक तीव

आसुत गव्व-माहँ नात-माहँ नात

2212-2221-2221

रहने-- सनीम

अमित शि

19

उड़न सरैठा टिड़-याँ गाढगव हूँसँ

जै रैसन चावगव चारो खसन हूँसँ



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रुमर गाड्ी नतमक डाठ्ी आ मरणी

चले छै तेज अगल झूठ कले हूँस

गिनासक दुःख गिमियो नीक ले नालो

भवन तौना दली आँडूव नगा नूँस

अगल रौन्डी अगल लोया त ता बैसा

अगल सरैया कले अगलनव ले नूँस

मूँठका मूँठले जोग जोग जूँस

जड्े छै डूबडूबी डूब डू डूँस



महाराष्ट्र

1222 तीन रौब

रौबले हज्ज

अमित मिश्र

20

रौब गज्ज

काबी महिस के दुध उज्जव डै कते

भवि मोन पाबी पीरि दुब्व डै कते

बसगव जिजेरी गवम नवमे नवम डै



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुसिंह सस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मङ्गु रैषण रैमणक रैञ्जव छै कते

छै पात हवियव हुन मोलित गाढ छै

जाम्बुन निटी आगक अ मञ्जव छै कते

दु एक दु आ टावि दुली आठ छै

अम्मी कते ले जानि सतव छै कते

भावु रैना देखारै सरैके नाँट ले

सठ आनि छुडपे दोड चक्रव छै कते

मङ्गु रैषण

2212 तीन रैव



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसुषि

रैहले बज्ज

श्रुति शि

21

श्राष्टले पहिबरें भुखले हम बहरें ली

माग ली हम गयुन जेरें कबरें ली

महिम गोमरें सरें दिस टवाएरें साँसक

लैस ओकर गीठगव पोथी पठरें ली



थेत जेतरे कोबर पछैएर मोनसँ

मनु पासिक धावा जकाँ हम रहरै छी

टाग के पूजे छै सगव लोक जग मे

नाम टाकारै जेन टमा रहरै छी

डीन ते थेलौना हमर ठोन डमक

आरै हम काँगी कनम रिन ले बहरै छी

यागनातुन-कृतुय गव्वन-यागनातुन

2122-2212-2122

रहरै-थयगिह



अभिहित शिरी

22

रौन गज्ज

बाणी मेघ सगरो ज्ञन पठाएत ना

रौश्री हमार खेतत आ नहाएत ना

छनटे छेह पानिक रीट सङ्कपव ना

ते पव कागजक लेया रैहाएत ना



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक ISSN 2229-547X VIDEHA

देहसँ घास टूले बौद छै काज बा

हीछैव आरि तन के ले रँगधत बा

रोगत धान रौमन खेत के आड़ि बा

कादो कबत गालो ह'व चनधत बा

हेनत मान भवि पौखरि भवन पानि बा

रौखा "अहित" माँडक मोव खाधत बा

महँडुनातु-महँडुनातु-महँडुनातु

2221-2221-2212

रौले- - करीव



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अमित शिरी

23

पाकन पियब पियब केवा

थाएत सरै मीठ पेड़ ।

खाजा मिठाई जिलेरी

रौखा भवन डै चणैवा

झूह मोव बाजाक सुम्व



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

छमा नञ्जा गेन देवा

डाँवक त घूँघरु डुनकलौ

जेनक जखन घबक हएवा

माएक ओ कवत मेरौ

हवाडत "अगित" खुरै देवा

आहुत गङ्गा-हवा गंगातुल

2212-2122

रौनले आहुत

24

270



मानवीय

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

उन ले बैठेली निमियाँक नर गाम उन

सुतन हमर लौआ उन पवी धाम उन

थिम्मा कहै गोषु माक तू दास ले

परना मिरकि सुखारैत तू दाम उन

मिथिलाक पाहुन सीताक तू भाग कह

ठूठन घबरा कोला रैब रैनन बाम उन

माष्टिक त छै एते मोन एननि शिरम

अ जन्म के दूकारैत तू दाम उन

लोड्ी जपे छी निमियाँक रैजलैत छी



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली गरी रैमि रैमन "अमि" रैमि टन

मैथिली गरीम-मैथिली गरीम-मैथिली गरीम

2212-2221-2212

25

हमर कष्टरुव खाग जेए देरै तौरा

अपन ठाका छै नतामक पात जोडः ।

दोडः कथला सडःकषर तू ले नगा लो

आगि डुरै हाथ मे जेतो त जोडः ।

थोन थोनएरै तीती आ करैछी

272



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

छेव प्रेमिसक खेन मे के रैषत छेवा

सुबख दादा भोव मे सरके जगारै

मीतरै छै सगव बातिक माँ न कोवा

हिमम राँउ संग देखै छैन जेरै

"अमित" छनिहै कबर राँउ के निहोवा

हागनातुन

2122 तीन रैव

रैहले-बमन



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक बिदेह **ISSN 2229-547X VIDEHA**

देखियौ छै ओ केहल अजनास रँचा

जोक के ओ रँलले छै दाम रँचा

छै रँहसि गेल लषा सरँहक दूनावसँ

साग छेकै कहै कतवा घास रँचा

थेल मे मनु मदिथल गर्दीसँ प्योतल

पठत ले ले रँलले ओतिहास रँचा

ककब हिन्यात ओ मेला ठेला घुमेते

जीद मे काणते एकै भास रँचा

डास मे गीत मे नरँव एक छै ओ



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

"अमित" तै मागलौ सर खैबाम रैचा

हागनातन-महागुण-हागनातन

2122-1222-2122

रैहले-- असम

27

पंथी नगा उड्ि जाएर आकनि ये

रैनि कोगनी हम गधरै नर भास ये

ले जो पठ्ि रै के जेन गफुन माँ



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक संख्या **ISSN 2229-547X VIDEHA**

तु जाग छै रौदलै घब त रणराम मे

रौरौ अगल सैली खाग छथि कह किअ

की छै मज्जा जे रौरौ कम तशि मे

हम रीट अँगल एसो रौललै महल

मोना रौत उंगजेलै अगल दाम मे

खबल गकड्ा रौली दार देलै "अगित"

एते मज्जा रौलव के सहल बाम मे

कृतक गङ्गा-महङ्गात-कृतक गङ्गा

2212-2221-2212



अमित शि

28

भेन माया के शेषन हमरो कवा दे
मैठ काजब आ पाग पौडब नगा दे

तुष्टे लेमनदुय आ गीत गारै
मैठ नरका दे जैम नरके अना दे

छन शिन्म हमरो कैमवा ये रैना दे
आरै रौरी काकी कल माँ दूमा दे



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बैद घब ये बाबा कछु की कबै छी

कतमँ एलौ बाबा ओ छीका रैता दे

हम त बूमलौ छै थैव कोला ओ नरका

आरै ले मागरे "अहित" गाड़ि सजा दे

हांगनातुन-कृतुफ गव्वन-हांगनातुन

2122-2212-2122

रैहले--थलीफ

29

पठते लिखते रौशनी डाँकैव रैवते

गामे गामे मरैहक मेरौ कवते



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बोगस नदः ते बोगी हसते गते

एकव नामसँ मरैष्टी बोगो डबते

अगला बोखारक छिन्ना ले कबते

हज्जी डाँकठेव के छोरी ले छनते

नामी लोकक किछ कहलौ ले कबते

कमजोरौ के ओ बैगारी बुझते

ठाका के लोती कहियो ले रैनते

अशीर्वादो ठा के गङ्गा बहते

मिथिला माँ के मैथिल रैष्टी छी ल



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मकठे छटेते दुगुण मंगे नउरेते

दम छै दीर्घ मरै पाँति ते

३०

श्रीग येना ते माँ सुनसुना किल दे

छन मिया न्ना के गीठ पौड़ । किल दे

कर कठै छै भागव किए खुन पमवत

निखन छै जत कठेनाग पतवा किल दे

नान गुक्का दे लो पियव हुन भागव

नान देलै गिबचाग मुगा किल दे

280



बाट बाटे नष्ट आ कते तीड नागन

हमहूँ सीखरै रजेनाग राजा किल दे

दीग छन रावरै हमहूँ मदीव जगमग

"अमित" कवरै उपराम केवा किल दे

हागनातन-क्रुद्धहागन-हागनातन

2122-2212-2122

रहेले-थरीय

२



उम्रकानि सा



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मान्यविह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बौल गजल

कबरौ ले मज्जुबी माँ पठरौ हमाछै

ले बहरौ कतौ पाडु रैठरौ हमाछै

हम डी छेठ सपना पौघ हमर डै गो

कीनरौ काव जकवा पव छठरौ हमाछै

छूँछन डै मडिया आस रुदा ई डै

मोना अपन डत कहियो मठरौ हमाछै

टाक कात पसवन दुखक अहबिया डै

कठैते ई अहबिया आ रैठरौ हमाछै



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

पठि-लिख खुरै सरै तवि नाम अगण कबलै

जिनगी "उम" स्रमव अ गठलै हन्छै

दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ऊन दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ऊन ऊन-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ

(महाकुंठातु-महाकुंठातु-महाकुंठातु)- एक रैव प्रसक पाँति मे

ए बचसापव अगण मतिर ggajendra@videha.com पव
पठाउ ।



१. शिर अगाव सादर- रौन गज्जन २. शिर



अगाव सा- करिता/ गज्जन ३. किशेन कारीगर- हास्य
करिता



१



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मासिक अंक, ISSN 2229-547X VIDEHA



शिर कमाव यादर

1

बौल गजल

पुर्णिमा मेना एनए गो माँ

मेना देखर हमहूँ जेरैए गो माँ

गङ्गा मे मेहो डङ्गी देनकए गो माँ

दोस-गीत मेनाक ओविण लेनकए गो माँ



रैडकी दैया के संग नर जेरे गे माँ

दाए-रौरा के सेहो कहि देरे गे माँ

गामक कतेक लोक सेना चनत गे माँ

काका-काकी आ रौखा सेहो तैयार भेल गे माँ

सेना गाम सँ दूर नग गे माँ

पैले-पैर नए, तौरा कोरा मे रैठै गे माँ

सेना मे रैड भिड नग गे माँ

आँखुव तौरव धवले बहरै गे माँ



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

श्रुत खतन सँ मेना देखैए गे माँ

"शिक्षा" बिबली-गिठांग-मिनी कीरैए गे माँ

२



शिर अगाव सा- करिअ/ गजल

करिअ-

सुखीव

काव बहसन त्रास रहकन

महुमासे सँवास सहकन

अघाठ्ठ अक्षित गण्ड कमन

जन रूम बिब बिआ बिहसन

आड्ठि चहकन खेत दडकन



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११),

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

प्रमाणितक प्रमाणितक मण्डल सबकन

मोहित कनकन जूझनी गवकन

मोहिनी-श्रीवदना सुखले बमकन

“ग्लोबल-रॉडिंग” फलकन

मूर्ख प्रपत्ति मणकन

रिक्ताणक चमत्कारमे उद्घास डलकन

गाढ काँट लोव लेन रेलगो

गहिल किछुए ले नरगडनी नगेलो

अगल गतिक म्ठैयविग पकडेलो

मज्जुव किसानकेँ घर रैसैलो

प्रति प्रधान देसमे लावक म्हात

आर्थिक मोहितमँ केषा तीजत पात ?

ए लेव सुखाड साँला रीतन

दीनक आत्मा तीतन

भदैया बुडेल वर्ररीक कोन आनि



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

सूचना सूचना मन्त्रालय काम

अभिमान मान औरत रौत

देखो खेतिहरके तार ?

राह रौ रिताय राह रौ धमाय

रिग हथिहार लेख गरीब-गरीबक ज्ञान

जकर तऱ सकय मनयन और रिगयन

आहारदेमये तग बसायनक चर्चा

रितायक रौत ये मगरो पाँनीयन

कागत जोड़ रौ बहरो पनामष्टिकक पचा

आजूक बसायनमँ माष्टिक कोथि उजड़न

रुष्ट डोष्ट किछ ले मजड़न

पनामष्टिक जोड़ निश्च जूठक रौवा

पाँनीयन ले ठोगा-मोवा

जोड़ रौ धमचक्र



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

एडिशन रैषरीक टक्कव

पकड् ० अंगन रौग प्रकथक देन हथियाव

धले मौलिक संस्कार

कैमिकनसँ नहा तँ जेरो

झुदा ! की टिरोरो.... ?

दूरी गजब

(1)

कानबात्रिये महमद क्षिमाण कोना आधत

मोममे पाप नरैवत भगवान कोना आधत

नहि जड् ० प्राण राह मरन सबन देह संग

अधम नीचाँ खसत धर्म गगनमे रिनधत

माँस आंगन कष्टक रौन नहि रोगु प्रियतम

काग कोगनी मन कोमल मँतान कोना पधत

बिबह मासमे ल मोहव मोहनगर नली छै



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कैठमे शित्त चलेन मङ्गीत कोना गाएत

अगल कक बाम नीना लना दूध रिय कानए

कर्मजीक पुरुषलेँ जयकाव करेन हाएत

(2)

कहू की राँत हम गानिनि कबूय भ२ गेल अछि अर्पण

कोना सहलैँ अखन कँठक दलैँ छैँ ठीसतव तर्पण

सोहालैँ लेँ खुशी सबगम समाजक हाम परिवर्धित

धुलैँ छी देन कानक गति गदवालैँ लेँ रिकन ज़ोरन

पतित नियति आफन भेलैँ जड़न अर्पण तर्पण छैँ

सूतन अगि सब पथक एलैँ समाचारमे रिटन

बाँहबसँ जे जस्त गुमनाम हिस्साँ ओ ओते रिखध

टाँगन रँहलैँ उँयाकाले राह लौ जहानक संकल्प



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

भैरव जेकरा जतः अरमवि हाथ धोमक हनानीसँ

नीतिक मांगव चर्चा ते करे माष्ट लह प्रति गर्जन

३



किशोर कारीगर

अहिष्टा एकष्टा नीक लोक छी .

हाथ करिता

"कारिगर "कतेक दिन रौद पवीक्षा पास केनक
ओ त रौद रूडिरक अछि
अहाँ त रौद पहिल रौडका हाकिम रनि गेलौह
ताहि द्वाले अहिष्टा एकष्टा नीक लोक छी .

अहाँक सफलताक बाज त



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

कहियो ल कहियो कही सकैत अछि
अहाँ अगल जेन हवाग बहैत छी
आ अहीछा एकछा नीक लोक छी .

सब समाज सँ कोला मतनरै नहि बखलौह
परदेशे मे दुर्गजिना सकास रैना जेजौह
गाम घर सँ मूह बखलौह के
अगलमाल अहाँ बुडिरैक बुझैत छी .

अप्पास सञ्जता संस्कृति अकछा नगण
ओकवा अहाँ रिसले छहैत छी
परदेशे मे रंग-रिबंगक संस्कृति मे
अहाँ के नीक नगण खूब मगल बहैत छी.

प्रियो-पुता के माहताया नहि मिथरैत छि
ओकवा अंग्रेजी छी रैजे जेन कहैत छी
महिभायक आदोषन छलौमिह बुडिरैक
आ अहीछा एकछा नीक लोक छी.

गाम घर गडअएन अछि बहिए दिओ
नहि कोला माल मतनरै बाथु
अहाँ एसो मे रैसन आवास करैत छि
अहीछा एकछा नीक लोक छी.

सब-समाज सँ मूह बखलौह तहि द्वाले
हम रैकजेन बुडिरैक घोषित जेन छी
अहाँ कपेया कम ढबेरी नगेलौह
तहि द्वाले अहीछा एकछा नीक लोक छी.

खली कपेया छी छहैत छी



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अहाँ बिधुबलौआ बैरैहव कलैत छी.
पागल अहाँ जेन सभ किछ
आ अही छी एकछी नीक लोक छी.

कियो पहिल कियो रौद मे
मेहनत करनिहार त सफल हेरौ कबत
ओकवा अहाँ आसोहित कियक नहि कलैत छी ?
यो सफलतम मनुख अहीछी एकछी नीक लोक छी.

ई बालागब अंगन मतिर ggaj_endra@videha.com पब
पठाओ ।



छन्द कथाव सा

सबरा, मदलमेव अंग

मधुबनी, बिहार



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रौन-गज्ज

1

टाव गव छै लोखा रौमन,

माँस अँगवा लोखा रौमन ।

घूँ-घूँ खाथि दूध-भात,

मायक कोवा लोखा रौमन ।

बाजा-बाणी सुनथि पिहानी,

मगगाँ कोवा लोखा रौमन ।

उ-ना-मा-मौ मिथथि-गठ्थि,



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बौराक कोवा रौरा रौरा ।

सुप्ता-मेवा मंग तेले डुपि,

"टप्प" अंगना रौरा रौरा ।

रूप-१०

2

रौरा गजल

अकककु जखन अरुवा रौरा,

किविण अककक मुँह मै नागल ।



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कोश डकनक कोशनी रोजन,
आथि मिडते छुनन जागन ।

बहा-मोना के कगननि जनथे,
गमनन गेनथि घंठी रोजन

दीदीजी रंझु नीक नलोत छहि,
मान्दव जी के छुडी नय भागन ।

काष गकडा के ठुठक-ठुठक,
तेयो थोले पव मोष छे ठाँगन ।



"टंदन" ठन-ठन घंटी रँजले ,

डुङ्गी तेनग घब दिस भागव

रणी-१३

3

रौंग रँजय डै ठव-ठव-ठव

रँगवा उँड्म हव-हव-हव ।

सबणा सहले सब-सब-सब,



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक संख्या, **ISSN 2229-547X VIDEHA**

बौन बैज्य छै कब-कब-कब ।

मिन चमय छै धब-धब-धब,

सौंन समबलै सब-सब-सब ।

छुममा डोती धक-धक-धक,

डबसँ कापय थब-थब-थब ।

पप्पा एतखिन भागि गेल डब,

बौत पदरैय छब-छब-छब ।

बर्ष-१२



कौश्या कूटवत भोलै अँगना सँस गलेत ठुथिह मज्जना,

डम-डम-डम-डम पायल रौजे खनकि उठल कैगना ।

मान्नुक रौनी नलैए गियवगव ननदि रँगल रँहिना,

गम-गम-गमकय तुलसीक टोवा टावल सन अँगना ।



बटि-बटि साजन कप मलारुव कत रौव देखन एना,

ष्टिकनी-काजव जूझी-थोपा नरका-बुआ टमकय गहना ।

गहिनहि साँस रौवन दीग-रौती जगमग घब-अँगना,

उंगन टाँस असमान छन्द मे उठन बिबह लेदना ।

मेज सजौल रौष्ट तलैत डी एताह कथन घब सजना,



"टंढ" सज्जी ग्वणधूँ लैमलि की मांगरें झूँत रैजना ।

बर्ष-२२

5

साँस पवन, लैमि पिगव पव टिड़ कवय पंटेती,

सूगा-मैला राह बटाउत रैग्वना कवय घँकैती ।



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक ISSN 2229-547X VIDEHA

शुद्धि-शुद्धि के शुद्धि नाट्य क्षेत्र हेतु रणभोज,

कोश पिछरेड जान कोशनी गारि बहन डग टैती ।

रंगवा-गवरी अपन्यात अछि गतिजाम मे लागन,

डकन रैनन मोटि बहन कोश हेतु अछैमैती ।

पोवकी पिगली रंजा बहन छै छैछली पिछै ठानक,

मोव नटेछै ता-ता-बैया "टंढन" अछुत अ अछैमैती ।

रर्ष-२०

6

नरका अती नरके मनराव

302



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

पहिल कय रूँटी भेल तैयाव

ननका शीतलक ग्रहनक जूझी

रौजे कनमूल पायल सल्लाव

हाथक रौना खल-खल-खलके

छम-छम छटि के गेल रँजाव

ढोलक-पिपली आ तमशी-नाट

सुनल देखल हवथ अगाव

रौराक हाथ पकडि कए रूँटी

प्रहलित घुमल छल-रँजाव



बर्ष-१२

7

मस्जिद जखल गबन अजान

कोशली ठमनक गवाती गान

कोशली डकनक खेत खरिहान

रैगना खता रिट कवय नान

गब-गब दू दूँढ रैखान

ठक-ठक गडक नगोल धान



बारी छथि बारी बारी मछल

बारी अंगना मे नगरीय पाल

छह-छह जाल पूरि अमंगल

टंढल जलथे मे दूध मखान

रूपि-१२

8

दर बहन छी अंगन मेथ, ले कानू रीश



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक संख्या **ISSN 2229-547X VIDEHA**

लेखक वर पप्पू ठाकुर, कटने कोश

हम तब मय भी मठ, मूदा लेखन बाटले

कवि थेलोना देर कत संनहि अछि ठोखा

तबना बागन खेत, महाजन के तपोदा

लेख कोना के मथ प्रलोताह राग कमोखा

अही प्रवासर मथ मेहन्ता आस थेल भी

अही जूड मय भी रीति क पूत कमोखा

करुणा, पाती, विषय, लहोवा, कलेडी भोना

लेखनात "टप्प" छठ मय खुर छठ ोखा



रर्ष-१७

9

भैया के नरका बुझि आ हमरा दीदी के खेवण

उत २ सौमे गाम घुमे छी हमरा अगला मे रैठल

टुला-टुकी, रैठल-रौमल, आगा मे लेकवरौ हम

हमरा छाली कापी-पिन्नि, रैठल के देवहीजेहन



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

रौआ डड डारि थेतो हमा ले दूधो गवगठ

जौ ले कबरौ छह तखन नगतो मोन केहन

रहुत सहनियो आरि ले चेतो तोहब दुलती

हमरो चाली रैखा आरि ले चेतो कनडप्पन

छी माय हाग रैदनि जाले रैछी ले रैछी मे कम



“टंढर” गमकेत भरिया बटलै हमरौ अगण

रर्ष-१६

१०

एकदिन हमरो हेतग मकान

एकदिन हमरो हेतग रँथान

एकदिन हमरौ कीरँ समान

हमरो घब रँगते पु-गकरान



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

एकदिन हमहूँ बूढ़रंग टाग

अंतर्विषय मे हेतै हमबो दमन

सबकेसो अपन केसो नहि आन

हमहूँ रंगरौ गांधी मन महान

रिप्या-रौतब के जेन अस्मरण

कवय जे "टटल" रंगरौ महान

-----रंग-१३-

११

टिका करैछी खेमरंग खेत पथार मे

हमब नाह टनतंग उमती धार मे

गमकन सँ जखन घुमरंग सँस मे

रौरौ संग मे घुमरंग धावक पार मे

आमक गांधी खोपड़ ी तब मारन पर



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

काका संगे हमूँ रैनरौ बखरौव मे

गीजन-गाँथन हम बहि खेरौ रौंठी मे

माय लौ हमरो साँठि के दहीन थाव मे

झवही कटवी मिम्री खेते ड़ेक मेहन्ता

“टंन”तै ड़ेक जोठरुा जोठरुा त नाव मे

-----रूप-१३.-----

१२

पकड़ि के दारौ टनग ड़े

खल ठेहियाँ भवग ड़े

मधुव सनके रौन नाली

जखन माँ-पप्पा रैजग ड़े

छठि क२ ड़ाती पव कका कै



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ভাভা কে নগলে হৈসগ ডে

স্বগা মৌনা জখন রাজ্য

স্বমিকর খগড়ী পিঠগ ডে

মলাবথ সভা গুলোটে

রৈগম কে টন্দল গুলগ ডে

-----রূপ-১০-----

১২২২ ২১২২

রৈহলে-মজবিশ্ব

১২

মাগ লৌ হারো কীনি দে২ ল২ চান একটা

দে২ ল২ থড়ক পুরী ফোকা মখান একটা



छमले गजोबिया बाली डै कोजगले डै

बौरा हमरो दीख ल थिली पाण एकठा

छकलेछ-रिक्छे भ२ गोले कछ महग

गप्पा हमछ कबरैग दोकान एकठा

छेछको छटा केत२ आरि भ२ गोले बौरा ली

मैया हमरो कमिया क२ दे झुखान एकठा

छान पब घर हेते तावा पब दानान

छदन हमछ भवरै उड् ाण एकठा

-----रर्ष-१३-----

१४

भोव भेलै शोव भेलै

काँटे निम्र खोव भेलै



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

माघ मास शीत जल

दहो-रहो लाव भेलै

कँठ कँठ मे गडलै

भोग बहि मोव भेलै

लैस भेलै पारी तले

डाली डाढ़ी घोव भेलै

थारी रौपी गिठैत छै

माघ मोष घोव भेलै

---रूप-+-----

ई बचनपत्र अपन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मधुबनी



१. जगदीश्वर सा मन्त्र - रौन गज्ज २. बाजेने



क्याव सा- दूठा करिता ३. जगदीने असाद
मण्डनक किछु गीत/ करिता

१



जगदीश्वर सा मन्त्र

ग्राम पोस्ट- हविश्वर अमरेश्वर, मधुबनी

रौन गज्ज

१

हेलो कोश्वर थमा दे एगो थाम हमरो जेन



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

देखौ रानी म जे देखै दास हमरो जन

जन-जन गे रूचनी छलै और तेनएरै

भ गेन देनलै जे म काम हमरो जन

बहि छमलै एना जे कै अपन गुडिया

तोबा मँ सुन्नव देखीन बाग हमरो जन

रैहूत केनहूँ काज कमनहूँ रैहूत बाज

आरौ तँ घुबि आउ रौरू गाम हमरो जन

सरकै नाम गे म कते सुन्नव-सुन्नव

किएक बहि मन्न मन नाम हमरो जन



(सबन रार्तिक रैहव, रर्-१७)

२

लगा हय मए कै अर्थि जुवएरै

मिथिला कै अणन मोना सँ टमकाएरै

मूबत सब घरे बाये मिया कै देखू

एहन अर्थि कतए मेन देखाएरै

गंगा रैमति पारन घब घरे मिथिलाक

डूँरकी मारि कमला घाँट बाहएरै

झरूँती भवि मिया भागक अणन हय मोनि



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

अंगल माई मेँ हँसि हँसि कैँ गोवाएँ

मल्ल दै मगत घब घुरि आँउ काका राँउ

लल्ला कैँ कथल तक कोँठ ठोवाएँ

(रँहले बज्ज, २२२५)

३

छम छम छम छम तावा चमके

लौआ कए हाथक तकआ गमके

काबी रँकबी, नरँ उल्लव महिय

नाल रौन्डी किए दोब-दोब रँमके



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

लौकिक घोवा सय-सय कय देखु

काका के घोवा सिद्धी कतेक कयले

बारी के साडी मय के नहंगा रहे

लौकिक के गघरी त कतेक सयले

लौकिक हयव आरै थगगा किअ

किअक ले ठूक-ठूक ठूकले

(सबन बारिक, री-१३)



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

मएली हमर श्रुतता की भेन

दाइ हमर सुनसुना की भेन

बौरा के कहलौन सरे हललौ

सरैली हमर थिलौना की भेन

दूध-भात और हम बहि थेरौ

पेठैका हमर सभा की भेन

हम जे बूढलौ बौरा-बौरा संगे

बातिक हमर सभा की भेन

टंदामाया कइल जे अललौ



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हमब निकल चुसना की भेन

(सबन बार्षिक रँहव, रँ-१२)

३.

हे मधु नहि चबलै नध गाए जेरौ हम

पठा हमरा अकुन कोपी पेल जेरौ हम

अगल भाग्य और हम अगल सँ निथरौ

अकुन जकाँ ले माँडे तिवगीत हेरौ हम

रोगहा-रोगहा सब क्रियो कहए हमरा



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुसिंह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

एक दिन रैनि डाकठेव लोग हलैरौ हम

छैठन- झुठन अगण झुसक घब तौरि

सुखव सब सँ पौघ महन रैलरौ हम

हमवा कहैत अछि मय्य' झुर्थ चबराँल

पठि कए सब चबराँल कै पठैरौ हम

(सबन बार्षिक रैहव, रूँ- १७)

७



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बिषय पत्रिक नाउ टमाएरै हय

बिषय चक्राक गाउँ रैनाएरै हय

हमर मोन मै तै जै किछु अथत

बिषय मोटल सभ सुनाएरै हय

अपन रौह मै हय नहि जाएरै

सबाध दिन रैजा रैजाएरै हय

कमियाँ कै नय ओकब लेहब सँ

मान्सुब सँ खुरै कतिजाएरै हय

मल्ल मल टटन ठैलए सभकै



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मान्यविह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

केकरो लंथ ले घुबि आधरु रुम

(सबन वार्षिक रँहव, रँ-१३)

२



बाजेश्वर अमावसा (कन्हैया), पिताक नाम :- श्री
बिजय अमावसा, गाम :- घोघवडीहा (पुर्वाञ्चल), पोस्ट
ऑफिस + थाना :- घोघवडीहा, जिला :- मधुबनी, (बिहार) -
847402

१

ढोड़ू, ढोड़ू, अ पश्चिमी सन्तता, मानर समाजक अंग सन्तता
प्रकारिय
माय - रँग क मेरा पकय कर्तारु जी, ओ रँगिय होयते
रुकावरीय.



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मेरा- का तन -मन मैं मेरा करे छी, ओ वृथाश्रम मे
पहुँचावेय.

छोड़ू छोड़ू ई पश्चिमी सन्तता, मानव समाजक अंग सन्तता
प्रकाशेय
प्रकाशेय ..

अर्धगिरी मंग ज़रिष रितारै छी, ओ ज़रिषमे छोड़ैय छोड़ैय
छोड़ू छोड़ू ई पश्चिमी सन्तता, मानव समाज क अंग सन्तता
प्रकाशेय.

विस्तार - नाता जेन लग करे छी, ओ अकरा पागमँ तौलेय .
मंगी - साथी जेन ज्ञान दै छी, ओ दिशेय दू चारिछी छोड़ैय
तोड़ैय.

छोड़ू छोड़ू ई पश्चिमी सन्तता, मानव समाज क अंग सन्तता
प्रकाशेय

महात्मा परिवारमे खूँशीसँ बहे छी, ओ तनका असंग बहेय.
अकेनापन तँ महसूसै ले होय छै, ओ अंग जेन नमो पाव
करैय .

छोड़ू छोड़ू ई पश्चिमी सन्तता, मानव समाज क अंग सन्तता
प्रकाशेय

ले सिखू हुनकर ई अग्रणी, ओ डिवा परमे शिवाँ- सिगले
पिरेय ,



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

माधुमिह वर्ल्डव्हाइड ISSN 2229-547X VIDEHA

मिलमा गठबलठसँ दुगव भऽ, ओते नारनिको गनत मय्येक
रैगलैय.

डोड़ू डोड़ू ग पश्चिमी मन्त्रता, मानर समाज क अपन मन्त्रता
प्रकलैय

मिथु हुनकव किड मिक गुन , ओ गेहव मडककेँ गन्दा ले कलैय.
हुनके छनते आग ओबते , खुनिकऽ अपन गिछाव प्रगष्ट कलैय.
डोड़ू डोड़ू ग पश्चिमी मन्त्रता, मानर समाज क अपन मन्त्रता
प्रकलैय

२

देखियौ देखियौ ग रैठेत ताम्र, अन्यायक रीज
अकुरेलैयऽ,
महनमिडि हुनका ले छुनि, रात-रात पव नडैय.

मले-मालैपव उताक होग छुनि, रात किड ले बहैय.

एक दिन मडकपव देखलौ, रैकसुव गवीरकेँ मलैय.
तहण मोव मलैलौ, तैयो लोक ले एतऽ आलैय .
लोक देखेत जागय, कियो ले एतऽ कलैय.
तहण ओ आयन हमरा नग, धक्का दैत भलैय.
अरौक देखते बहलौ, ग एना किए कलैय,
ओकवा जागते सरै पुडैय छै तँ रैमी ले नागनय.
पुडमिअनि अपना मडकेँ अकव आदति ले पडनय,
जखन देमि गुनामे डन तखन सँ खुनमे तँ ले रैमनय,
पड मी अग ठान अन्याय होग छै लोक छै नलैय



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अगला सरहक महल शक्ति ओकरा रैदारा देलस
ऊँऊँ आराज दियो जेँ एक ले छी तेँ तँ ए डबेलस.

छोड़ छोड़ ए गम मदिवा यहर तँ तामसी रैललेय
आँ सगथ लिख अग तामसकेँ शीवीवसँ भेलौलेय

३



जगदीश प्रसाद मण्डलक

गीत-९

मोक जूखानी मोकए नलो छै

ऊँया पारि ऊँसए नलो छै ।

मोक जूखानी..... ।

जाधवि मिब सृजे शिविब छै



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानकसिंह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

हाव-गास्र मिहलैत बहे छै ।

स्रमिहते कोकिन कहूँकि रसंती

भगभगगत मम तनतनाए नली छै ।

मोक जूझानी..... ।

बग-बिबगक रन-डंगरनमे

बग-बगक मुन खिनए नली छै

पारि बम महुआडी सिबजए

कोला गिथ छुभलैत बहे छै ।

मोक जूझानी..... ।



गीत-२

रैमले-रैमले नाटि बहन छै

गुड-टाँव गल हाँकि बहन छै ।

मिसकेत-मिरकेत कतौ देखि

मग गिलि क२ कागि बहन छै

रैमले-रैमले..... ।

ऊहलेत-ऊहियागत धाव देखि

मग गिलि क२ दारि बहन छै ।

घट-घट घाट रैना-रैना

धाव-रिटाव रैना बहन छै ।

रैमले-रैमले..... ।



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

गीत-३

श्रमकीये रौश्राए बहन डी

उन-रौन रौश्राए बहन डी ।

श्रमकीये..... ।

कथला अन्व-रिहासि देखे डी

सष्टि-पानि रिट पडऱ नलो डी ।

श्रमकीये..... ।

घाम-पन्नि रैहि बहन डे

अनि-निबानि छलि बहन डे ।

धकम-धूकम छलि बहन डे

उनागत-रौनागत मल कह डे ।

बि एन ए बिदेह *Videha* बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह अथय दोशिनो पौष्पिक अ पत्रिका बिदेह'



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानुषीमिह

अगकीटय..... ।



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुसिंह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

गीत-४

भूत रैनि त्रुतिश्रएन डी

मिा त्रुो रैनि भूत त्रुतिश्रएन डी ।

मंगे-मंग जगलौ

मंगे-मंग ठुलौ

मंगे-मंग चलि चलि

मंगे हेबाएन डी ।

मंगिया मवि जगल

रुम त्रुतिश्रएन डी ।

केकवा कहलौ भूत त्रुतिश्रएन

रुतिमंगल डीडाँ श्रएन डै ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्वमिह

बप्पव रिट फक्कव रैमि

नाजे-पडः एन डै

नाजे पडः एन डै ।

भूत रैमि त्रितिश्रएन डै

रैमि भूत त्रितिश्र एन डै ।

करिता

१

दिल-बलिक खेव

अगल हाथक खेन मीत यौ

अगल हाथ खेन ।

संगे-संग दूनु छलैए ।

गजोत-अन्हाव रैलैत बहैए ।

हँसि-हँसि कानि-कानि



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

पठका-पठकी कलेत बहे।

एके गाछक डारि डी दू

सुखन-रुखन फडेत बहे।

बस बग सुखद गठ्ठा-गठ्ठा

तीत-गीठ रैगलेत बहे।

अगल हाथक खेन मीत यो

मंगे-मंग खेलेत बहे।

नगकि-नगकि कले-कले

गजेत-अग्लव दलेत बहे

पीठी छठ्ठा पीठिया-पीठिया

एवारत मजलेत बहे।

तँए कि अग्लव हावि मणि

हवदा कहियो करुन कले।

जल्मि सगष्ट रिनाअ रासके



मैथिली

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जिन्गीक खेन देखैत बहै।

अगल हाथक खेन मीत यौ

संग गिनि संगे चलै।

मत्र एक बहिनो दुख

रिधा दु कहलैत चलै।

रिधि-रिधाष बटि-रसि दुख

गन्ध-गन्ध गढैत बहै।

छठि गाढ तनतना-तनतना

गीत-करिनु सुनलैत बहै।

ताना द२ द२ रिहूँसि-रिहूँसि

मावि तानि हँसि-हँसि कहै।

एके गाढक खेन मीत यौ

संगे गिनि दुख खेले।



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक बिदेह www.videha.co.in ISSN 2229-547X VIDEHA

बैजा पीहानी बाटि-बाटि

बैगमाट दुनियाँ मजुरैए ।

कैठ कोकिल करित करि

करिकाठी बैजुरैत बहैए ।

कतौ ल किड डै दुनियाँमे

मन मानर गठेत छु ।

मानर मन्थ खवादि-खवादि

बाति-दिन बैजुरैत छु ।

अगल हाथक खेन मीत यौ

हाथ-हथियाव बैदलैत छु ।

२

किड ल बुझे छी

के केकब हित के केकब अद



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यविदेह

दिन-राति देखैत बहै छी ।

गवदनि पकड़ि जे कषए कनपए

पकड़ि गवदनि तौड़ैत देखै छी ।

किछ ल रूँसै छी ।

हित रनि मिनि संग चलैए

रुद्ध रनि-रनि गठैत बहैए ।

सोममतिना छानि पकड़ि-पकड़ि

साँखुव-रौष ओमवागत बहैए ।

डाबि-पात देखैत बहै छी

किछ ल रूँसै छी ।

डता-मधू दूनु रनि-रनि

रिष मधू गठैत बहैए ।

हित रुद्ध रनि-रनि दूनु



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संकेतः ISSN 2229-547X VIDEHA

बाति-दिन सगडेत बहे ।

देखि सगं ता गडेत बहे छी

किछ ल रूने छी ।

सग गिनि पाथव तोडै जे

पाथव डुंगव हकेत बहे ।

पाथव मग गठ्ठा-मठ्ठा

पाथव रूमि देखेत बहे ।

पथवधन पथ देखेत बहे छी

किछ ल रूने छी ।

आगि चठ्ठा अन्न जलिया

पथवा पाथव रलैत बहे ।

जीरण दाता कहूँ-कहूँ

पेष्ट पाथव रलैत बहे ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११),

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसुषि

बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह

किन्तु ल रूने डी ।

ए बाबापव अणव मतिर ggaj_endra@videha.com पव
पठाड ।



१. बाबापव वंजण मित्र- बाबा गज्जन २.
मिहिव ना- बाबा गज्जन ३.



गजेन्द्र ठाकुर- बाबा गज्जन

१



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



बास्तीर बंछन मिसे

1

जोवहिं जोव ठुँव लोखी अगला रथे रथेवय ले

भुमि किमरी कए सज्जी छक लोल दोवय ले

उकवा ल लोला यतवरे ककरो मँ कथनहु

दोवि धुनि थाले जखल भुख दलो त कथय ले



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

जर्नल ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रौखी खुब खुब दोबय आँगन आव दवरञ्जत

राखी के देवस चौक टुनटुनिया राजय छे

देखत राखी नख कला आ दीदी सभ बिलेव भ

रौखी सभके लेखत रौखी से रात सुनारय छे

मौ लेख सय घोष तानि एही रौखी से दुब लेख

देखि पलेव कोन्ही पव मौ रौखी के नीलेवय छे

राखी आनि उठा कोवा से चुमि छापी क नीक जकाँ

लेखेवा उकरा माय ठन उ लेखा अकरय छे

माय ह्रमि कए चुकावि लग्न के कोवा वए



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मासुबिह संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

घोटे घोटे दुध पियाले खीया निले खीकबय ले

बाजरीर अग्रपम छमि बिबोकि माय सल्लारक

बिबोलेव भ मायक लेव पर माथ सुकरीय ले

(सबय रीरिंक रेलव)

रुई-१५

2

हम आवत के रीव खराण रेलरै

हम मिथिबक प्रुत फलन रेलरै

घब हमर जे उखबय वचवय

रेसरैय के एकव समान रेलरै



माय लो गठलौ लय खुँ लोख वगै

ले गठल विखल रंजमान रंजरे

घब सयाख ले देखति स्मृति लय

प्रबजोव अजोवियाक टाल रंजरे

पछायल छे देने लोस मिथिवा ले

अग्रणी भए सुधावक ताल रंजरे

काख कवरै लय सरल सग लय

आ मैथिल छल झलक गाल रंजरे



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मान्यता प्राप्त ISSN 2229-547X VIDEHA

हम सम्पन्न खोजत छी आओ माय ले

माहबुसि मिथिला केव यम रंगरं

(सबब रार्गिक र्ग-५४)

3

मो ले आओ रंता किया टना मे करी ले

हमरा कर किया मराव ओ भारी ले

देखव मदिखन लेवा कछ करेत

रुना केमव रार्गु कियाक लेगावी ले



मानवीय

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रुमर अंगी सत अष्टम गुवां अ

तेरवा त रंस गानव दुष ठी सारी छे

सरं थाय अंगल यव नीक निरुद

रुमर लव क्रिया जे नून सोलबी छे

तातक संग अंगल सल्ल सरं दल

दाखल बाहविक रंदल थसारी छे

कनिके ठी यव दुषावि अंगल छेक

अंगल ये नहि एकर छे ठी लो-गारी छे

रुमरी रुमर सरंठी नहि लल्ल छी ला



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

जे ज सज्जो ठोका केव पावपावी छे

हमरै गठलै आ रैछ गोज कयलै

बिखव लेला भाग मलव अछावी छे

धीबछ बनि तू ज्ञीलेत बर पाय लो

लेछो लेलव बुलै सर बुझिवावी छे

(सबव रर्षि रर्ष-१४)

4

गठि बिधि कय लेखा बोलव बल्ले

सत रौरी के कलव आखव बल्ले



दिन गच्छेत्तय हमरो मरैरुक

भवव सब लाकब छारुव बरुटे

दक्षिण कवय एकर आलोचन अछि

लैखी मरैतवि भए धारुव बरुटे

मोक्षक हमरो सुनिषि भगवान

कलेख अपन भए छारुव बरुटे

माय रैलिष खलदलक पुवतय

लैखी मरैरुक लेव मागव बरुटे



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

बैठतय नित दुना बति छविगुना

भवव नित लौथोक गौगव बल्ले

(सबव बार्गिक बेल्ल, र्ग- १४)

२



मिहिव सा

बौव गल्लव

1

समसम बेल्ले बूझी लो

छेष्टेय छवले बूझी लो



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

आगु पौछु यमले छाय

खता ये रैठ गछटुमी लो

आय लेछय साय गुछय

छोया देवक छुनटुमी लो

बाछा ल छैथी यावय छेगो

रुखव छले यधुखेमी लो

2

उछव भत गठका दूय रैछका खीरी छले

ले खेलेखी कनिया प्रतवा नरैका गाछी छले



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

लेया गहिले नरैका अगा दगोयी आ बगुआ

लेटी हगु छिये लेख आर ले डारी छले

लेया लल खेवाछ ले छेकुक हग छी ताले

दुख बात ड कात ले लेखी हगवा गीरी छले

काकाजी कल मजबुति लेखी खख छेकवा

अगल वीरी अगल साँठी हगवा बौछी छले

ओया वीर खुरे खुराले छेकुक लुबकी बौछे

छे छेकुक काँछे खसारी हगवा आरी छले

३



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

थी ह्य व लोथी दूषे भात

ठुनकि ले हो ग्राठ कात

गठि रैलरें तु री छी उ

मोष बाथ ह्यर रीत

पेये ह्य सरें दे छे थान

चोली पोरें गहिय गीत

छो जे दूकालेत एथन

कान गाथि अमले रीत

मोष वगा छॉं पठरें तु

ठीका ह्य लेते रैवसात

8

डनकी लेवा गीतिया मोष

गाहु वानि सरें लेव रैनु

अजल रैनि ह्य थानु छी



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गोर्छि बैलज अगल रघु

दुख सोखबै लोयवा गोरी

मकरी छैल ठाठ लोह

छो छैल मर अलि छट

मोटे मरैछे अगल छल

३



गजेन्द्र ठाकुर

बोव गजव

कनियो गजवा छोट, आलु बारी



छै बग गवारी छै उँ जगु बारी

लौल-लौल लिखै छे देता सभ

रसमय वर घुबमि मागु बारी

सात बग वर लेब लेब गायमे

परी कहै गाय अकलु बारी

कलषी दुर लेले रौछा सभमे

भवम आनि दिसवी ठागु बारी

गानि अकलस धवती छा-छा घुमे

पथ वगा छैकली अकलु बारी

धन्य गच्छिया संग खेवु कुदु



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानकसंख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

वाति संगणक सिद्ध आनु बारी

सुता दियो ए ग्रहियाल्ले आ सुतु

छटि एबरत दिन आनु बारी

ए बचसापव अपन मतिर ggajendra@videha.com पव
पठाउ ।

विदेह नूतन श्रक सिधिता कता संगीत



१.

जाति सा टोपवी २. बाजनाथ सिधे



(चित्रमय सिधिता) ३.  डमेने मण्डन (सिधिताक
रसपति/ सिधिताक जीर-जु/ सिधिताक जिनगी)

१.



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानुषीमिह



झाति सा टोखवी



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



२.



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



बाजनाथ शि

द्विमास मिथिला स्नागड शो

द्विमास मिथिला

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

३.



उमेश मंडल

मिथिलाक रसपति स्नागड शो



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक ISSN 2229-547X VIDEHA

मिथिलाक ज़ोर-जुड़ु झागड मो

मिथिलाक ज़िन्गी झागड मो

मिथिलाक रसपति/ मिथिलाक ज़ोर जुड़ु/ मिथिलाक ज़िन्गी
(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

ई बरसातक अगल मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।

बिदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा) लेखक: उदय शर्मा (मूल हिन्दीसँ
मैथिलीमे अनूदित रीति उँगेल)

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैल)

२. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतसक हिन्दी उपन्यासक अनुवाद सा द्वारा
मैथिली अनूदित



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA



रुक्मिणी कायत

अछेत जात

माय गो,
कतेक दिन तक हम रैछा बहरै
रैकबी संगे खेलैत बहरै
हमरो दुनियाकेँ
जालैक एगो मोका दे दे
माय हमरा रैछा दिया दे ।
ते छोट हमरा
मालिकक रैछा
अंगरेजियेमे हष्टव-हष्टव करै ते
हम ले रूमे छी
देरनागबोयोक एगो अफर



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

माय गो,

हमरो युन जध दे ।

मानिकसँ जा क२ तूँ कहि दही

ले चलेरैग और हम

तेस हुनकर

ले थोरै तबकारी, बोधी

हमरा बुल बोधी था दे

रूदा माय गो,

हमरा तूँ पढे लेन जाय दे ।

पढि लिख हम

अहमब रैनरै

तोवा न२ नरै साडी अरैनै

राबूक रूबहक महावा रैन

हम दुनियामे नाम करैनै

माय गो,



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आरंभ हमरा अपन त्रिय रंभारं दे

हमरा जिनगी सराव दे ।

२



गंज टोपरी (नरेश्वरी), राँची- श्री भागेश्वर
टोपरी (लोक स्यान्त्र अतिरिक्ता रिभाग, रिहार सबकाव (जमुङ्ग)
मे कार्यवत), मातृश्री- श्रीमती रंभारा देरी (गृहणी), जन्मतिथि :
११.०९.१९५०, स्थायी पता: ग्राम+पोस्ट- सुगौना, प्रखंड- बाजुनगर,
जिला- मुर्शिदाबाद, विधान सभा क्षेत्र : नं. ११, शिक्षा
योग्यता : बाम प्रमुख महाविद्यालय, मुर्शिदाबाद (विधान) मैं राशिज
विषयक संग न्नातक रंभारा मे अध्यापक (ICAI , नं. ११ मैं
C.A.(फाइनल) एर I .C.S.I .नं. ११ मैं C.S.(प्रोफेशनल) क
संगे एकठा प्रांगरेष्ठ कंपनी मे महासक प्रबंधक (रिक्त एर कव)
क पदपर कार्यवत ।

बीच करिअर- मेघक छेव

माँ लो२ तूँ ज कहलै हमरा
मेघ मे लेँ छै पोथरि-डरवा
सम-सम मेघ अते२ रंभरे छै
कह कत२ मैं पाँषा अरै छै ?
दैनिक-दैनिक जेँ उमरि बहन छै
मेघ मेँ छेवरीँ छहलि बहन छै !



माँ लो माँ अ रात रैता तू
सुबज जले की कोला जादू ?
पुर्न मँ उगले पश्चिम डूबले
पुर्न मँ हव कोला निकलले !
रैह दोबरा अ काज करे डै
सुबज उठा कः पुर्न धले डै

माँ लोः चाक लोन कठेरी
कियो करे डै बागत कः दोबरी
किडु दिस पहिले मँडमे देखन
आग बागत मे अदला भैठन
मेघो मे रैडु दोब बहे डै
दोब-दोब जे टास कठे डै

कतेक तरेगन मंग उली डै
दोबरी के ले कियो धले डै
भबिसक सब अगल लेन जागन
मनखक आदत ओकरो नागन
छोड की ककरो झूठ नागरै हम
आग बागत अगल जागरै हम ! ! !

ए बचनपर अगल मंतर ggaj_endra@videha.com पर
पठाड ।

रैछा लेकनि द्वारा सवारीय श्लोक



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

१. प्रातः काल ज्योतिषार्थ (सूर्योदयक एक घंटा पहिल) सर्वप्रथम
अपन दू हाथ देखबैक छली, आ ओ हाक रैजबैक छली ।

कवात्रे बसते लक्ष्मीः कवमया सबसती ।

कवमुले हितो ज्ञाना प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ लक्ष्मी रसते छथि, कवक मयामे सबसती, कवक
मुनमे ज्ञाना हित छथि । भोवमे ताहि द्वाले कवक दर्शन
कवबैक थीक ।

२. संध्या काल दीप जेसरौक काल-

दीपमुले हितो ज्ञाना दीपमया जनार्दनः ।

दीपात्रे शर्करः प्राकृतः संध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मुन भागमे ज्ञाना, दीपक मयाभागमे जनार्दन (रिपु) आ
दीपक अग्र भागमे शर्करा हित छथि । हे संध्याज्याति ! अहाँकेँ
नमस्कार ।

३. स्वतरोक काल-

वामं कर्णं हनुमन्तं रैषतेषां वृकोदरम् ।

शेखर यः शलेस्त्रिं दूःस्वप्नस्तु नष्टति ॥

जे सत दिन स्वतरोस पहिल वाम कर्णवन्धनी, हनुमान् गकड
आओ तीमक सवण करैत छथि, हुनकर दूःस्वप्न नष्ट भऽ जागत
छथि ।

४. नहेरौक समय-



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्वी

गर्भं च यद्गते तैर गोदारवि सवन्तति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जलेशसिन् सन्निधिं रुक ॥

हे गर्गा, यद्गता, गोदारवी, सवन्तती, नर्मदा, सिङ्गु आः
कारेवी धाव । एहि जलमे अपन सन्निधि दिश्व ।

३. उतुवै यमद्वन्द्वं हिमाद्रश्च दक्षिणम् ।

वर्यं तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सद्गदक उतुवमे आः हिमाद्रक दक्षिणमे भावत अछि आः
उतुका सन्तति भावती कहलैत छथि ।

३. अहना द्रोपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा ।

पथकं वा सार्वज्ञिकं महापातकशकम् ॥

जे सत दिन अहना, द्रोपदी, सीता, तारा आः मन्दोदरी, एहि
पाँच साध्वी-स्त्रीक सार्व कलैत छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भऽ
जागत छन्हि ।

१. अश्वेथोमा रैनिर्वासो हनुमन्ति रितीयाः ।

क्षपः पञ्चवासश्च सन्तते चिक्छीरिणः ॥

अश्वेथोमा, रैनि, वास, हनुमान्, रितीया, क्षपाचार्य आः पञ्चवास-
अ सात ठाँ चिक्छीरी कहलैत छथि ।

+ साते भरतु स्वधीता देरी शिखर रासिनी

उग्रेश तपसा नष्टा यया पञ्चपतिः पतिः ।



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक विदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

सिद्धि: साक्षात् सतामस्तु प्रसादास्तु धूर्जटे:

जानकीदेवदेवदेव यन्त्रि शेषिणः कथा ॥

६. राजा २८ जगदलन न मे राजा सवन्तरी ।

अपूर्णे पंचमे रमे र्णियाणि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूरस्थित मन्त्रिपुत्र यजुर्देव अध्याय २२, मन्त्र २२)

आ ज्ञानवन्तः प्रजापतिवन्द्यः । तितोक्तता देवताः ।

स्वाधुक्तेतिष्ठन्तः । यद्वजः स्वः ॥

आ ज्ञानं ज्ञानं ज्ञानं ज्ञानं ज्ञानं ज्ञानं ज्ञानं ज्ञानं
वाञ्छन्तः श्वेतं गव्यान्तिरात्री मन्त्रावन्तः ज्ञानं ज्ञानं
दोष्ठी श्वेतं गव्यान्तिरात्री मन्त्रावन्तः ज्ञानं ज्ञानं
वाञ्छन्तः श्वेतं गव्यान्तिरात्री मन्त्रावन्तः ज्ञानं ज्ञानं
निकांमे-निकांमे नः पञ्चमं रवन्तः ज्ञानं ज्ञानं
पञ्चमं रवन्तः ज्ञानं ज्ञानं ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मन्त्रावन्तः । श्वेतं
श्वेतं गव्यान्तिरात्री मन्त्रावन्तः ज्ञानं ज्ञानं

३ दीर्घाभिर्भर । ३ श्वेतं गव्यान्तिरात्री मन्त्रावन्तः

हे भगवान् । अग्न देवदेव श्वेतं गव्यान्तिरात्री मन्त्रावन्तः
श्वेतं गव्यान्तिरात्री मन्त्रावन्तः ज्ञानं ज्ञानं
दोष्ठी श्वेतं गव्यान्तिरात्री मन्त्रावन्तः ज्ञानं ज्ञानं
वाञ्छन्तः श्वेतं गव्यान्तिरात्री मन्त्रावन्तः ज्ञानं ज्ञानं
निकांमे-निकांमे नः पञ्चमं रवन्तः ज्ञानं ज्ञानं
पञ्चमं रवन्तः ज्ञानं ज्ञानं ॥ २२ ॥



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

तापस्य देवदेवता आ लोको देवदेवता सम्म होय । अण
देवदेवता जखन आरम्भ होय रया होय आ ओय-रुपि सरीर
परिणत होयत वर । एरु देवदेवता सत तवहे हमा सतक
कन्या होय । शत्रु रुष्टि नहि होय आ मित्र उदय
होय ॥

मन्याके कोन रतुक गडा कवरीक चाली तकव रनि एहि मने
कएन गेल अछि ।

एहिमे राचकगुणगामक आव अछि ।

अथवा-

ब्रह्म - विद्या आदि ग्राम परिपूर्ण अछि

वास्तव - देवदेवता

ब्रह्मरूपि-ब्रह्म विद्या तेजस शक्त

आ ज्ञानार्थ - उपेक्ष होय

वास्तव:- राजा

मन:- रीति सब रीति

अथवा:- रीति चलेवने निष्ठा

इतिराष्ट्र-शत्रुके तावत दय रीति

महावृक्ष-पौष्ट वन रीति रीति



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

दोस्त्री-कायना(दुव पूर्ण कवए रानी)

प्रेमरतीठांनूदराणांशुः प्रेम-लौ रा राणी रतीठांनूदरा-

पौष रवद नांशुः-आशुः-हवित

महिः-मोड १

श्वरंकिर्योरां- श्वरंकि- रवरहावके धाव कवए रानी

योरां-म्ली

जिंशु-शेवुके जीतए रना

बंवेष्टाः-बथ पव हिव

मंभेयो-उतम मभामे

हराशु-हरा जेहन

मजंमाणशु-बाजक बाजामे

रीवो-शेवुके पवाजित कवए रना

निकांमे-निकांमे-निश्चयशक्तु कार्यमे

नः-हमर मभक

पंर्जना-मेघ

रयंतु-रया होए



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११),

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

हमंरल-उत्तम हम रंन

उपस्थ-उपस्थ:

पद्य- पाक

योगेश्वर-अनन्त नन्त करैक हेतु कएन गेन योगक वक्ता

नः-हमरा सतक हेतु

कंपताम्-समर्थ होए

त्रिपिथक अग्रद- हे अँर, हमर राजामे अँर नीक धार्मिक
रिद्धा रंन, बाजन्त-रीव, तीवन्दज, दुध दए रंन गाय, दोगय रंन
जन्त, उन्तरी नारी होथि । पार्जन आरंभकता पडन पव रर्या
देथि, हम देय रंन गाढ पाक, हम सत संपत्ति
अर्जित/संवर्धित करी ।

8. M DEHA FOR NON RESIDENTS

8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1. The Comet -GAJENDRA THAKUR

translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2. The Science of Words - GAJENDRA THAKUR

translated by the author himself



विदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

8.1.3.On _t he _dice -boar d _of _t he _m il l enni um -
GAJENDRA THAKUR t r a n s l a t e d b y Jyoti Jha
chaudhar y

8.1.4.NAAGPHANS (I N ENGLI SH)- SHEFALI KA
VERMA t r a n s l a t e d b y Dr . Raji v Kumar Verma
and Dr . Jaya Verma



Maithili poem by Sh. Jagdish Prasad
Mandal t r a n s l a t e d f r o m Maithili i n t o



English by Sh. (Vinit Utpal)

M nd gem

Mbl d your mi nd's gem
l i g h t y o u r s o u l
c a t c h i n g t h e f l a m e d c a r c a s e
i d e n t i f y t h e d i v i n e l a n d .

w h e n m i n d s e e m s t o b e g e m
l i g h t s p r i n k l e o n t h e l a n d
s h o w y o u r o w n p a t h o n e s e l f



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

walk gracefully on the ground.

suffering erases slowly
obligate are singing and dance
vocalizing pray with aggrieved tone
telling their agony own.

human body is invaluable
unidentified medicine is headache
develop sense and consciousness
told you your brother own.

human is glorious organism
humanity is its stance
razing the discrimination among the men
religion their own.

Send your comments to ggajendra@videha.com

बिदेह नृत्य अंक भाषागत बचना-लेखन



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

Input : (कोशिकमे देवनागरी, मिथिलाक्षर किंवा हलन्टिक-
रोमनमे टाँग कक । Input in Devanagari ,
Mthilakshara or Phonetic-Roman.)

Output : (परिणाम देवनागरी, मिथिलाक्षर
आ हलन्टिक-रोमन/ रोमनमे । Result in
Devanagari , Mthilakshara and Phonetic -
Roman/ Roman.)

English to Maithili

Maithili to English

अंग्रेजी-मैथिली-कोष / मैथिली-अंग्रेजी-कोष एप्लिकेशन आगु
रैद १३, अगस्त स्वयंसेवक आ योगदान आ-मेन द्वारा
ggaajendra@videha.com पर पठाउ ।

बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (ऑनलाइन) पर
पहिल रैव सर्च-डिक्शनरी एम.एस. एस.क्यू.एन. सर्वर आधारित -
Based on ms-sql server Maithili-English
and English-Maithili Dictionary.

१.भावत आ हलायक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लेखन द्वारा
बैलायव मानक मेरी आ २.मैथिलीमे भाषा सम्पन्न पाठ्यक्रम



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

१. लपौव आ भावतक मैथिली भाषा-लेखनिक लोकनि द्वारा रैनाउव मानक गेदी

१.१. लपौवक मैथिली भाषा लेखनिक लोकनि द्वारा रैनाउव मानक उठाव आ लेखन गेदी

(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक धाकाले पूर्ण कपसँ सभ नः
निर्धारित)

मैथिलीमे उठाव तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षरावः पञ्चमाक्षरावस्तु ७, ए३, ए१, ए२, ए३ ए३ म
अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अक्षराव शिष्टक अक्षरमे जाहि रश्मिक
अक्षर बनेत अछि ओही रश्मिक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-
अक्षर (क रश्मिक बहरीक कावणे अक्षरमे ७ आएन अछि ।)
पञ्च (ट रश्मिक बहरीक कावणे अक्षरमे ए३ आएन अछि ।)
खण्ड (ठ रश्मिक बहरीक कावणे अक्षरमे ए१ आएन अछि ।)
सङ्घि (त रश्मिक बहरीक कावणे अक्षरमे ए२ आएन अछि ।)
खण्ड (प रश्मिक बहरीक कावणे अक्षरमे ए३ आएन अछि ।)
उपराष्ट्र रौत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक
रैनाउमे अधिकनि जगहपव अक्षरावक प्रयोग देखन जागछ ।
जेना- अक्षर, पञ्च, खण्ड, सङ्घि, खण्ड आदि । राकबादिद पञ्चित
गोरिन्द माक कहै छथि जे करञ्च, चरञ्च आ छरञ्चसँ पूर्ण
अक्षराव लिखन जाए तथा तरञ्च आ परञ्चसँ पूर्ण पञ्चमाक्षर
लिखन जाए । जेना- अक्षर, टञ्च, अञ्च, अक्षर तथा कञ्च ।
झुदा हिन्दीक निकट बहल आधुनिक लेखक एहि रौतकेँ नहि
मालैत छथि । ओ लोकनि अक्षर आ कञ्चक जगहपव सेहो अत
आ कञ्च लिखैत देखन जागत छथि ।
नरीन पछति किछु सुविधाजनक अरथ छैक । किछक तँ एहिमे
समय आ स्थानक रैत होगत छैक । झुदा कतोक रैव
हस्तलेखन वा झुदापमे अक्षरावक छोट सभ रिन्द स्पष्ट नहि
भेनासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि ।



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

अनुस्नावक प्रयोगमे उँटाकाँ-दोषक सम्भारणा मेहो ततरै देखन
जागत अछि । एतदर्थ कसँ न२ क२ परस्पर धरि पञ्चमाङ्कक
प्रयोग कवरै उँटित अछि । यमँ न२ क२ उँ धरि अङ्कक
सम्भ अङ्कक प्रयोग कवरैमे कतहु कोलो रिराद नहि देखन
जागत ।

२. ठ अ/ ठ : ठक उँटाकाँ “व” ह’जकाँ होगत अछि । अतः
जत२ “व” ह’क उँटाकाँ हो ओत२ मात्र ठ लिखन जाय । आन
ठाम खाली ठ लिखन जेअरौक चाली । जेना-
ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेउँआ, ठञ्ज, ठेवी, ठाकनि, ठाँ
आदि ।
ठ = गढाँग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रूँठरौ, माँठ, गाठ, बीठ, चाँठ,
मीठ, पीठ आदि ।
उँपर्युक्त शब्द, सबकेँ देखनामँ ज’ स्पष्ट होगत अछि जे
साधारणतया शब्दक श्रुतिमे ठ आ मध्य तथा अन्तमे ठ अरौत
अछि । एह नियम उँ आ उँक सम्बन्ध मेहो लागू होगत
अछि ।

३. र अ/ रँ : मैथिलीमे “र”क उँटाकाँ रँ कएन जागत अछि,
झुदा ओकवा रँ कएमे नहि लिखन जेअरौक चाली । जेना-
उँटाकाँ : रँजनाथ, रँज्या, रँर, देरँता, रँझु, रँशि, रँदना
आदि । एहि सबक स्थानपर एमहि: रँजनाथ, रँज्या, रँर, देरँता,
रँझु, रँशि, रँदना लिखरौक चाली । सामान्यतया र उँटाकाँक जेन
ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४. य अ/ ज : कतहु-कतहु “य”क उँटाकाँ “ज”जकाँ करैत
देखन जागत अछि, झुदा ओकवा ज नहि लिखरौक चाली ।
उँटाकाँमे यज, जदि, जझुना, जुग, जारँत, जोगी, जदु, जम
आदि कहन जेअरौना शब्द, सबकेँ एमहि: यज, यदि, यझुना, यग,
यारत, योगी, यदु, यम लिखरौक चाली ।



३.१ अ य : मैथिलीक रत्नमे ए अ य दू निखन जागत
अछि ।

प्राचीन रत्न- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नवीन रत्न- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

साधारणतया शिष्टक श्रममे ए मात्र अछैत अछि । जेना एहि, एना,
एकव, एहण आदि । एहि शिष्ट, सबक स्थापन रहि, यना, यकव,
यहण आदिक प्रयोग नहि कबराक छल । यद्यपि मैथिलीभाषी
थाक सहित किछु जातिमे शिष्टक आवस्थामे “ए”कै य कहि
उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए अ “य”क प्रयोगक सम्दर्भमे प्राचीन पञ्चतक श्रमक कब
उपग्रह मानि एहि पञ्चतकमे ओकर प्रयोग कएन गेल अछि ।

किएक तँ दूक लेखनमे कोना सहजता आ दुकलताक रीत नहि
अछि । अ मैथिलीक सरसावक उच्चारण-मैथिली यक अपेक्षा एम्
रैसी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएँ आदि कतिपय शिष्टकै
कैन, हँ आदि कएमे कतह-कतह निखन जाएँ सेहो “ए”क
प्रयोगकै रैसी समीप प्रमाणित करैत अछि ।

३.२ हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पञ्चतकमे
कोना रीतपर रैन दैत कान शिष्टक पाछाँ हि, हू नगाउन
जागत छैक । जेना- हुनकहि, अगनहू, ओकवहू, तकोनहि,
छेष्टहि, आनहू आदि । हूदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थापन
एकाव एँ हूक स्थापन ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत
अछि । जेना- हुनके, अगला, तकोले, छेष्ट, आला आदि ।

१.२ य तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकशितः यक उच्चारण थ
नोगत अछि । जेना- यडन (थडन), योडनी (थोडनी),
यहकोण (थहकोण), वृषे (वृथे), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

+ ध्वनि-लोग : निम्नलिखित अवस्थामें शब्दों ध्वनि-लोग भन्ने जागत
अब्धि:

(क) क्रियापदों प्रत्यय अयमे य रा ए वृत्त भन्ने जागत अब्धि ।
उहिमे मँ पहिले एक उच्चारण दीर्घ भन्ने जागत अब्धि । ओक
आगाँ लोग-मुटक छिन् रा बिकारी (/ २) नगाउन जागछ ।

जेना-

पूर्ण कष : गठए (गठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उठए (उठय)
पडतोक ।

अपूर्ण कष : गठ गेनाह, क जेन, उठ पडतोक ।

गठय गेनाह, कय जेन, उठय पडतोक ।

(ख) पुरिकानिक प्रत्यय आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) वृत्त भन्ने
जागछ, रूदा लोग-मुटक बिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कष : थाए (य) जेन, पठाए (ए) देरै, नहाए (य)

अएनाह ।

अपूर्ण कष : था जेन, पठा देरै, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्यय ओक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीन्हुमे
वृत्त भन्ने जागत अब्धि । जेना-

पूर्ण कष : दोसरि मारिनि छि जेनि ।

अपूर्ण कष : दोसब मारिनि छि जेन ।

(घ) वर्तमान प्रत्यय अन्तिम त वृत्त भन्ने जागत अब्धि । जेना-

पूर्ण कष : गठैत अब्धि, रजैत अब्धि, गलैत अब्धि ।

अपूर्ण कष : गठै अब्धि, रजै अब्धि, गलै अब्धि ।

(ङ) क्रियापदक अवसान ओक, उँक, एँक तथा लीकमे वृत्त भन्ने
जागत अब्धि । जेना-

पूर्ण कष : छियोक, छियेक, छलीक, छोक, छैक, अरितेक,
होएक ।

अपूर्ण कष : छियौ, छिये, छली, छौ, छै, अरितै, होए ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय ह, हू तथा हकावक लोग भन्ने जागछ ।

जेना-

पूर्ण कष : छहि, कहनहि, कहनहूँ, जेनह, नहि ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अपूर्ण कप : छवि, कहनवि, कहनौ, गोन, नग, नमि, ले ।

६. ध्वनि स्थापना : कोला-कोला स्वर-ध्वनि अगना जगहसँ छटि क२ दोमव ठाम छनि जागत अछि । खस क२ ज्ञान ग आँ उँक सञ्चयमे अ रौत नागु होगत अछि । मैथिलीकवण भ२ गोन शिष्टक मया रा अन्तमे जै ज्ञान ग रा उँ आरै तँ ओकव ध्वनि स्थापनित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- नेनि (नेगन), पानि (पागन), दानि (दागन), माष्टि (मागष्टि), काड (काडुड), मास (माडुस) आदि । ऊदा तसेम शिष्ट, सभमे अ निश्चय नागु नहि होगत अछि । जेना- बगिचै बगम आ स्वधर्मि स्वधर्म नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हनसु ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनसु ()क अवरुधकता नहि होगत अछि । कावण जे शिष्टक अन्तमे अ उँटावण नहि होगत अछि । ऊदा संस्कृत भाषासँ जहनाक तहिना मैथिलीमे आधेन (तसेम) शिष्ट, सभमे हनसु प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिष्टकै मैथिली भाषा सञ्चयनि निश्चय अन्वसार हनसुरितीन राखन गोन अछि । ऊदा र्याकवण सञ्चयनि प्रयोजनक जेन अवरुधक स्थापन कतहु-कतहु हनसु देन गोन अछि । प्रसूत पौथीमे मैथिली लेखक प्राप्तिन आ नरीन दुनु शैलीक सवन आ समीपन पक्ष सभकै समेष्टि क२ रर्ष-रिगाम कएन गोन अछि । स्थाप आ समयमे रँचतक सञ्चयि हनु-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सवन होरँरना हिसारँ रर्ष-रिगाम गिनाउन गोन अछि । रतिमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यस्तकै आन भाषाक मध्यमसँ मैथिलीक उन्नत जेरँ पडि बहन परिश्रेष्ठमे लेखनमे सहजता तथा एककगतताव धान देन गोन अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन विशेषता सभ कृति नहि होगक, ताद्व दिस लेखक-मंडन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बागवतार यादवक कहँ छनि जे



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

माधुमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सबनतक अस्मकालमे एहन अरुआ किम्वत् ल औरै देवौक छली
जे भायाक विशेषता छहमे पडि जाए।

-(भायामास्त्री डा. बागारताब यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सज्ज
नइ निर्धारित)

१.२ मैथिली अकादमी, गैरा द्वाव निर्धारित मैथिली लेखन-मेव

१. जे मोह, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि
रुतनीमे प्राचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रुतनीमे लिखल
जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

एथल
ठाम
जकब, तकब
तनिकब
अडि

अग्राह

अथल, अथनि, एथल, अथनी
ठिमा, ठिना, ठमा
जेकब, तेकब
तिनकब। (रैकपिक कएँ ग्राह)
अडि, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कग रैकपिकतया अगनाउल जायः
भ२ गेल, भय गेल रा भए गेल। जा बहन अडि, जाय बहन
अडि, जाए बहन अडि। कब गेलाह, रा कबय गेलाह रा कबए
गेलाह।



३. प्राचीन मैथिलीक 'रु' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत
अछि यथा कहनहि रा कहनहि ।

४. 'ए' तथा 'उ' ततय लिखल जाय जत स्पष्टतः 'अ' तथा
'अँ' सदृश उच्चारण भेल हो । यथा- देखेत, डल्लेक, रौआ,
लौक गलादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द, एहि कए प्रयुक्त होयतः जेह,
मैह, गैह, उँह, लौह तथा दैह ।

६. ह्रस्व अकारांत शब्दमे 'अ' के वृद्ध कवरि सामान्यतः अग्रार्थ
थिक । यथा- ग्राह देखि आरह, मानिनि गेलि (मन्त्रया मात्रमे) ।

७. स्वतंत्र रूप 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे त
संभारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक कएँ
'ए' रा 'य' लिखल जाय । यथा:- कयन रा कयन, अयनाह रा
अयनाह, जाय रा जाय गलादि ।

८. उच्चारणमे दु स्ववक रीट जे 'य' ध्वनि स्वतः आरि जागत
अछि तकरा लेखमे स्थान रैकल्पिक कएँ देल जाय । यथा-
धीआ, अठेआ, रिआह, रा धीआ, अठेआ, रियाह ।

९. सामान्यतः स्वतंत्र स्ववक स्थान यथार्थमे 'ए' लिखल जाय रा
सामान्यतः स्वव । यथा:- मैएग, कनिएग, किवतनिएग रा मैआँ,
कनिआँ, किवतनिआँ ।

१०. कावकक रिक्तस्थान निम्नलिखित रूप ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ,
हाथेँ, हाथक, हाथमे । 'मे' मे अव्ययव सरिआ लज्जा थिक ।
'क' क रैकल्पिक रूप 'केव' बाखन जा सकैत अछि ।



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

११. पुरिकानिक प्रियागदक रौद 'कय' रा 'कए' अराय रिकपिक
कर्णै नगाउन जा सकैत अछि । यथा:- देखि कय रा देखि
कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक अनाये माँ, भाँ गरादि निखन जाय ।

१३. अई 'न' ओ अई 'म' क रँदना अगुसाव नहि निखन जाय,
किंतु भागाक अरिथार्थ अई 'उ' , 'ए', तथा 'ण' क रँदना
अगुसावो निखन जा सकैत अछि । यथा:- अई, रा अँक, अऊन
रा अँन, कँठ रा कँठ ।

१४. ठनैत छि निअगतः नगाउन जाय, किंतु रिभञ्जिक संग
अकावात प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सब एकन कावक छि मोहमे सँठा क निखन जाय, लँठा
क नहि, सँगाउ रिभञ्जिक हेतु हवाक निखन जाय, यथा घब
पवक ।

१६. अगुनामिकलै छन्दरिन्दु द्वारा राउ कयन जाय । परंतु
अदनाक अरिथार्थ हि सगाव जँठन मात्रापर अगुसावक प्रयोग
छन्दरिन्दुक रँदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हि केव
रँदना हि ।

१७. पूर्ण रिवाय गाम्भीर्य (।) मुटित कयन जाय ।

१८. समस्त पद सँठा क निखन जाय, रा हागहणसँ जोडि क
, लँठा क नहि ।

१९. निख तथा दिख मोहमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय ।



२०. अरु देवनागरी कएमे बाखन जाय ।

२१. किछ धूमिक जेन नरीन छि रैषराओन जाय । जा अ नहि
रैषन अछि तारैत एहि दुनु धूमिक रैदना पुरैरत् अय/ आय/ अय/
आय/ आओ/ अओ लिखन जाय । अकि ते रा ओ मँ राउ कएन
जाय ।

ह.।- लोरिन्द ना ११/+/१७ श्रीकाष्ठ ठाकुर ११/+/१७ अलेन्द ना
"अमल" ११/०+/१७

२. मैथिलीमे भाषा संपादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देशः (बोल्ड कएन कए जाय):-

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सँठत- जेना राजू नाग ,
झुदा न क उच्चारणमे जीह मुँसमे सँठत (ले सँठैत तँ उच्चारण
दोय अछि)- जेना राजू गणेश । तानरा मेमे जीह तारुसँ ,
समे मुँससँ आ दन्त समे दाँतसँ सँठत । निगो, सत आ मोयष
राजि क२ देखु । मैथिलीमे स केँ ऐदिक संस्कृत जकाँ अ
सैहो उच्चारित कएन जागत अछि, जेना रया, दोय । य
अलको अलनव ज जकाँ उच्चारित होगत अछि आ न ड जकाँ
(यथा संयोग आ गणेश संज्ञा) आ

गडमे उच्चारित होगत अछि । मैथिलीमे र क उच्चारण रँ, मे
क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सैहो होगत अछि ।

ओहना द्रव्य ग रैशीकान मैथिलीमे पहिल राजन जागत अछि
काका देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे द्रव्य ग अक्षरक पहिल
लिखल जागत आ राजल जेराँक चाली । काका जे हिन्दीमे
एकर दोयपूर्ण उच्चारण होगत अछि (लिखन तँ पहिल जागत
अछि झुदा राजन रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पछतिक



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X VIDEHA

दोषक काका हय मउ ओकव उँटावण दोषपूर्ण ठगमँ कर बहल छी ।

अछि- अ ग ड अँड (उँटावण)

छथि- छ ग थ - छैथ (उँटावण)

गहूँटि- ग हूँ ग ट (उँटावण)

आरौ अ आ ग जा ए अँ ओ उँ अ अः म अँ मउ लेल गाला
मेलौ अछि, दूदा अँमे जा अँ ओ उँ अ अः म कै मँशुअकव
कगमे गमत कगमे अँशुअ आ उँटावित कएल जागत अछि ।
जेना म कै बी कगमे उँटावित कवरौ । आ देखियो- अँ लेल
देखिओ क अँयोग अँशुअ । दूदा देखिअँ लेल देखियो
अँशुअ । कू मँ ह धवि अँ समितित लेलमँ कू मँ ह रँलेत
अछि, दूदा उँटावण काल हलउ शउ मँदक अँशुअ उँटावक
अँशुअ रँलेत अछि, दूदा हय जखन मलाजमे जू अँशुअ रँलेत
छी, तखना गवणका लोककै रँलेत गवणरँहि- मलाज, राउरमे
ओ अँ शउ जू = जू रँलेत छथि ।

हयव उँ अछि जू आँ ए क मँशुअ दूदा गमत उँटावण लेगत
अछि- गा । ओहिना छ अछि कू आँ य क मँशुअ दूदा उँटावण
लेगत अछि छ । हयव मेँ आँ व क मँशुअ अछि ऐ (जेना
ऐहिक) आँ म् आँ व क मँशुअ अछि त्स (जेना मिस) । ए लेल
त+व ।

उँटावक आँडियो हागत विदेह आँकगल

<http://www.videha.co.in/> गव उँगल अछि । हयव कै
/ मँ / गव गुरि अँकवमँ मँठी कर लिख दूदा उँ / कर ली
कर । अँमे मँमे गहिन मँठी कर लिख आँ राँदरेना ली कर ।
अँकक राँद ऐ लिख मँठी कर दूदा अँशु अँग ऐ लिख ली कर
जेना

उँली दूदा मउ ऐ । हयव उँअ म सातम लिख- उँठम सातम
ले । गवरँनामे रँव दूदा गवरँनीमे राँव अँशुअ कक ।

बहए-

बह दूदा मँके (उँटावण मँके-ए) ।

मानुषीमिह



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

ॐ क रँदनामे हू जेना मरुगुर्ण (मरुगुर्ण ले) जअ अर्थ
रँदना जअ ओतहि मात्र तीन अक्षरक संज्ञाक्षरक प्रयोग
उँटित । सञ्जति- उँटावण स स ग त (सञ्जति ले- काका मली
उँटाका आमागीसँ मञ्जुर ले) । ऋदा मरौतम (मरौतम ले) ।

बाह्यैय (बाह्यैय ले)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पौडिआ/ पौडि जल/ पौडि जल

पौडिआ/ पौडि (अर्थ परिवर्तन) पौडिआ/ पौडि

ओ लोकनि (हठी कर, ओ ये रिकारी ले)

ओ/ ओहि

ओहिर/

ओहि जल/ ओहि वर

जगलौ बैसलौ

पँचजगलौ

देखियोक/ (देखियोक ले- तहिना अ ये जगल आ दीर्घक मात्राक
प्रयोग अगुटित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तँ

तेहँत / तेहँत

नहि/ नहि/ नँग/ नगँ ले

सौँसे/ सौँसे

रँच /

रँच (सोवाओल)

गाए (गाँग नहि), ऋदा गाँगक दूध (गाँगक दूध ले ।)

बलौँ पहिबौँ

हमलौ/ अलौ

सरँ - सत

सरँक - सतक

धवि - तक

गग- राँत



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

ब्रह्म - सगुण

ब्रह्मणो सगुणो ब्रह्मण - सगुण

हयव आ - हय सत

आदि- आ कि

सकल/ कल (गद्यमे प्रयोगक आरुचकता ले)

लोक/ लोक

जाति (जाति ले, जेना देव जाति) कदा जाति-ब्रह्म (अर्थ
परिवर्तन)

गर्भ/ जाति

आदि/ जाति/ आदि/ जाति

मे, के, मैं, गव (मिह्रम स्या क२) त क२ व२ द२ (मिह्रम स्या
क२) कदा दृष्टी रा रौं रितुं मंग वलगाव परिव रितुं
ठाके स्या। जेना एमे मैं ।

एकरी, दृष्टी (कदा क ए ठी)

विकाविक प्रयोग मिह्रम अत्रमे, रीचमे अत्रारुचक कर्णे ले।
आकाविक आ अत्रमे अ क रौं रितुं विकाविक प्रयोग ले जेना
दिश

, आ/ दिय, आ, आ ले)

अपौरुषेय प्रयोग विकाविक रौं रितुं कवरे अत्रुचित आ मात्र
ह्रांष्टक तकनीकी युक्तताक परिचायक)- उना विकाविक संयुक्त
कप २ अत्रुचक कहन जागत अदि आ रौं रितुं आ उंचावण दृष्ट
राम एकव जाग वहेत अदि/ वरि सकेत अदि (उंचावण जाग
वरिते अदि) । कदा अपौरुषेय मेहो अत्रुचकमे गमेमि
कमेमे जागत अदि आ रौं रितुं मेहमे जतए एकव प्रयोग
जागत अदि जेना *raison d'être* एतए मेहो एकव उंचावण
लेजोष डेरव जागत अदि, माल अपौरुषेय अत्रुचक ले दैत
अदि रका जौं रितुं अदि, से एकव प्रयोग विकाविक रौं रितुं
देगाग तकनीकी कर्णे मेहो अत्रुचित) ।

अत्रुचक, एहमे/ एमे



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अथमे, जालिमे

एथन/ अथन/ अगथन

कै (कै नहि) मे (अवस्यार वलित)

भर

मे

दर

तै (तै, त लै)

सै (सर स लै)

गाढ तव

गाढ वग

साँस खन

जो (जो go, कले जो do)

तै/तव जेना- तै दुखाले/ तगमे/ तगले

जै/अव जेना- जै कावण/ जगमै/ जगले

अ/अव जेना- अ कावण/ अमै/ अवले/ दूदा एकव एकटा थाम

आयोग- नावति कतेक दिसमै कहैत बहैत अग

लै/वव जेना लैमै/ वगले/ लै दुखाले

नहै/ लौ

लालो/ ललो/ ललै/ ललहू/ ललहू/ लल

अव/ जालि/ जै

जालिग/ जालिग/ अवग/ जेग

एहि/ अहि

अग (वाक्यक अथमे ब्राह्म) / अ

अगड/ अडि/ अड

तव/ तलि/ तै/ तालि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीर



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

भलेही/ भवहि

ते/ तै/ तै

जायै/ जायै

नग/ नै

डग/ डै

नहि/ नै/ नग

गग/ गै

डहि/ डहि ...

समय मेरुदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठै छै तखन समय
जना समयेव गत्यादि । असमयमे छन्द आ रिभक्ति जूठल
छन्दे जना छन्देसँ छन्देमे गत्यादि ।

अथ/ जाहि/

जे

जहिग/ जाहिग/ जगग/ जैग

एहि/ अहि/ अग/ अ

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ तै/ तहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीरै

भले/ भलेही/

भवहि

ते/ तै/ तै

जायै/ जायै

नग/ नै

डग/ डै

नहि/ नै/ नग

गग/

गै



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुसिंह सन्तुलन ISSN 2229-547X VIDEHA

डभि/डभरि

डुकन अडि/डोव गडि

२.२. मेथिलीमे भाषा सम्पादन गार्हक्य

गीटाँक सुटीमे देन विकल्पमेसँ लेखक एडिटर द्वारा कोन कथ

डुकन जेरौक चाली:

रौण्ड कथ कथ ग्राह:

१. होयरौना/ होरौयरौना/ होमयरौना/ लेरौ रौना, लेम रौना/

होयरौक/लेरौयरौना/लेयरौक

२. ओ/ओर

ओ

३. क लेल/कर लेल/कय लेल/कय लेल/न/व२/नय/वय

४. ड ओन/डर ओन/डय ओन/डय

ओव

५. कव ओनाह/कवर

ओवह/कव ओवह/कव ओनाह

६.

विथ/दिथ लिय, दिय, लिथ, दिय /

१. कव रौना/कवर रौना/ कव रौना कलेरौना/कव रौना /

कलेरौना

४. रौना रौना (थकय), रौनी (सूनी) ९

ओइव ओइ

१०. ओयः ओयह

११. दुःथ दुथ १

२. टलि ओन टव ओव/टोन ओन

१३. देवथिह देवकिह, देवथि

१४.

देवथिह देवथि/ देवथिह

१५. डथिह/ डनहि डथि/ डलेन/ डवनि

१६. चलेत/देत चवति/देति



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

१. एथला

अथला

१४.

बैठनि बैठगल बैठहि

१५. ३/३२(सरलागा) ३

२०

२. ३ (संयोजक) ३/३२

२१. हागि/हागि हागि/हागि

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. कवलि/कवलि/कवलि

२५. तथल/ तथल

२६. छा

बल/बल बल/बल बल

२७. निकल/निकल

वाग/वाग बैल/वाग बैल/वाग बैल निकल/बैल वाग

२८. ३/३२ जत/ ३/३२ जत/ ३/३२ जत/ ३/३२

२९.

की बुब जे कि बुब जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यदि(योग पावरी) कुदि/यादि/कुदि/यादि

यदि (योग)

३२. ओल/ ओल

३३.

हंस/ हंस हंस

३४. लो आकि दम/लो किरी दम/ लो रा दम

३५. सप्त-सप्त सप्त-सप्त

३६. छल/ सात छल/सात

३७.



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

की की/ की२ (दीर्घाकाव्यस्य २ रजित)

३५. **झरौं झरौं**

३६. **कवयताह/ कवयताह** कवयताह

४०. **दनाष दिशि दनाष दिशे/दनाष दिश**

४९

. **लावाह/गयवाह**

४२. **किछु आव/ किछु उवा/ किछु आव**

४३. **जाव डव/ जावत डव जाति डव/जेत डव**

४४. **गहुँटा/ जेठ जावत डव/ जेठ जाव डव गहुँटा/ जेठ**
जावत डव

४५.

झरौं (शरा)/ झरौं (होली)

४६. **वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२**

४७. **व/व२ क२/**

क२

४८. **एथव/ एथव / एथव / एथव**

४९.

अलीकै/ अलीकै

५०. **गलीव गलीव**

५१.

धाव गाव केनाथ/ धाव गाव केनाथ/केनाथ

५२. **जेकाँ जेकाँ**

झकाँ

५३. **तहिना तहिना**

५४. **अकव अकव**

५५. **रैहिन रैहिन**

५६. **रैहिन रैहिन**

५७. **रैहिन-रैहिन**

रैहिन-रैहिन

५८. **नहि/ ले**



मानसिंह

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३९. कवरौ / कवरौया/ कवरौय

३०. ठँ/ त २ तय/तय

३१. तैयावी ये छेठ-ताय/ते, छेठ-ताय/ताय

३२. गितीये दु भाग/भाय/भाय

३३. अ पौथी दु भाय/भाय/ भाय/ लेन। यारत छारत

३४. गाय ये / गाय दूदा गायक गायन

३५. देहि/ दण दणि/ दणहि/ दणहि दहि/ देहि

३६. द/ द/ द

३७. उ (संयोजक) उ२ (संयोजक)

३८. तका कय तकाय तका

३९. गेले (on foot) गेले कयक/ केक

१०.

तहुमे/ तहुमे

११.

गवरी

१२.

रैजा कय/ कय / क२

१३. रैजाय/रैजाय

१४. लोवा

१५.

दिया दिका

१६.

ततहि

१७. गवरौगहि/ गवरौगहि/

गवरौगहि/ गवरौगहि

१८. रौव रौव

१९.

छेह छिह(अच्छ)

२०. छे छे

२१.



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुसिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

. से/ के से/के

+२. एवका अथका

+३. उगिलाव डुमिलाव

+४. सुयव

/ सुयवका सुयव

+३. सयवक सयवक +३.

डुमि

+१. कवगयो/उ कवयो ल देवक /कवयो-कवगयो

+१. सुयवि

सुयव

+६. सगड १-सगडी

सगड १-सगडी

६०. गय-गय गेले-गेले

६१. खयययक

६२. खयययक

६३. यग

६४. लय- लो - लय

६५. सुयव सुयव

६६.

सुयव (सुयव अथय)

६१. योह ययह / ययह/ योह/ ययह

६१. ययि

६६. अयय- अयय/ अयय/ अयय

६००. यय- यय

६०१.

ययि

६०२. यय यय

६०३.



मानवीय

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जाँघ (in different sense)-last word of
sentence

१०४. छत गब आँघि जाँघ

१०५.

ल

१०६. रेखाय (pl ay) -रेखाय

१०७. शिखायत- शिखायत

१०८.

छत- छत

१०९.

. गत- गत

११०. कनिय/ कनिये कनिये

१११. वाक्य- वाक्य

११२. लोय/ लोय लोय

११३. अँवदा-

उकदा

११४. बुँसयवहि (different meaning- got
understand)

११५. बुँसयवहि/बुँसयवहि/ बुँसयवहि (understand
himself)

११६. छवि- छवि/ छवि लोय

११७. खयाय- खयाय

११८.

योष गौडवहि/ योष गौडवहि/ योष गौडवहि

११९. कैक- कैक- कैक

१२०.

वग नग

१२१. जल्लोय

१२२. जल्लोय जल्लोय- जल्लोय/



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

खलनाथ

१२३. लोअत

१२४.

गवरोवहि/ गवरोवनि गवरोवहि/ गवरोवनि

१२५.

टिखेत- (to test) टिखेत

१२६. कवओयो (willing to do) कवओयो

१२७. जेकवा- जकवा

१२८. तकवा- तेकवा

१२९.

बिदेसब आलमे/ बिदेसबे आलमे

१३०. कवरौयनहुँ/ कवरौएनहुँ/ कवरौनहुँ कवरौनो

१३१.

हाविक (उटावण हाविक)

१३२. ओऊन रऊन ओऊमोआ/ ओऊमोस कागत/ कागट/ कागज

१३३. ओषे भाग/ ओष-भागे

१३४. निछ / निछाय/ निछा

१३५. नए३/ ल

१३६. रैछ नए३

(ले) निछ जाय

१३७. तखन ल (नए३) कहेत अछि। कहे/ सुले/ देखे तब नद

कहेत-कहेत/ सुलेत-सुलेत/ देखेत-देखेत

१३८.

कतेक लोठै/ कताक लोठै

१३९. कमाअ-धमाअ/ कमाअ- धमाअ

१४०

- वग न ग

१४१. खेवाअ (for playing)

१४२.

डविह डविन



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

१४३.

लौकिक लौक

१४४. का कियो / कउ

१४५.

कगे (hair)

१४६.

कस (court-case)

१४७

- रौनगा/ रौनगा/ रौनगा

१४८. खलगा

१४९. कमी कमी

१५०. चवटा चटा

१५१. कर्म कर्म

१५२. डूराँ/ डूराँ/ डूराँ/ डूराँ/ डूराँ

१५३. एथनका/

अथनका

१५४. कथ/ विथ (राकक अतिम गेह)- वर

१५५. कथनक/

कथनक

१५६. गवरी गर्ग

१५७

- रवदी रदी

१५८. सुना लोवाह सुना/सुना

१५९. एनाथ-लोनाथ

१६०.

लोना ल येववलि लोना ल येववलि

१६१. नदी / ले

१६२.

लोना ड'लो

१६३. कतहु/ कतो कली



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मान्यविह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

१३४. उगविगव-उगवगव उगवगव

१३५. उगविगव

१३६. उगविगव/उगविगव उगविगव

१३७. गग/गग

१३८.

क क

१३९. दवववव/ दवववव

१४०. गग

१४१.

धवि त क

१४२.

धुवि लोष्ट

१४३. ववववव

१४४. वव

१४५. वव/ व

१४६. वव(गगमे गग)

१४७. वव / वव

१४८.

कवववव कवववव

१४९. ववव

१५०. कववव / कववव

१५१.

गग/ गग

१५२. गगवव वववव/ वववव

१५३.

वववव वववव गगवव

१५४.

वव (उगवव गग)

१५५. वव (उगवव गग)

१५६. वव लवव



मानवीमिह

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१+१. रिउतल/ रिउेल/

रिउेल

१++ कवरौउवलि/ कवरौवलि

कवेवविह/ कवेववि

१+६. कवएवलि/ कवेववि

१६०.

आलि/ रि

१६१. पड़ि/

पड़ि

१६२. रैउी जवाय/ जवाय जवा (आणि नगा)

१६३.

मे मे

१६४.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिउक्तिमे लछा कए)

१६५. खेव खेव

१६६. खणव(spacious) खेव

१६७. होयतलि/ होयतलि/ होयतलि/होयतलि/ होयतलि

१६८. हाथ मटियाँ/ हाथ मटियाँ/हाथ मटियाँ

१६९. खेका खेका

२००. देखाँ देखा

२०१. देखाँ

२०२. सउवि सउव

२०३.

साहेरँ साहेरँ

२०४. होयलि/ होयलि/ होयलि

२०५. होयलि/ होयलि

२०६. होयलि/ होयलि/ होयलि

२०७. किड न किड

किड ल किड

२०८. घुमेनहँ/ घुमेनहँ/ घुमेनहँ



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२०६. एवाक/ अणनाक

२१०. अः/ अह

२११. वय/

वय (अर्थ-अविरुद्ध) २१२ कनीक/ कलक

२१३. मरुलक/ मलक

२१४. गिला२/ गिला

२१५. क२/ क

२१६. छा२/

छा

२१७. आ२/ आ

२१८. भ२ / भ (१ शॉर्टक कगीक आतक)

२१९. निषय/ निषय

२२०

.लेखक/ लेखक

२२१. गहिव अकव अ रीदक/ रीदक अ

२२२. तहि/तहि/ तहि/ तै

२२३. कहि/ कलि

२२४. तै/

तै / तग

२२५. नग/ नग/ नग/ नलि/ले

२२६. हे/ रु/ एवोहै/

२२७. डहि/ डै/ डैक/ डग

२२८. दृष्टि/ दृष्टि

२२९. आ (come)/ आ२ (conjunction)

२३०.

आ (conjunction)/ आ२ (come)

२३१. कला/ कला/ कला/ कला

२३२. गेलोह-गेलोह-गेलोह

२३३. लेखक- लेखक



मानसिंह

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२३४.कलौ- कएलौ-कएनहूँ/कलौ

२३५.किड न किड- किड ल किड

२३६.कहल- कहल

२३७.और (come)-औ (conjunct ion-and)/औ । और-
और /और-और

२३८.हउत-हेत

२३९.घुमनहूँ-घुमनहूँ- घुमनहूँ

२४०.एक- एक

२४१.होति- होति/ होति

२४२.उ-बाग उ योगक रीट(conjunct ion), उ कहक (he
said)/उ

२४३.की ह/ कही अही ह/ की हे । की ह

२४४.दृष्टि/ दृष्टि

२४५.

.मोहि/ मोहि

२४६.तौ / तौ/ तौ/ तौ

२४७.जौ

/ जौ जौ

२४८.मउ/ मउ

२४९.मउक/ मउक

२५०.कहि/ कहि

२५१.कल/ कल/ कल

२५२.सबकउ भउ लउ/ भउ लउ/ भउ लउ

२५३.कल/ कल/ कल/कल

२५४.अः/ अः

२५५.जल/ जल

२५६.लवति/

लवति (अर्थ परिवर्तन)

२५७.कलहि/ कलहि/ कलहि

२५८.कल/ कल/ कल (अर्थ परिवर्तन)



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुसिंह सक्सेना ISSN 2229-547X VIDEHA

२३६. कर्षक/ कलक/ कर्ष-मर्ष

२३७. गठवहि गठवनि/ गठनगल/ गणठउवहि/ गठवोवनि/

२३८. निशय/ निशय

२३९. लेखक/ लेखक

२४०. गह्वि अक्षर कहल ठा/ रीछमे कहल ठा

२४१. श्रीकावास्तुमे रिकारीक प्रयोग उटित ले/ अप्पान्द्रीशरीक
प्रयोग फार्मलक तकनीकी गुणताक परिचयक उकव रैदना अरुग्रह
(रिकारी) क प्रयोग उटित

२४२. लेख (गह्वे खोह) / -क/ क२/ ले

२४३. डेलि- डेलि

२४४. वल्ले/ वल्ले

२४५. लोएत/ लोएत

२४६. जलत/ जलत

२४७. खलत/ खलत/ खलत

२४८.

खलत/ खलत/ खलत

२४९. निशयरीक/ निशयरीक/ निशयरीक

२५०. गुरु/ गुरु

२५१. गुरु/ गुरु

२५२. खलत/ खलत/ एतल/ एतल

२५३. जल/ जल/ जल/ जल

२५४. जलत/ जलत/ जलत

२५५. खलत/ खलत

२५६. कैक/ कैक

२५७. खलत/ खलत/ खलत

२५८. जल/ जल/ जल (नानति जल नगनीह ।)

२५९. गुरु/ गुरु

२६०. कर्ष/ कर्ष

२६१. तल/ तल/ तल

२६२. गायरी/ गायरी/ गायरी



मानवीय

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२+७. सके/ सक/ सकय

२+१. सेवा/सवा/ सवा (भात सवा गेल)

२+१. कहेत बली/देथेत बली/ कहेत छयो/ कहे छयो- अहिना
छवेत/ गढेत

(गढे-गढेत अर्थ कथला काय परिवर्तित) - आव बूसे/ बूसेत
(बूसे/ बूसे छी दूदा बूसेत-बूसेत)/ सकेत/ सके । कवेत/
कवे । दे दैत । छेका छे । रैछे/ रैछेक । बथर/
बथरक । बिन/ बिन । बतिका बाहुक बूसे आ बूसेत केव
अगन-अगन छगनव शयण समीप अछि । बूसेत-बूसेत
आब बूमछि । लमछ बूसे छी ।

२+६. दुखी/ द्रुख

२६०. तेछ/ तेछ/ तेछ

२६१.

खन/ खन/ खना (भाव खन/ भाव खन)

२६२. तक/ धवि

२६३. ग२/ लो (meaning different - जगल ग२)

२६४. म२/ स (दूदा द२, न२)

२६५. उ२ (तीन अक्षरक मेल रैदना प्रकृष्टिक एक आ एकटा
दोसबक उ२योग) आदिक रैदना ह आदि । मह३/ मह३/
कर्ता/ कर्ता आदिमे त मशक कोला आरथकता मैथिलीमे ले
अछि । रउर

२६६. रैमी/ रैमी

२६७. रौना/ रौना रौना/ रौना (वहेरौना)

२६८

. रावी/ (रैदनेरानी)

२६९. राता/ राता

३००. अतुर्विष्टीय/ अतुर्विष्टीय

३०१. लम/ लम

३०२. वम/ वम

३०३. वलो/ वलो (



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जेठेठे/ जेठे

३०३. वागव/ वगव

३०४. हरौ/ हरौ

३०५. वाथवक/ वथवक

३०६. थी (come)/ थी (and)

३०७. गथाजाग/ गथाजाग

३०८. २ केव रावहाव मेदेक अस्तुमे गाव, गथासभर रीटमे ले ।

३०९. कहेत/ कहे

३१०.

बल्ल (डव)/ बहे (डव) (meaning different)

३११. जागति/ जाकति

३१२. थवाग/ थवाग

३१३. लौग/ लौगि/ लौगि

३१४. जागि/ जागि

३१५. कागज/ कागज/ कागज

३१६. गिले (meaning different - swallow)/ गिले

(थसए)

३१७. बहिदिय/ बाह्दीय

DATE-LIST (year – 2012-13)

(१४२० अमरी माव)

Marriage Days:

Nov. 2012 – 25, 26, 28, 29, 30

Dec. 2012 – 5, 9, 10, 13, 14

402



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

January 2013– 16, 17, 18, 23, 24, 31

Feb.2013– 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

April 2013– 21, 22, 24, 26, 29

May 2013–

1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31

June 2013– 2,3

July 2013– 11, 14, 15

Upanayana Days:

January 2013– 16

February 2013– 14, 15, 20, 21

April 2013– 22

May 2013– 20, 21

Dviragaman Din:

November 2012– 25, 26, 28, 29

December 2012– 2, 3, 14



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

Febr uar y 2013- 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

Mar ch 2013- 1

Apr il 2013- 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013- 12, 13

Mundan Din:

November 2012- 26, 30

December 2012- 3

Januar y 2013- 18, 24

Febr uar y 2013- 1, 14, 15, 20, 28

Apr il 2013- 17

May 2013- 13, 23, 29

June 2013- 13, 19, 26, 27, 28

Jul y 2013- 10, 15

FESTIVALS OF MTHI LA (2012-13)



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्व

Mauna Panchami -08 Jul y

Madhushr avani - 22 Jul y

Nag Panchami - 24 Jul y

Raksha Bandhan- 02 Aug

Kr i shnast ami - 10 August

Kushi Amavasya / Somvar i Vr at - 17 August

Vi shwak arma Pooj a- 17 Sept ember

Har t a l i k a Teej - 18 Sept ember

Chaut hChandr a-19 Sept ember

Kar ma Dhar ma Ekadashi -26 Sept ember

I ndr a Pooj a Aar ambh- 27 Sept ember

Anant Catur dashi - 29 Sep

Agast yar ghadaan- 30 Sep

Pi t r i Paksha begi ns - 30 Sep

Ji moot avahan Vr at a/ Ji t i a-08 Oct ober



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

Matr i Navami – 09 Oct ober

Somvat i Amavasya Vr at – 15 Oct ober

Kal ashst hapan – 16 Oct ober

Bel naut i – 20 Oct ober

Pat r i ka P r avesh – 21 Oct ober

Mahast ami – 22 Oct ober

Maha Navami – 23 Oct ober

Vi j aya Dashami – 24 Oct ober

Koj agar a – 29 Oct

Dhant er as – 11 November

Di yabat i , shyama pooj a – 13 November

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a – 14 November

Bhr at r i dwi ti ya/ Chi tr agupt a Pooj a – 15
November

Chhat hi – 19 November

Devot t han Ekadashi – 24 November



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

r avi vr at ar ambh – 25 November

Navanna par van – 25 November

Kar t i k Poor ni ma – Sama Vi sar j an – 28
November

Vi vaha Panchmi – 17 December

Makar a/ Teel a Sankr ant i –14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi – 08 Febr uar y

Basant Panchami / Sar aswat i Pooj a – 15
Febr uar y

Achl a Sapt mi – 17 Febr uar y

Mahashi var at ri –10 Mar ch

Hol i kadahan –Fagua –26 Mar ch

Hol i – 28 Mar ch

Var uni Trayodashi –07 April

Chai ti navar atr ar ambh – 11 April

Jur i shi t al –15 April



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Chaiti Chhat hi vr at a-16 April

Ram Navami - 19 April

Ravi Br at Ant - 12 May

Akshaya Tritiya-13 May

Janaki Navami - 19 May

Vat Savitri -bar asait - 08 June

Ganga Dashhar a-18 June

Somavat i Amavasya Vr at a- 08 July

Jagannat h Rat h Yat ra- 10 July

Har i Sayan Ekadashi - 19 July

Aashadhi Gur u Poor ni ma-22 Jul

VI DEHA ARCHI VE

१. विदेह अ-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवाण अंक ब्रैल, तिवहूँत अ
देवनागरी कण्ये Vi deha e journal 's all old
issues in Braille Tirhuta and Devanagari
versions

बि ए रु बिदेह Videha बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई
पत्रिका Videha bt Maithili Fortnightly ejournal बिदेह अंथय मैथिली पक्षिक अ पत्रिका बिदेह



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बिदेह अ-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक

मानवीय

बिदेह अ-पत्रिकाक ३.०म म आगाँक अंक

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

३. मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads

४. मैथिली वीडियो संकलन Maithili Videos

५. मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila
Painting/ Modern Art and Photos

बिदेहक एहि सब सहयोगी विकसित सेहो एक लेब जाई ।

७. बिदेह मैथिली क्रिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली ज्ञानवृत्त एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अग्रजोमे अनुदित



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

९. बिदेहक पूर्ण-रूप "भाषासविक गाढ" :

<http://gajendrathakur.blogspot.com/>

१०. बिदेहक गौडक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेहक फाँगल :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेहक सदेह : पहिल तिवहुता (मिथिला-सकल) जानवृत्त
(बैनांग)

<http://videha-sadehablogspot.com/>

१३. बिदेहक बैन: मैथिली बैनमे: पहिल बैन बिदेह द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. *VI DEHA 1ST MAITHILI FORTNIGHTLY
EJOURNAL ARCHIVE*

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. बिदेहक प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक
आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>



१३. विदेह प्रथम मैथिली पत्रिका अ पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१५. विदेह प्रथम मैथिली पत्रिका अ पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-videos.blogspot.com/>

१५. विदेह प्रथम मैथिली पत्रिका अ पत्रिका चित्रा चित्रकला,
आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आर चित्रा (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानवृत्त)

<http://maithilaurmithila.blogspot.com/>

२०.श्रुति प्रकाश

<http://www.shruti-publication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>

Google समूह

VI DEHA केव सदनगत लिख

बि एन ए बिदेह *Videha* बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम ट्योथिनी पौष्पिक अ पत्रिका



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,
मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

अमेन :

??????

एहि समुहगव जाँउ

२२.<http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

Subscribe to VIDEHA

enter email address

Power ed by us.groups.yahoo.com

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेक

<http://gajendrathakur123.blogspot.com>

२४. लषा ठेका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

बि ए र विदेह Videha विदेह www.videha.co.in www.videha.com विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई
पत्रिका Videha bt Maithili Fortnightly ejournal विदेह अथय मैथिली पक्षिक अ पत्रिका विदेह



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)


मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२३. विदेह वेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक पहिने प्रोडक्शन्स
मागछे

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२३.  Vi deha Radi o

२१.  Join official Vi deha facebook group.

२४. विदेह मैथिली बाष्टर उमेर

<http://maithili-dramablogspot.com/>

२६. समादिया

<http://esamadblogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilmsblogspot.com/>

३१. अचिन्हाव आथव

<http://anchinharakharakolkatablogspot.com/>

३२. मैथिली हाङ्कु

<http://maithili-haikublogspot.com/>



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संस्कृत ISSN 2229-547X VIDEHA

३३. माणक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विहानि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली कविता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

महोदयगुप्ता मुद्राः(९) विदेह द्वारा धारित कले अ-
प्रकाशित कथ लव गजेन्द्र ठाकुरक निरंज-प्रवेश-संस्था,
उपेक्षा (महोदयगुप्ता), गण-संस्था (महोदयगुप्ता टोपेडगव),
कथा-गण (गण-गुड), नष्टक(महोदयगुप्ता), महाकाव्य (महोदयगुप्ता आ
असंश्लेषि मल) आ रीत-किलोव सहित विदेहमे संपूर्ण अ-
प्रकाशित रीत प्रिण्ट कर्ममे । ककषेकम् अर्थमेक अन्त-९ सँ



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

१ Combined I SBN No.978-81-907729-7-6 बिदेह

एहि पृष्ठपर बीछैये आ शकनिक साइट

<http://www.shrutipublication.com/> पब ।

महत्त्वपूर्ण सूचना (२)सूचना: बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी
मैथिली कोष (अष्टवर्णपर पत्रिक लेख सर्टिफिकेशन) एम.एस.
एस.ए.ए. सर्व आधारीत -Based on ms-sql server
Maithili-English and English-Maithili
Dictionary. बिदेहक भाषाशास्त्र- बालाखण्ड सुद्धमे ।

ककषेत्रम् अन्तरमनक- गजेन्द्र ठाकुर



गजेन्द्र ठाकुरक निवेदन-शरीर-समीक्षा, उपासना (महत्त्वपूर्ण),
पञ्च-संग्रह (महत्त्वपूर्ण लेखपर), कथा-गल्प (गल्प संग्रह),
नाटक(संस्कृत), महाकाव्य (ब्रह्मरुद्र आ अमरुति मल) आ
बालाखण्ड-किलोबखण्ड बिदेहमे संपूर्ण अ-शकनिक रीति
कार्यमे । ककषेत्रम् अन्तरमनक, खंड-१ सँ १

1st edition 2009 of Gajendra Thakur's
KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)- essay-paper-
criticism, novel, poems, story, play, epics and
Children-grown-ups literature in single
binding:
Language Maithili

बि ए रु बिदेह Videha बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई
पत्रिका Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम ट्योथिनी पौष्पिक अ पत्रिका



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अर प्रै : मुल भे क. 100/- (for individual

buyers inside india)

(add courier charges Rs 50/- per copy for

Delhi /NCR and Rs.100/- per copy for outside
Delhi)

For Libraries and overseas buyers \$40 US
(including postage)

The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

Details for purchase available at print -
version publisher's site

website: <http://www.shrutipublication.com/>

or you may write to

e-mail [shruti.publication@shruti -
publication.com](mailto:shruti.publication@shrutipublication.com)

बिदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिवहुता : देवरागरी "बिदेह" क,
हिष्टे संस्कृत : बिदेह-अ-पत्रिका

(<http://www.videha.co.in/>) क छुनव बच्चा समिति ।

मानुषीमिह

[illegible]

I. **বিশুদ্ধ ঐ-পত্রিকা** বিশুদ্ধবিশুদ্ধে **বিধিবিধান** ও **দেবদাস** ও **গজেন্দ্র**
ঠাকুর **সাত** **শুভ** **নির্বন্ধ** **স্বর্গ** **সমীক্ষা** **উপাস**
(সহস্রবর্ষ) , **পদ্ম** **সংগ্রহ** **(সহস্রাব্দিক চৌদ্দশ)** **কথা** **গল্প** **গল্প**



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक **ISSN 2229-547X VIDEHA**

**ग्रन्थ, नाटक (संस्कृत), महाकाव्य (द्वयार्थक आ अस्मृति मय) आ रीति-
मंचनी-कौशल जगत- संस्कृत कवयित्री आ अतिरिक्त मर्दाने ।]**

१. श्री गोविन्द मा- विदेहके तबंगजानगव उतारि विभिन्नविषये
माहताया मैथिलीक महति जगावत, तेद जे अगलक एहि
महाविद्यालये हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ । सुलैत डी
अगलके स्मरण आ बचामेक आलोचना प्रिय नलीत अछि ते
किछु लिखक योग्य भेल । हमर सहायता आ सहयोग अगलके
सदा उपलब्ध रहत ।

२. श्री बालकृष्ण मा- मैथिलीमे ३-पत्रिका पत्रिका कएने छल क
जे अगल माहतायाक प्रचार कए रहल छी, से धन्यवाद । आगा
अगलक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दए
रहल छी ।

३. श्री विद्यानाथ मा "विदित"- संचार आ प्रौद्योगिकीक एहि
प्रतिस्पर्धी ग्राहक युगमे अगल महिमामय "विदेह"के अगला देहमे
एकछ देहि जतरा प्रसन्नता आ सतोष भेल, तकरा कोला
उपलब्ध "मिष्टान्न" नहि लागल जा सकैछ ? ...एकर ऐतिहासिक
मुलाकिस आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शैक्षणिक अंत धरि लोकक
नजरिमे आश्चर्यजनक रूपसँ एकछ रहत ।

४. श्री. उदय नावाण सिंह "चटकेता"- जे काज अहाँ कए
रहल छी तकर दृष्टा एक दिन मैथिली भाषाक गतिहासमे
लेखत । आनन्द भए रहल अछि, ३ जगि कए जे एतेक छोट
मैथिल "विदेह" ३ जगि के पढि रहल छथि । ...विदेहक टालीम
अंक प्रबर्धक लेन अतिरिक्त ।

५. डा. गणेश गुज्जर- एहि विदेह-कर्ममे लागि रहल अहाँक
सम्वदनीयता, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत वंग,



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

गतिहास ये एक ठी बिशिष्ट हवाक अध्याय आवत कबत, हमरा
बिस्मय अछि । अमेय शुभकामना आ रक्षाक सज्ज, समस्त...अहाँक
पौथी ककम्पेय अतिरिक्त प्रथम दृष्ट्या रूत भरा तथा
उपयोगी रूमागछ । मैथिलीमे तँ अगला सुकसक प्रायः अ
पहिले एहन भरा अरतावक पौथी थिक । हर्यपूर्ण हमर हार्दिक
रक्षा अस्वीकार करी ।

७. श्री बामशिव मा 'बामरंग'(आरंभ) - "अगला" मिथिला
संरचित...रिचय रहुँ अरगत भेलहुँ । ...मेय सभ अमेय अछि ।

१. श्री अजेंद्र त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- अठ्ठबल्ल पत्र प्रथम
मैथिली पत्रिका "बिदेह" केव लेन रक्षा आ शुभकामना
स्वीकार कर ।

+. श्री प्रहल्लाद मा 'मोक्ष'- प्रथम मैथिली पत्रिका
"बिदेह" क प्रकाशक समाचार जामि कलक चकित हूँ रूसी
आह्वानित भेलहुँ । कानटकेँ पकडि जाहि दुबदृष्टिक पवित्र
देनहुँ, ओहि लेन हमर संगकामना ।

६.डा. शिरधर मादर- अ जामि अगाव हर्य भए बहन अछि,
जे नर सुचना-आधुनिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रेरणे
दिअएँक साहसिक कदम उठाउन अछि । पत्रकारितामे एहि
प्रकारक नर प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "बिदेह"क
सफलताक शुभकामना ।

१०. श्री आन्याचन मा- कोला पत्र-पत्रिकाक प्रकाशक- ताद्वये
मैथिली पत्रिकाक प्रकाशकमे के कतेक सहयोग कबत- अ
तय भविष्य कहत । अ हमर ++ रयमे १३. रयक अस्मिता
बहन । एतेक पैघ महल यद्वये हमर श्रेष्ठपूर्ण आह्वान प्रान्त
होयत- यारत ठीक-ठाक छी/ बहर ।



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक ISSN 2229-547X VIDEHA

११. श्री रिजय ठाकुर- शिक्षण विश्वविद्यालय- "विदेह" पत्रिकाक
एक देखनहूँ, सम्पूर्ण टीम रक्षाक पत्र अछि। पत्रिकाक संग
तयारि हेतु हमर शुभकामना सँकाव कएन जाओ।

१२. श्री स्वायच्छन्द यादव- ई-पत्रिका "विदेह" क बारेमे जानि
प्रसन्नता भेल। "विदेह" निबन्ध पत्रिका-प्रकाशित हो आ
चतुर्दिक अपन स्वर्ण पत्रिका मे कामना अछि।

१३. श्री मैथिलीप्रताप शर्मा- ई-पत्रिका "विदेह" लेब सहकारिताक
तयारिमे कामना। हमर पूर्ण सहयोग बहत।

१४. डा. श्री लीलाधर झा- "विदेह" गुरुवार पत्र अछि तँ
"विदेह" नाम उचित आब कतेक कर्षण एकव रिकर भए सकैत
अछि। आ-कालि योनिमे उद्भव बहत अछि, हृदय शीघ्र पूर्ण
सहयोग देब। कर्मकर्म अन्तर्गत देखि अति प्रसन्नता भेल।
मैथिलीक लेन ई घटना छी।

१५. श्री बागबोरस कापडि "श्रम"- जनकपुरवास- "विदेह"
आननाए देखि बहन छी। मैथिलीक अन्तर्गत जगतमे
पहुँचैत तकरा लेन हार्दिक रक्षा। मिथिला बने सक सकल
अपूर्ण। लगभग सहयोग भेटैत, से रिश्ता करी।

१६. श्री बाबुलाल नानदास- "विदेह" ई-पत्रिकाक माध्यम सँ रीड
लीक काज कए बहन छी, नातिक अहिठाम देखनहूँ। एकव
वार्षिक एक जखन छिट्टी निकार तँ हमरा पठावै। कलकत्तामे
रहैत छोटैक ले हमा माओक पत्रा लिखै देल छियहि। योनि
तँ होगत अछि जे दिना आरि कए आशीर्वाद दैतहूँ, हृदय उमर
आरि रेशी भए लेन। शुभकामना देनि-विदेशिक मैथिलीक
जोडैक लेन। .. उक्त प्रकाशन कर्मकर्म अन्तर्गत लेन
रक्षा। अद्भुत काज कएन अछि, लीक प्रशंसा अछि मात



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

खण्डमे। रूपा अहाँक मेरा आ मे निःस्वार्थ तखन रूमन
जागत जँ अहाँ द्वारा प्रकाशित पोथी सभक दाय निखन नहि
बहिकै। उहिना सभकेँ रिनहि देन जगतै। (स्पष्टीकरण-
श्रीमान्, अहाँक सुचार्थ बिदेह द्वारा ई-प्रकाशित कएन सभ्ठा
सामग्री आर्काइवरमे

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-potahi/> पर रीना मुनक डाउनलोड जेन उपलब्ध छै आ
भरियामे सेहो बहिकै। एहि आर्काइवरकेँ जे कियो प्रकाशक
अनुमति न२ क२ छिई कएने प्रकाशित कएल छथि आ तकर ओ
दाय बखल छथि तहिपर हमर कोनो निगरानी नहि अछि। -
गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अशेष शुभकामनाक संग।

११. डा. प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे गृहबल्लभक पहिल
पत्रिका "बिदेह" प्रकाशित कए अगल अद्भुत माहतायवागक
परिचय देन अछि, अहाँक निःस्वार्थ माहतायवागसँ प्रेरित छी,
एकर निमित्त जे हमर मेराक प्रयोजन हो, तँ सृष्टि करी।
गृहबल्लभक आद्यापति पत्रिका देखन, मन प्रफुल्लित भ२ गेल।

१२. श्रीमती शैलजिका रमा- बिदेह ई-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ
भरि गेल। रिक्त कतेक प्रगति क२ बहन अछि...अहाँ सभ
अनुष्ठान आकाशिकेँ भेदि दियो, समस्त रिक्तक बहनकेँ ताब-ताब
क२ दियो...। अगलक अद्भुत पुस्तक कवक्रेत्रम् अर्थात्
रिचरचरक दृष्टिसँ गावमे सागर अछि। रीवाज।

१३. श्री हेतुकव मा, गृह-जाहि समर्पण भारसँ अगल मिथिला-
मैथिलीक मेरामे तपेव छी मे खुब अछि। देशक बाजवागसँ
भय बहन मैथिलीक शिखर मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली
चेतनाक विकास अरु कवत।



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक चर्चामा ISSN 2229-547X VIDEHA

२०. श्री योगानन्द सा, करिवन्धु, नरेश्वरानन्द- कर्मक्षेत्रम्
अतिसरि पोथीके निकटमे देखबैक अरुसव भेटैत अछि आ
मैथिली जगतक एकठा उद्भूत ओ समामयिक दृष्टिसम्पन्न
हस्तक्षरक कर्मरन्द परिचयमे आबैत छी । "बिदेह"क
देखबागबै सँकषण पठैनामे क. ८०/- मे उपलब्ध भऽ सकैत जे
रिचित लेखक लोकनिक डायारि, परिचय पत्रक ओ बचनारणिक
सम्यक प्रकाशितमे ऐतिहासिक कहैत जा सकैत ।

२१. श्री किशोरीकांत मिश्र- कोनकात- जय मैथिली, बिदेहमे
रहित बान करिता, कथा, रिपोर्ट आदिक सचि सङ्ग्रह देखि आ
आब अरि प्रसन्नता मिथिलक्षर देखि- रैवाङ्ग स्वीकार कएत
जाओ ।

२२. श्री ज्ञानकांत- बिदेहक अद्वित एक पठन- अद्वित
मेहनति । चरित-चरित । किछ समालोचना सबथाह. अद्वित सए ।

२३. श्री तानन्द सा- अगलक कर्मक्षेत्रम् अतिसरि देखि
बुझाएत जेना हम अगल दुगल अछि । एकव रिशानकाय
आग्रति अगलक सरिसमारिनाक परिचयक अछि । अगलक बचना
सामर्थ्यमे उतबोतव बृद्धि हो, एहि श्रुतकामनाक संग हार्दिक
रैवाङ्ग ।

२४. श्रीमती डा नीता सा- अहाँक कर्मक्षेत्रम् अतिसरि पठनहुँ ।
ज्ञातिबिन्धु शिष्टारणी, प्रवि मन्त्र शिष्टारणी आ सीत रिसु आ
सब कथा, करिता, उपन्यास, रान-किशोर सहित सब उत्तम
हुन । मैथिलीक उतबोतव विकासक नम्र दृष्टिगोचर होगत
अछि ।

२५. श्री योगानन्द मिश्र- कर्मक्षेत्रम् अतिसरि मे हमर उपन्यास
मन्त्रिषक जे विरोध कएत होत अछि तकर हम विरोध करैत



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

डी । ... ककच्छेत्तम् अतर्जिक पोथीक लेन शुभकामना । (श्रीमान्
समालोचनाके बिरोधक कगमे नहि लेन जाए । -गजेन्द्र ठाकुर)

२७.श्री महेश्वर हजारी- सम्पादक श्रीमिथिला- ककच्छेत्तम् अतर्जिक
पठि मोन हर्षित भ२ लेन..एथन पुवा पठनमे रहूत समय
नागत, कदा जतेक पठनहूँ से आह्लादित कएनक ।

२८.श्री केदारनाथ टोपरी- ककच्छेत्तम् अतर्जिक अद्भुत नागन,
मैथिली साहित्य लेन ई पोथी एकठा प्रतिमान रैलत ।

२९.श्री सत्यनन्द पाठक- बिदेहक हम नियमित पाठक डी । ओकर
स्वकणक प्रशंसक डनहूँ । एकर अहाँक लिखन - ककच्छेत्तम्
अतर्जिक देखनहूँ । मोन आह्लादित भ२ उठन । कोना बचना
तब-उगरी ।

३०.श्रीमती बमा मा-सम्पादक मिथिला दर्शनी । ककच्छेत्तम्
अतर्जिक छिष्ट फॉर्म पठि आ एकव प्रशंसा देखि मोन प्रसन्न
भ२ लेन, अद्भुत शैली, एकवा लेन प्रशंसा क२ बहन डी ।
बिदेहक उतरोतव प्रगतिक शुभकामना ।

३१.श्री नरेश्वर मा, पठना- बिदेह नियमित देखेत बहैत डी ।
मैथिली लेन अद्भुत काज क२ बहन डी ।

३२.श्री रामलाल ठाकुर- कोनकाता- मिथिलाक बिदेह देखि
मोन प्रसन्नतासँ भवि उठन, अकक बिशाल पविदृष्ट आश्चर्यकारी
अछि ।

३३.श्री तारानन्द रियोगी- बिदेह आ ककच्छेत्तम् अतर्जिक देखि
टकरिदोव नागि लेन । आश्चर्य । शुभकामना आ रैवाङ्ग ।



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

३३. श्रीमती धेगनता मिश्र “धेग”- कवचकृतम् अतिरिक्त गठनम् ।
सब वचना उत्कृष्टक नागन । रैधाङ्ग ।

३४. श्री कीर्तिनाथाना मिश्र- रैगुनवाग- कवचकृतम् अतिरिक्त रैष्ठ
नीक नागन, आर्गाक सब काज जेन रैधाङ्ग ।

३५. श्री महाप्रकाश-सहस्र- कवचकृतम् अतिरिक्त नीक नागन,
विशानकाय संगति उत्कृष्टक ।

३६. श्री अग्निप्रकाश- मिथिलासुख आ देवासुख विदेह गठन. ५ प्रथम
तँ अछि एकटा प्रशिक्षणमे ह्मदा ह्मदा एकटा द्वाहसिक कहै ।
मिथिला चित्रकलाक सुन्दर ह्मदा अग्निना अकमे आब रिद्धत
रैधाङ्ग ।

३७. श्री राजव सुजगान-द्वर्तगा- विदेहक जेतक प्रशिक्षण कएन
जाए कम होएत । सब प्रीज उत्तम ।

३८. श्रीमती प्रोफेसर रीणा ठाकुर- कवचकृतम् अतिरिक्त उत्तम
गठनीय, रिटावनीय । जे का देखैत छथि प्रोथी प्रोथु कवरक
उगाय प्रुद्धैत छथि । प्रुत्कामना ।

३९. श्री ज्ञानानन्द सिंह सा- कवचकृतम् अतिरिक्त गठनम्, रैष्ठ नीक
सब तबहै ।

४०. श्री तारकान्त सा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद-
विदेह तँ कर्णश्रेष्ठ प्रोरागडवक काज क२ बहन अछि ।
कवचकृतम् अतिरिक्त अद्धत नागन ।

४१. डा बरीन्द्र कुमार टोषी- कवचकृतम् अतिरिक्त रैद्ध नीक,
रैद्ध मेहनतिक परिणाम । रैधाङ्ग ।



मानवीय

१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्करण **ISSN 2229-547X VIDEHA**

४२.श्री अग्रवर्ण- कविकेन्द्रम् अतर्किक आ बिदेह दुनु सावनीय
घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य ।

४३.श्री पादार्पण मिश्र- बिदेहक ऐतिहासिक आ निवृत्तता प्रभावित
कलित अछि, शुभकामना ।

४४.श्री केदार काश- कविकेन्द्रम् अतर्किक लेख अलक धन्यवाद,
शुभकामना आ रक्षाग स्वीकार कवी । आ नटकेताक तुमिका
पठनहुँ । मुकमे तँ नागन जेना कोना उपायस अहाँ द्वारा
सृजित लेख अछि कदा पोथी उगठौना पब ज्ञात लेख जे
एहिमे तँ सब रिधा समाहित अछि ।

४५.श्री धनक ठाकुर- अहाँ नीक काज क२ बहन छी । फोफे
लेखनीमे छि एहि शताब्दीक जनतिथिक अनुसार बहैत त२
नीक ।

४६.श्री अशीष मा- अहाँक पुस्तकक सँधमे एतरो लिखरो सँ
अपना कए नहि लोक सकनहुँ जे आ कितरो मात्र कितरो नहि
थीक, आ एकठा उन्नीद छी जे मैथिली अहाँ सभ पुत्रक सेरा सँ
निर्वतव समूह लोगत टिबजोरन कए प्राप्ति कबत ।

४७.श्री शम्भु कुमार सिंह- बिदेहक तपेवता आ फिनिशिनता देखि
आह्वानित भ२ बहन छी । निश्चितकषण कहन जा सकैछ जे
समकालीन मैथिली पत्रिकाक गतिहासमे बिदेहक नाम स्थापितमे
लिखन जाएत । ओहि कविकेन्द्रक घटना सब तँ अर्थावहे दिखमे
थतम भ२ लेख बहए कदा अहाँक कविकेन्द्रम् तँ अशेष अछि ।

४८.डा. अजित मिश्र- अगलक प्रयासक कतरौ प्रश्ना कएन जाए
कमे होएतैक । मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएन लेख काज
हाग-हागानुब धरि पूजनीय बहैत ।



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मासिक ISSN 2229-547X VIDEHA

४.९.श्री वीरेश्वर मल्लिक- अहाँक ककषेत्रम् अस्तुर्मिक आ
रिदेह:सदेह पठि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक स्नायु ठीक बहए
आ उमोह रँगन बहए से कामना ।

३.०.श्री कृपाव बाधकामना- अहाँक दिशो-निर्देशमे रिदेह पहिन
मैथिली अ-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेल । हमर शुभकामना ।

३.१.श्री सुनन्द सा प्रती- रिदेह:सदेह पठल बही ह्रदा
ककषेत्रम् अस्तुर्मिक देखि रँद । अ दैरौ जेन रौधा भऽ
गेनहूँ । आरँ रिश्याम भऽ गेन जे मैथिली नहि मवत । अशेष
शुभकामना ।

३.२.श्री रिभूति आनन्द- रिदेह:सदेह देखि, ओकर रिभूति देखि
अति प्रसन्नता भेल ।

३.३.श्री मालश्री मल्लिक- ककषेत्रम् अस्तुर्मिक एकव भराता देखि
अति प्रसन्नता भेल, एतेक रिशान ग्रन्थ मैथिलीमे आग धरि नहि
देखल बही । एहिना भविष्यमे काज करैत बही, शुभकामना ।

३.४.श्री रिश्याम सा- आग,आग,आम,कौनकाता- ककषेत्रम्
अस्तुर्मिक रिभूति, उगाडक सँग श्रारता देखि अति प्रसन्नता
भेल । अहाँक अलक धन्यवाद, कतेक रँवथसँ हम लयावैत हुनहूँ
जे सत पौष मेहवमे मैथिली नागब्रैवीक स्थापना होअए, अहाँ
ओकरा रँवपव कऽ बहन जी, अलक धन्यवाद ।

३.५.श्री अरविन्द ठाकुर- ककषेत्रम् अस्तुर्मिक मैथिली साहित्यमे
कएन गेन एहि तबहक पहिन प्रयोग अछि, शुभकामना ।

३.६.श्री कृपाव परल- ककषेत्रम् अस्तुर्मिक पठि बहन जी । किड
नयकथा पठन अछि, रँहूत मार्मिक हुन ।



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

३.१. श्री प्रदीप रिहारी-ककच्छेत्रम् अस्तुमिक देखन, रैधाङ्ग ।

३.५.डा मणिकान्त ठाकुर-लेनिनोर्गिया- अगन रिनक्षन नियमित
सेराम हमा लोकनिक हृदयमे बिदेह सदेह भ२ जेन अछि ।

३.६.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सवाहनीय । दूध
लोगत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि क२
पलैत छी ।

३.७.श्री देवर्षिक वरीष- बिदेहक निवृत्तता आ रिशान स्वरूप-
रिशान पाठक रश्मि, एकवा ऐतिहासिक रैषलैत अछि ।

३.८.श्री मोहन भावराज- अहाँक समस्त कार्य देखन, रैहूत नीक ।
एखन किछ पलेषनीमे छी, रुदा शीघ्र सहयोग देबै ।

३.९.श्री फज्जुव वरमान हर्षि-ककच्छेत्रम् अस्तुमिक मे एतेक
मेहनतक जेन अहाँ साधुवादक अरिकावी छी ।

३.१०.श्री लक्ष्मी मा "सागव"- मैथिलीमे चमकोविक कर्पे अहाँक
प्रवेशे आनन्दकावी अछि । ..अहाँकेँ एखन आव..दूर..रैहूत दूधवि
जेरौक अछि । स्नुह आ प्रेम बही ।

३.११.श्री जगदीश प्रसाद मिश्र-ककच्छेत्रम् अस्तुमिक पठनहूँ ।
कथा सत आ उग्यास सहस्रौठनि पूर्णकर्पे पठि जेन छी ।
गाम-घबक भौगोलिक विरवाक जे सुझा रर्षि सहस्रौठनिमे
अछि, से चकित कएनक, एहि संग्रहक कथा-उग्यास मैथिली
लेखनमे विविधता अगनक अछि । समालोचना शीघ्रमे अहाँक
दृष्टि रैषडिक नहि रवन् सामाजिक आ कल्याणकावी अछि, से
प्रशंसनीय ।



विदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानकीह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

७३. श्री अशोक सा-अध्यक्ष मिथिला विकास परिषद- कवचकवचम्
अनुसंधान लेख रचना और आर्ग लेख प्रकाशना ।

७३. श्री ठाकुर प्रसाद शर्मा- अस्तुत प्रसाद । धन्यवादक संग
प्रार्थना जे अगल माष्टि-पानिके धानमे बाथि अकक समायोजन
कएल जाय । नर अक धरि प्रसाद सवाहनीय । विदेहके रूत-
रूत धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सदाव (आलेख) नगा बहन
हुथि । सभटा ग्रहणीय- पठनीय ।

७१. रूचिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी, अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित
'विदेह' और 'कवचकवचम् अतर्किक' विनम्र पत्रिका और विनम्र
पत्रिका । की नहि अछि अहाँक सम्पादनमे ? एहि प्रश्नमे मैं
मैथिली क विकास होयत, निम्नदेह ।

७४. श्री रूचिनाथ चन्द्र नान- गजेन्द्रजी, अगलक प्रसन्न
कवचकवचम् अतर्किक पत्रिका मोन गदगद भय गेल , द्वादश
अनुसंधान हु । हार्दिक प्रकाशना ।

७५. श्री प्रमोदशिव कापडि - श्री गजेन्द्र जी । कवचकवचम्
अतर्किक पत्रिका गदगद और लालन भेलहुँ ।

१०. श्री वरीन्द्रनाथ ठाकुर- विदेह पठित बहल हु । धीरेन्द्र
प्रेमर्षिक मैथिली गजलपत्र आलेख पठनहुँ । मैथिली गजल कत
मैं कत २ टलि गेलोक और उ अगल आलेखमे मात्र अगल ज्ञान-
पहिचान लोकक चर्च कएल हुथि । जेना मैथिलीमे मठक
पवस्था बहन अछि । (स्पष्टीकरण- श्रीमान् प्रेमर्षि जी उहि
आलेखमे ३ स्पष्ट निखल हुथि जे किनको नाम जे दुष्ट गेल
हुथि तैं से मात्र आलेखक लेखकक ज्ञानकारी नहि बहराक द्वारा,
एहिमे आन कोना कारा नहि देखल जाय । अहाँसँ एहि
विषयक विस्तृत आलेख सादर आमंत्रित अछि । -सम्पादक)



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धीविदेह

११. श्री गवेषिनी मा- विदेह पठन आ संगति अहाँक योग्यता ओगस
ककषेत्रम् अतर्किक सेहो, अति उत्तम। मैथिलीक जेन कएन
जा बहन अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय अछि।

१२. श्री हलेश्वरी मा- ककषेत्रम् अतर्किक मैथिलीमे अगल
तबहक एकमात्र ग्रन्थ अछि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ बचन
कोशिल देखबामे आएन जे लेखकक फील्डरकसँ जुड़न बहरीक
काव्यसँ अछि।

१३. श्री सुकांत मोह- ककषेत्रम् अतर्किक मे समाजक
गतिहास आ वर्तमानसँ अहाँक जुड़ १२ रँड नीक लागल, अहाँ एहि
क्षेत्रमे आव आगाँ काज करब मे आशी अछि।

१४. श्री प्रोफेसर मदन मिश्र- ककषेत्रम् अतर्किक सन कितार
मैथिलीमे पहिले अछि आ एतेक रिशाल संग्रहण शोध कएन जा
सकैत अछि। भविष्यक जेन शुभकामना।

१५. श्री प्रोफेसर कमला टोबरी- मैथिलीमे ककषेत्रम् अतर्किक सन
पौथी आरँ जे ग्रंथ आ कप दुनूमे निम्न होअए, मे रँडत
दिससँ आकांक्षा भेल, ओ आरँ जा क२ पूर्ण भेल। पौथी एक
हाथसँ दोसर हाथ घुमि बहन अछि, एहिना आगाँ सेहो अहाँसँ
आशी अछि।

१६. श्री उदय चन्द्र मा "रिलाद": गजेन्द्रजी, अहाँ जतेक काज
कएनहुँ अछि मे मैथिलीमे आग धरि कियो नहि कएल भेल।
शुभकामना। अहाँकेँ एखन रँडत काज आव कबरीक अछि।



बिदेह १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

मानक संकेत ISSN 2229-547X VIDEHA

११. श्री प्रश्रुत कुमार कश्यप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँ तेँ एकटा
सावनीय छल रैनि जेन । अहाँ जेतेक काज एहि रीतिमे क
जेन छी तहिने हज्जाव गुणी आव लेगीक आमी अछि ।

१२. श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा जेन भेट
बहि तेँ तेँ अछि । अहाँक कर्मक्षेत्र अन्तर्गत सम्पूर्ण कर्ष
पठि जेनहुँ । ब्रह्मचर्य रीति नीक लागन ।

१३. श्री वीरेश्वर कुमार सा- बिदेह ई-पत्रिकाक सभ अंक ई-
पत्रमे तेँ तेँ बहेत अछि । मैथिलीक ई-पत्रिका छेक एहि
रीतिमे गरि होगत अछि । अहाँ आ अहाँक सभ सहयोगीकेँ
हार्दिक शुभकामना ।

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c) २००४-१२. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम बहि
अछि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पत्रिका ई-
पत्रिका । ISSN 2229-547X VIDEHA संपादक: गजेन्द्र
ठाकुर । सह-संपादक: उमेश चंद । सहायक संपादक: निर
कुमार सा आ सुनील (महाज कुमार कर्ष) । भाषा-संपादक:



१११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

नाथानन्द कर्माव सा आ पञ्चमीकाव विद्यानन्द सा। कर्मा-सम्पादनः
ज्ञाति सा टोषवी आ वयि लेखा सिद्ध। सम्पादन-लोच-अवस्थाः
छा. ज्ञया रर्मा आ छा. राजीव कर्माव रर्मा। सम्पादन- नाटक-
वर्ग-चर्चा- लेख ठाकव। सम्पादन- सूचना-सम्पर्क-समाद-
पुन्य मंडल आ धिया सा। सम्पादन- अवस्था विभाग- विनीत
उपेय।

बचनकाव अपन योजिक आ अत्रकाशित बचन (जकब
योजिकताक संपूर्ण उतवदलिह लेखक गणक मध्य डहि)
ggajendra@videha.com केँ मेन अटैचमेण्टक रुपमें
.doc, .docx, .rtf रा txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छथि।
बचनक सग बचनकाव अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन कौन कएन
मेन हवाठे पठैतह, मे आशा करैत छी। बचनक अंतमें
ठागव बहय, जे आ बचन योजिक अछि, आ पहिने प्रकाशिक
हेतु विदेह (पत्रिका) आ पत्रिकालेँ देन जा बहय अछि। मेन
प्राप्त होयबैक रौद यथार्थतर शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकव
प्रकाशिक अकक सूचना देन जायत। 'विदेह' प्रथम मैथिली
पत्रिका आ पत्रिका अछि आ एहिमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें
मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित बचन प्रकाशित कएन जागत
अछि। एहि आ पत्रिकालेँ शीघ्रति नक्की ठाकव द्वावा मासक ०९
आ १३ तिथिलेँ आ प्रकाशित कएन जागत अछि।

(c) 2004-12 सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमें प्रकाशित
संस्था बचन आ आकर्षक सर्वाधिकार बचनकाव आ संग्रहकर्ताक
नगमें डहि। बचनक अवस्था आ पुनः प्रकाशित किरा

बि एन रु बिदेह *Videha* बिदेह www.videha.co.in www.videha.com बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम ऐथिनी पक्षिक अ पत्रिका



बिदेह' १११ म अंक ०१ अगस्त २०१२ (वर्ष ५ मास ५६ अंक १११,

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

आर्कागरक ँगयोगक अधिकार किशरीक हेतु

ggajendra@videha.co.in पब सगर्क कक। एहि

मागर्कै प्रीति सा ठाकुर, मधुनिका टोषरी आ बन्नि प्रिया द्वारा
डिजाइन कएन गेल।



सिंहिवरु

